A Daily News Magazine

भोपाल

बुधवार, 2 अप्रैल, 2025

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

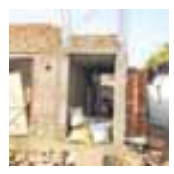

वर्ष 22, अंक 202, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

भारत में अंतरजातीय शादियां अभी भी इतनी कम क्यों हैं?

दीपक मंडल

साल 1996 का वक़्त। बनारस के रहने वाले श्याम सुंदर दुबे ने दिल्ली आकर केंद्र सरकार के मंत्रालय में अपनी नई नौकरी शुरू की थी। नए कर्मचारियों के उस बैच में झारखंड की सुनीता कुशवाहा (परिवर्तित नाम) भी थीं। दोनों की नज़दीकियां बढ़ीं और साल भर बाद उन्होंने शादी करने का फ़ैसला किया।

लेकिन न तो श्याम सुंदर और न ही सुनीता के घरवाले इस अंतरजातीय शादी को मंजूरी देने के लिए तैयार थे। दुबे के घरवालों को ये मंजूर नहीं था कि ओबीसी समुदाय की कोई लड़की उनके परिवार में आए।

उत्तराखंड के शहर हल्द्वानी में रहने वाले संजय भट्ट और कीर्ति आर्या की शादी का तो भट्ट बिरादरी में खूब विरोध हुआ। भट्ट ब्राह्मण हैं और कीर्ति दलित। संजय ने कीर्ति से आर्य समाज मंदिर में शादी की। उस दौरान दोनों का कोई रिश्तेदार वहां मौजूद नहीं था।

ये तीनों कहानियां बताती हैं कि भारतीय समाज में अंतरजातीय शादियों को परिवार की मंजूरी मिलना अभी भी कितना मुश्किल है।

शहरीकरण, महिलाओं की शिक्षा, वर्किंग प्लेस में उनकी बढ़ती मौजूदगी के साथ महिला-पुरुषों के मिलने-जुलने के मौके बढ़ने के बावजूद भारत में अंतरजातीय शादियां अभी भी काफी कम हैं। देश में अंतर-जातीय शादियों को लेकर कोई निश्चित आंकड़ा नहीं है। क्योंकि केंद्र ने सामाजिक-आर्थिक और जाति जनगणना में से जाति का आंकड़ा जारी नहीं किया है। लेकिन सैंपल सर्वे के आधार पर किए गए अध्ययनों से ये साफ है कि भारतीय परिवारों में अंतरजातीय शादियों का विरोध काफी ज़्यादा है। 2014 के एक सर्वे के मुताबिक़ उस समय तक भारत में सिर्फ पांच फ़ीसदी शादियां अंतरजातीय थीं। 2018 में अंतरजातीय शादियों के बारे में जानकारी जुटाने के लिए 1 लाख 60 हजार परिवारों का सर्वे किया गया था। सर्वे के नतीजे बताते हैं कि 93 फ़ीसदी लोगों ने परिवारों की ओर से तय शादियां की थी। सिर्फ 3 फ़ीसदी ने प्रेम विवाह किया था। सिर्फ दो फ़ीसदी प्रेम विवाहों को परिवार की मंजूरी मिल सकी थी।

भारत में बहुसंख्यक हिंदू परिवारों में ज़्यादातर 'अरेंज्ड मैरिज' (परिवार की ओर से तय) एक ही जातियों की भीतर होती हैं। 2018 में हुए इस सर्वे में जिन बुजुर्गों से बात की गई (अस्सी वर्ष की उम्र वालों से) उनमें 94 फ़ीसदी ने अपनी ही जाति में शादी की थी। नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे-3 के 2005-06 के आंकड़ों के आधार पर किए गए अध्ययन के मुताबिक़ भारत में सभी धर्मों और समुदायों के बीच अंतरजातीय शादियों का आंकड़ा 11 फ़ीसदी था। इसके तहत जम्मू-कश्मीर, राजस्थान, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, मेघालय और तमिलनाडु में जिन लोगों का सर्वे किया गया था, उनमें 95 फ़ीसदी लोगों ने कहा था कि उनकी शादी जाति के भीतर हुई है।

पंजाब, गोवा, केरल में 80 फ़ीसदी लोगों ने कहा था कि उन्होंने अपनी जाति में शादी की। इंडियन स्टेटस्टिकल्स इंस्टीट्यूट के रिसर्चरों ने इंडियन ह्यूमन डेवलपमेंट सर्वे और नेशनल सैंपल सर्वे 2011-12 के आंकड़ों का हवाला देते हुए 2017 के एक पेपर में दिखाया था कि लोगों के पढ़े-लिखे होने के बावजूद भारतीय समाज में जाति बंधन कम नहीं हुआ है। ज्यादातर लोग जाति के अंदर शादी करने को प्राथमिकता देते हैं।

2016-17 में भी दिल्ली और उत्तर प्रदेश में किए गए एक सर्वे से पता चलता है कि उच्च शिक्षित और कम शिक्षित या गैर साक्षर लोगों के बीच अंतरजातीय या अंतर धार्मिक शादियों का विरोध लगभग समान था। अंतरजातीय और अंतर धार्मिक शादी करने पर परिवार में असुरक्षा या हिंसा का सामना करने वाले जोड़ों को सुरक्षा देने और लैंगिक समानता के लिए काम करने वाले एनजीओ 'धनक' के को-फाउंडर आसिफ़ इक़बाल का कहना है कि अंतरजातीय प्रेम विवाहों के लेकर परिवार के अंदर अभी भी हालात आसान नहीं है। गांवों में अंतरजातीय शादियों को लेकर हिंसा और विवाद ज्यादा दिखते हैं। हालांकि शहरों में भी परिवारों के अंदर अंतरजातीय और अंतर धार्मिक शादियों की स्वीकार्यता बहुत कम है।

विवेक कुमार दिल्ली में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ सोशल सिस्टम में समाजशास्त्र के प्रोफ़ेसर हैं।

विवेक कुमार कहते हैं कि भारत में पांच-सात फ़ीसदी अंतरजातीय विवाह भी हो रहे हैं तो ये यहां की आबादी के हिसाब से बहुत बड़ी संख्या है। भारत में लड़कियों की तुलना में लड़कों के विचार ज्यादा परंपरावादी हैं और अभी भी वो पितृसत्ता के बंधन में बंधे हैं और दहेज लेकर शादी करना पसंद करते हैं।

भारत में बहुसंख्यक हिंदुओं के साथ मुस्लिम, सिख और ईसाई जैसे अल्पसंख्यक समुदायों में भी जाति विभाजन है। इस्लाम सैद्धांतिक तौर पर सभी मुसलमानों को बराबर मानता है लेकिन भारतीय मुस्लिमों में भी अंतरजातीय शादियां को परिवारवालों की मंजूरी की दर काफी कम है। भारत में लंबे समय से अंतरजातीय शादियों की वकालत की जाती रही है। ऐसी शादियों को जातियों में बंटे भारतीय समाज में समरसता लाने का अहम औजार समझा गया। माना गया कि बढ़ता शहरीकरण, औद्योगीकरण और शिक्षा का प्रसार खुद-ब-खुद जाति के बंधनों को तोड़ देगा. लेकिन ऐसा होता दिख नहीं रहा है। भारतीय अख़बारों में छपने वाले मेट्रोमोनियल्स यानी शादी के लिए दिए जाने वाले विज्ञापनों में बाकायदा जातियों के कॉलम होते हैं। ये 'जाति बंधन नहीं' वाले कॉलम से बहुत बड़े होते हैं। सामाजिक कार्यकर्ता और दलित महिलाओं के संघर्ष को अपनी कविताओं का विषय बनाने वाली कवियित्री अनिता भारती ने अंतरजातीय शादियां कम होने की वजहों पर कहा, 'भारत में अभी भी अंतरजातीय शादियों को ज्यादा प्रोत्साहन नहीं मिल रहा है। समाज में इसका सपोर्ट सिस्टम नहीं है। मैं तो कहूंगी कि अंतरजातीय ही नहीं अंतर धार्मिक शादियों को भी बढ़ावा मिले तभी भारत एक खूबसूरत समाज वाला देश बनेगा।'

भारत में अंतरजातीय शादियों को प्रोत्साहन देने के लिए मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार ने 2006 में अंतरजातीय शादी करने वाले जोड़ों को 50 हजार रुपये देने की स्कीम शुरू की थी। 2014 में नरेंद्र मोदी सरकार के आने के बाद केंद्र सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय ने डॉक्टर अंबेडकर फाउंडेशन के जरिये ऐसे जोड़ों के लिए ये राशि बढ़ा कर ढाई लाख रुपये कर दी थी। इस स्कीम की शर्त थी कि शादी करने वाले जोड़े में से कोई एक (वर या वधू) दलित हो। लेकिन 2014-15 में सिर्फ पांच जोड़ों को ये राशि मिली। अधिकारियों के अनुसार इस नियम के मुताबिक़ सिर्फ उन अंतरजातीय जोड़ों के आवेदन मंजूर किए जाते हैं, जिनकी शादियां हिंदू मैरिज एक्ट के तहत हुई हों। जबकि कई अंतरजातीय शादियां स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत रजिस्टर्ड होती हैं।

(बीबीसी हिन्दी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

एमपी के 18 मजदूरों के लिए 'मंगल' बन गया 'अमंगल'

● गुजरात के बनासकांठा की पटाखा फैक्ट्री में ब्लास्ट में गंवाई जिंदगी

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात के बनासकांठा में पटाखा फैक्ट्री में बॉयलर फटने से मध्यप्रदेश के 18 मजदूरों की मौत हो गई, जबकि 3 की हालत गंभीर है। वहीं, पांच मजदूर मामूली रूप से घायल हुए हैं। फैक्ट्री डीसा के धुनवा रोड पर है। दमकल विभाग के कर्मचारियों ने आग पर काबू पा लिया है। प्रारंभिक जानकारी के मुताबिक, बॉयलर फटने से फैक्ट्री में आग लगी थी। मरने वालों की संख्या अभी और बढ़ सकती है। नव अंग दूर-दूर तक पड़े नजर आए विस्फोट के दौरान मजदूर फैक्ट्री में काम कर रहे थे। अचानक हुए विस्फोट से उन्हें भागने का भी मौका नहीं मिला। विस्फोट इतना भीषण था कि कई मजदूरों के अंग भी करीब 50 मीटर दूर तक बिखर गए। फैक्ट्री के पीछे खेत में भी कुछ मानव अंग मिले हैं। आग पर काबू पाने के बाद अब फायर ब्रिगेड के कर्मचारी फैक्ट्री के अंदर कूलिंग कर रहे हैं। तीन लोग 40 प्रतिशत से अधिक जल गए डीसा एसडीएम नेहा पांचाल ने बताया कि घटना में सभी घायलों को सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया है। फिलहाल 3 लोगों का इलाज चल रहा है। ये 40 प्रतिशत से अधिक झुलस गए हैं। उन्होंने कहा कि हादसे को लेकर प्रशासन की ओर से जांच जारी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने श्रमिकों की मृत्यु पर दुख व्यक्त किया

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गुजरात के बनासकांठा में पटाखा फैक्ट्री में विस्फोट से मध्यप्रदेश निवासी श्रमिकों के असामयिक निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश सरकार का गुजरात सरकार से घटना के संबंध में लगातार संपर्क बना हुआ है। श्रमिकों की सहायता और परिवारों की मदद के लिए सभी आवश्यक प्रयास होंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बाबा महाकाल से असमय दिवंगत श्रमिकों की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की है।

फैक्ट्री से गैस-लीक तीन लोगों की मौत

60 से ज्यादा लोग हुए थे बेहोश

ब्यावर (एजेंसी)। राजस्थान के ब्यावर में तेजाब फैक्ट्री के गोदाम में खड़े टैंकर से नाइट्रोजन गैस के लीक होने से कंपनी

मालिक सहित 3 की मौत हो गई। दो लोगों की हालत अब भी गंभीर है। हादसे से प्रभावित 60 से ज्यादा लोगों ब्यावर और अजमेर सरकारी हॉस्पिटल में एडमिट कराया गया था। गैस के असर से कई पालतू जानवर और आवारा कुत्तों की भी मौत हुई है।

पश्चिम बंगाल में सिलेंडर ब्लास्ट, 8 लोगों की मौत

● इनमें 4 बच्चे, 4 महिलाएं शामिल, भाजपा का आरोप- बम बनाने की अवैध फैक्ट्री चल रही थी

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के साउथ 24 परगना जिले के पाथर प्रतिमा इलाके में सोमवार को देर रात सिलेंडर में ब्लास्ट हुआ था। हादसे में मरने वालों की संख्या मंगलवार को 8 हो गई। पहले यह आंकड़ा 7 था। अधिकारियों के मुताबिक मरने वालों में 4 बच्चे और 4 महिलाएं शामिल हैं। सुंदरबन जिले के एसपी कोटेश्वर राव ने बताया कि हादसा ढोलाघाट गांव में रात 9 बजे का है। मरने वाले एक ही परिवार के हैं। पुलिस के मुताबिक शुरुआती जांच में 2 गैस सिलेंडर में ब्लास्ट की जानकारी है। वहीं भाजपा विधायक और विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी ने कहा कि यहां क्रूड बम बनाने की अवैध फैक्ट्री चल रही थी। शुभेंदु अधिकारी ने कहा कि सरकार मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और पुलिस प्रशासन घटना को दबाने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि, एसपी कोटेश्वर राव ने कहा कि घर में कोई अवैध पटाखा फैक्ट्री नहीं थी।

सीएम राइज स्कूल कहलाएंगे अब सांदीपनि विद्यालय : मुख्यमंत्री

भगवान श्रीकृष्ण ने की थी सबसे पहले 'स्कूल चलें हम' अभियान की शुरूआत

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश सरकार विद्यार्थियों को गणवेश, लैपटॉप, ई-स्कूटी, साइकिल, कोचिंग के साथ अन्य सुविधाएं उपलब्ध करवा कर सही अर्थ में रामराज की कल्पना को साकार कर रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के निर्देशन में मध्यप्रदेश शिक्षा के क्षेत्र में भी विकास कर रहा है। प्रदेश के समस्त निर्मित और निर्माणाधीन सीएम राइज स्कूलों का नाम अब सांदीपनि विद्यालय होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आज भोपाल की अरेरा कॉलोनी स्थित शासकीय नवीन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (ओल्ड कैम्पियन) में आयोजित 'स्कूल चलें हम' राज्य स्तरीय प्रवेश उत्सव कार्यक्रम-2025 को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नवीन विद्यालय परिसर पहुंचने ही विद्यार्थियों से संवाद किया और इस अवसर पर लगाई गई प्रदर्शनी देखी। मुख्यमंत्री ने विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए चित्रों का अवलोकन कर सराहना की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कार्यक्रम में के.जी.-2 में प्रवेश लेने वाली नन्ही बालिकाओं को माला पहनाकर उनके विद्यालय में प्रवेश की औपचारिकता पूर्ण करवाई। उन्होंने नव प्रवेशी बालिकाओं को उपहार दिए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव और अन्य अतिथियों ने प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को सम्मान प्रदान किया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने समस्त शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में विद्यार्थियों के प्रवेश की कार्यवाही स्कूल शिक्षा विभाग के एजुकेशन पोर्टल 3.0 पर स्टूडेंट डायरेक्ट्री मैनेजमेंट सिस्टम से किए जाने और इस पोर्टल में स्कूल शिक्षा विभाग से संबंधित सभी कार्यों को शामिल किए जाने की प्रशंसा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पोर्टल 3.0 का शुभारंभ भी किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विद्यार्थियों को दिए ये टिप्स

- विद्यार्थी समय का पूर्ण सदुपयोग करें।
- विद्यार्थी खूब पढ़ें भी और खेलें भी।
- विद्यार्थी मित्रता का भी सम्मान करें। श्रीकृष्ण और सुदामा की मैत्री से सीखें।
- विद्यार्थी शासन द्वारा उपलब्ध करवाई जा रही सुविधाओं का लाभ लें।
- सभी विद्यार्थी अपनी बहुमुखी प्रतिभा से राष्ट्र और प्रदेश का नाम रोशन करें।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आज का दिन विशेष है। अद्भुत संयोग है, जो मध्यप्रदेश की धरती पर हम देख रहे हैं। हमें अतीत में जाकर देखना होगा और अतीत के घटनाक्रम का शोध भी करना होगा। इसके अनुरूप आवश्यक सुधार भी हम करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जब भगवान श्रीकृष्ण ने कंस को मारा तो उस समय की परिस्थितियों में उन्होंने शिक्षा के महत्व को समझा। वह प्रथम स्कूल चलें हम अभियान था। भगवान श्रीकृष्ण ने ही यह अभियान प्रारंभ किया। भगवान श्रीकृष्ण ने कंस के कुशासन का अंत कर शिक्षा का महत्व प्रतिपादित किया। उस युग के ऋषि मुनियों ने निर्णय लिया कि श्रीकृष्ण को शिक्षा के लिए गोकुल भेजा जाए जो सांदीपनि आश्रम था। यहीं पर श्रीकृष्ण और सुदामा की अनुकरणीय मित्रता का उदाहरण भी पूरे विश्व ने देखा कि मित्रता का निर्वाह और आत्मीयता को किस तरह जीवन भर बनाए रखा जा सकता है।

सुप्रभात

सहरा का सफ़र था तो
शजर क्यूँ नहीं आया,
माँगी थीं दुआएँ तो
असर क्यूँ नहीं आया.!!
देखा था जिसे हम ने कभी
शौक़-ए-तलब में.!!
महताब सा वो चेहरा
नज़र क्यूँ नहीं आया.!!
हम लोग तो मरते रहे
क़िस्तों में हमेशा,
फिर भी हमें जीने का
हुनर क्यूँ नहीं आया.!!
लगता है मुक़द्दर में
मिरे साया नहीं है,
मुद्दत से सफ़र में हूँ
तो घर क्यूँ नहीं आया.!!
जिस के लिए बैठे थे
बिछाए हुए आँखें,
महफ़िल में अभी तक वो
बशर क्यूँ नहीं आया.!!
मौसम तो हर इक
शाख़ के खुलने का 'ज़फ़र' था,
फिर उन पे कोई बर्ग-ओ-समर
क्यूँ नहीं आया.!!

– ज़फ़र इक़बाल ज़फ़र

विक्रमोत्सव

डॉ. जफर महमूद

उज्जैन से

डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में अतीत को वर्तमान करता उज्जैन

उज्जयिनी इतिहास में धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और आध्यात्मिक नगरी रही है। न्यायप्रिय सम्राट विक्रमादित्य एवं महाकवि कालिदास के नाम से प्रसिद्ध यह नगर अपने इतिहास को हजारों वर्षों से संजोये हुए है। विक्रमादित्य के काल को उज्जैन में प्रस्थापित करने का कार्य इतिहास मर्मज्ञ डॉ. मोहन यादव के मुख्यमंत्री बनते ही आरंभ हो गया। उन्होंने इस नगर की ऐतिहासिक पहचान को पुर्नस्थापित करने का काम आरंभ किया। उन्होंने 125 दिवसीय विक्रमोत्सव के बहुआयामी उत्सव को आयोजित कर उज्जैन को नई प्रतिष्ठा देने का कार्य किया है। मध्य प्रदेश के राज्यपाल मंगू भाई पटेल ने भारतीय नववर्ष विक्रम संवत् 2082 चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के शुभ अवसर पर उज्जैन में विक्रम महोत्सव के प्रसंग में आयोजित कार्यक्रमों में प्रदेशवासियों का स्वागत और अभिनंदन किया ।

विक्रमोत्सव का आयोजन भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न पहलुओं के प्रकटीकरण के लिए हमारी गौरवशाली विरासत और वर्तमान के विकास का उत्सव है। यह दिन हमारे लिए एक नए वर्ष की शुरुआत का प्रतीक है, जो हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और हमारे पूर्वजों के योगदान को याद करने का अवसर है। नववर्ष का यह पर्व विविध स्वरूपों में मनाया जाने वाला 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की संकल्पना को स्थापित करता है। इसे कहीं 'गुड़ी पड़वा' तो कहीं 'चैती चांद', कहीं 'युगादि' तो कहीं 'उगादि' और कहीं 'नवरोज अगदु' के अलग-अलग रूपों में मनाया जाता है। इसी के साथ नौ दिन आरोग्य, साधना और कायाकल्प के नवरात्र का भी आरंभ होता है।

राज्यपाल पटेल और मुख्यमंत्री डॉ यादव ने विक्रमोत्सव में प्रदेशव्यापी जल गंगा संवर्धन अभियान की शुरुआत की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस अवसर पर कहा कि उज्जैन नगरी सम्राट विक्रमादित्य के शासनकाल की नगरी है। उज्जयिनी वह नगरी है जिसमें योगीराज श्री कृष्ण ने शिक्षा ग्रहण की तो अनेक राजा महाराजाओं ने अपने न्याय प्रिय शासन से दुनिया को न्याय की ओर मोड़ा। आज का दृश्य देख कर लग रहा है मानो आज सम्राट विक्रमादित्य स्वयं इस नगरी में पधारे हैं।

– शेष पेज 2 पर

भोपाल का तापमान

अधिकतम 22 °c | न्यूनतम 16°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ बुधवार,2 अप्रैल 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

पंचम मां स्कंदमाता

देवी मां का पांचवां रूप स्कंदमाता के नाम से प्रचलित है। भगवान् कार्तिकेय का एक नाम स्कन्द भी है जो ज्ञानशक्ति और कर्मशक्ति के एक साथ सूचक हैं। स्कन्द इन्हीं दोनों के मिश्रण का परिणाम है।

बुलडोजर ऐक्शन ने हमारी 'अंतरात्मा' को झकझोर दिया है

● सुप्रीम कोर्ट ने यूपी में बुलडोजर ऐक्शन पर जताई नाराजगी ● कहा-यह अमानवीय,10-10 लाख मुआवजा देने का आदेश

प्रयागराज (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को प्रयागराज डेवलपमेंट अथॉरिटी को 2021 में मकान गिराने पर फटकार लगाई। कोर्ट ने अधिकारियों के इस बुलडोजर एक्शन को अमानवीय, अवैध बताया। कहा, इस कार्रवाई के दौरान दूसरों की भावनाओं और अधिकारों का ख्याल नहीं रखा गया। जस्टिस अभय एस ओका और जस्टिस उज्जवल भुइयां की बेंच ने कहा, देश में लोगों के रिहायशी घरों को इस तरह से नहीं गिराया जा सकता है। इसने हमारी अंतरआत्मा को झकझोर दिया है। प्रयागराज प्रशासन ने 2021 में गैंगस्टर

अतीक की प्रापर्टी समझकर एक वकील, प्रोफेसर और 3 अन्य के मकान गिरा दिए थे। सुप्रीम कोर्ट में वकील जुल्फिकार हैदर, प्रोफेसर अली अहमद और अन्य लोगों ने याचिका दाखिल की थी। ये वो लोग हैं, जिनके मकान तोड़े गए थे। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने इनकी याचिकाएं ठुकरा दी थीं। सुप्रीम कोर्ट ने डेवलपमेंट अथॉरिटी को आदेश दिया कि जिनके मकान गिराए गए हैं, उन्हें 6 हफ्तों के भीतर 10-10 लाख रुपए मुआवजा दिया जाए। सुप्रीम कोर्ट ने कहा- राइट टु शेल्टर नाम भी कोई चीज होती है। उचित प्रक्रिया नाम की भी कोई चीज होती है। इस तरह की कार्रवाई किसी

तरह से भी ठीक नहीं है। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस उज्जल भुइयां ने यूपी के अंबेडकर नगर में 24 मार्च की घटना का जिक्र करते हुए कहा, अतिक्रमण विरोधी अभियान के दौरान एक तरफ झोपड़ियों पर बुलडोजर चलाया जा रहा था तो दूसरी तरफ एक 8 साल की बच्ची अपनी किताब लेकर भाग रही थी। इस तस्वीर ने सबको शॉक्ड कर दिया था। सुप्रीम कोर्ट में जब पहले इस केस की सुनवाई हुई तो पीड़ितों की तरफ से वकील अभिमन्यु भंडारी ने दलील दी। उन्होंने कहा था,अतीक अहमद नाम का एक गैंगस्टर था, जिसकी 2023 में हत्या कर दी गई थी। अफसरों ने पीड़ितों की जमीन को अतीक की जमीन समझ लिया। उन्हें (राज्य को) अपनी गलती स्वीकार कर लेनी चाहिए। इस दलील पर यूपी सरकार ने कहा था कि हमने याचिकाकर्ताओं को नोटिस का जवाब देने के लिए उचित समय दिया गया था।

मेरे छोटे-छोटे बच्चे हैं, हमारी टांग में एक रॉड भी डली है

उम्रकैद की सजा मिली तो जज के सामने गिड़गिड़ाने लगा पादरी बजिंदर

मोहाली (एजेंसी)। पंजाब के मोहाली की जिला अदालत ने रेप केस में दोषी पाए गए पादरी बजिंदर सिंह को उम्रकैद की सजा सुनाई है। अदालत की ओर से उम्रकैद की सजा सुनाए जाने के

बाद दोषी बजिंदर सिंह रहम की भीख मांगने लगा। वह अदालत के सामने गिड़गिड़ाने लगा। हालांकि, पुलिस उसे कस्टडी में लेकर रवाना हो गई। इस मामले में पीड़ित के वकील ने बताया कि कोर्ट ने बजिंदर को सजा सुनाते हुए कहा कि उसे अंतिम सांस तक जेल में रहना होगा। सजा से बचने के लिए पादरी बजिंदर कोर्ट में गिड़गिड़ाने लगा। उसने कहा कि मेरे बच्चे छोटे हैं और पत्नी बीमार है। वो बोला कि मैं सोशल आदमी हूं। मेरी टांग में रॉड डली हुई है, इसलिए मुझ पर रहम किया जाए।

यज्ञ के लिए भिक्षा लेने निकलीं महिलाओं पर हुई पत्थरबाजी

कोडरमा में ड्रोन से छतों की तलाशी ले रही पुलिस,पत्थर होने का शक

कोडरमा (एजेंसी)। कोडरमा जिले के छतरबर गांव में यज्ञ के लिए भिक्षा मांगने निकली महिलाओं पर पत्थरबाजी की गई है। इस पत्थरबाजी के बाद इलाके में तनाव बना हुआ है। हांलाकि एहतियातन इलाके में बड़ी संख्या में पुलिस बलों की तैनाती कर दी गई है। अभी स्थिति नियंत्रण में है। वहीं पुलिस इलाके की मॉनिटरिंग और घटना की जांच ड्रोन से कर रही है। जानकारी के अनुसार चेचाई गांव की महिलाएं यज्ञ के लिए मंगत मांगने निकली थीं। इस दौरान छतरबर में कुछ असामाजिक तत्वों ने उन पर पत्थर फेंका।

हमें उनसे सीखना होगा वो कितना काम करते हैं

● सीपीएम नेता प्रकाश करात ने की आरएसएस वर्कर्स की तारीफ
● करात ने धार्मिक आस्थावानों के बीच संवाद बढ़ाने की बात की

नई दिल्ली (एजेंसी)। सीपीएम के सीनियर नेता प्रकाश करात ने बीजेपी और आरएसएस की तारीफ की है। उन्होंने कहा कि हम बीजेपी-आरएसएस से लड़ने की बात करते हैं, लेकिन चुनाव के समय। आरएसएस सांस्कृतिक, सामाजिक क्षेत्रों में काम करता है। करात ने अपनी पार्टी की कार्यशैली पर सवाल उठाते हुए बीजेपी और संघ की संगठनात्मक रणनीति से सबक लेने की जरूरत पर जोर दिया। एक इंटरव्यू में करात ने स्पष्ट किया कि उनका यह बयान भाजपा-आरएसएस की तारीफ नहीं, बल्कि सीपीएम की कमियों को उजागर करने और उसका मुकाबला करने की रणनीति पर आत्म-चिंतन है। यह बयान ऐसे समय में आया है, जब वामपंथी दल देश में घटते प्रभाव और पश्चिम बंगाल व केरल जैसे अपने गढ़ों में भी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। करात ने कहा, हम भाजपा, आरएसएस और हिंदुत्व ताकतों से लड़ने की बात करते हैं। लेकिन वे कैसे बढ़े हैं। हम ज्यादातर पार्टियों की तरह चुनाव के समय ही संगठन और लड़ाई पर ध्यान देते हैं। आरएसएस सांस्कृतिक और सामाजिक क्षेत्रों में काम करता है, कई स्तरों पर सक्रिय है। हम

कहां हैं। उनका यह बयान सीपीएम की उस पुरानी आलोचना को पर जोर देता है, जिसमें कहा जाता है कि पार्टी वैचारिक स्तर पर सक्रियता के बजाय चुनावी राजनीति में उलझी रहती है। हालांकि, करात ने साफ किया कि इसका मतलब यह नहीं कि उनकी पार्टी को आरएसएस की नकल करनी चाहिए, बल्कि उसका मुकाबला करने के लिए प्रभावी ढंग से काम करना चाहिए। बिहार और पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव से पहले करात का यह बयान काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। पश्चिम बंगाल में 2021 के विधानसभा चुनाव में पार्टी का खाता भी नहीं खुला, जबकि केरल में वह सत्ता में बनी हुई है। करात का यह बयान 2022 में हुए पार्टी कांग्रेस के उस प्रस्ताव से भी जुड़ा है, जिसमें धार्मिक आस्थावानों के बीच काम करने और उन्हें यह समझाने का निर्देश दिया गया था कि वामपंथ उनकी आस्था का विरोधी नहीं, बल्कि धर्म के राजनीतिक दुरुपयोग का खिलाफ है। करात ने माना कि इस दिशा में पार्टी नाकाम रही है। उन्होंने आगे कहा,हमें लोगों को यह बताना होगा कि हम उनकी धार्मिक भावनाओं के खिलाफ नहीं हैं, बल्कि धर्म को हथियार बनाने के खिलाफ हैं। अगर सीपीआईएम को अपनी प्रासंगिकता बनाए रखनी है,तो उसे जमीनी स्तर पर काम करना होगा।

लोकसभा में आज पेश होगा वक्फ संशोधन बिल

● दोपहर 12 बजे का समय निर्धारित,8 घंटे चर्चा होगी

सहयोगी तेलगूदेशम पार्टी ने किया समर्थन का ऐलान

नई दिल्ली (एजेंसी)। वक्फ संशोधन बिल 2 अप्रैल को प्रश्नकाल के बाद दोपहर 12 बजे लोकसभा में पेश होगा। स्पीकर ओम बिरला ने इस पर 8 घंटे चर्चा का समय निर्धारित किया है। इसके बाद बिल लोकसभा में पास किया जाएगा। बीजेपी ने अपने सभी सांसदों को सदन में मौजूद रहने के लिए व्हिप जारी कर दिया है। बिजनेस एडवाइजरी कमेटी ने जब इस बात की जानकारी दी तब विपक्ष ने कहा कि चर्चा 12 घंटे होनी चाहिए। संसदीय कार्यमंत्री किरेन

रिजिजू ने कहा कि बिल पर चर्चा का समय बढ़ाया जा सकता है। हालांकि विपक्ष ने बीए की बैठक से वॉकआउट कर दिया। कांग्रेस सांसद गौरव गोगोई ने सरकार पर अपने एजेंडे को थोपने और विपक्षी सदस्यों की बात नहीं सुनने का आरोप लगाया। समाजवादी पार्टी सुप्रीमो और सांसद अखिलेश यादव ने कहा कि हम बिल का विरोध करेंगे।

तेलगूदेशम पार्टी ने किया समर्थन का ऐलान

एनडीए में दूसरी सबसे बड़ी पार्टनर टीडीपी ने संसद में वक्फ संशोधन विधेयक का समर्थन करने का ऐलान किया है। चंद्राबाबू नायडू की पार्टी टीडीपी के लोकसभा में 16 सांसद हैं। पहले यह संभावना जताई जा रही थी तेलगूदेशम पार्टी वक्फ बिल पर न्यूट्रल पोजिशन बनाकर दूरी बनाए रख सकती है। वह न तो इसका समर्थन करेगी और न ही विरोध करेगी। पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रेम कुमार जैन ने बताया कि टीडीपी ने हमेशा मुसलमानों के हितों का ख्याल किया है और सीएम नायडू पहले ही कह चुके हैं कि हम मुसलमानों की हर हित की रक्षा करेंगे। अब टीडीपी के ऐलान के बाद बिल पास होने की उम्मीद बढ़ गई है। टीडीपी का कहना है कि वक्फ बोर्ड की 9 लाख एकड़ जमीन पर अवैध कब्जा कर रखा है।

पेज 1 का शेष

डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में अतीत को वर्तमान करता उज्जैन

हम सबके लिए यह सौभाग्य की बात है माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में श्री महाकाल महालोक का निर्माण हुआ और भगवान श्री महाकालेश्वर की नगरी का वैभव और बड़ा है। कार्यक्रम में विक्रम ध्वज का अनावरण किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में आकर्षक आतिशबाजी की गई। कार्यक्रम में 1000 ड्रोन के माध्यम से आकर्षक ड्रोन शो की प्रस्तुति दी गई। मध्यप्रदेश के लिए पहला अवसर है, जब 1000 ड्रोन के माध्यम से विभिन्न तत्वों को यहां आकाश में दिखाई दिए। यह सबसे बड़ी बात है ड्रोन शो के जरिए भगवान श्री महादेव और माता पार्वती की आकृतियां और सूर्य, चंद्र, तारे और सारे नक्षत्र आकाश में चलते हुए दिखाई दिए। कार्यक्रम में सिहंस्थ गान लांच किया गया । कार्यक्रम में लोकप्रिय गायिका श्रेया घोषाल द्वारा भजनों और गानों की मनमोहक प्रस्तुति दी गई। शिप्रा नदी पर बने विशाल मंच से देश की ख्यात नाम गायिका श्रेया घोषाल ने अपने मधुर कंठ से आध्यात्मिक गीतों की प्रस्तुति से सभी उपस्थित नागरिकों का मनमोह लिया। कार्यक्रम में संगठन के वरिष्ठ नेता शिवप्रकाश , उच्च शिक्षा मंत्री इंदर सिंह परमार, सांसद उज्जैन अनिल फिरोजिया, विधायक उज्जैन अनिल जैन कालूहेड़ा, पद्मश्री डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित, महापौर उज्जैन मुकेश टटवाल, अध्यक्ष नगर निगम श्रीमती कलावती यादव, पूर्व केंद्रीय मंत्री सत्यनारायण जटिया सहित बड़ी संख्या में नागरिकगण उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री के निर्देश पर विक्रम व्यापार मेले की अवधि बढाई गई- मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के निर्देश पर उज्जैन में आयोजित विक्रम व्यापार मेले की अवधि आगामी 09 अप्रैल तक बढ़ाई गई है। इसी अनुक्रम में मध्यप्रदेश शासन के परिवहन सचिव मनीष सिंह ने आदेश जारी किए गए हैं।

विक्रम पंचांग सहित 7 पुस्तकों का लोकार्पण - विक्रमोत्सव अंतर्गत वर्ष प्रतिपदा पर राज्यपाल मंगुभाई पटेल, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा विक्रम पंचांग 2082, कला पंचांग, सार्वभौम सम्राट विक्रमादित्य- पद्मश्री डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित, लोक कथाओं का कीर्तिपुरूष विक्रमादित्य - डॉ. पूरन सहगल, कालकाचार्य कथा की परंपरा- विनोद कुमार सुनार, जल स्रोत एवं जल संवर्धन - डॉ. प्रभा श्रीनिवासुलु, मंदिरों की छाया में बसे शहर - डॉ. आभा सेन एवं भारत विक्रम - श्रीराम तिवारी, राजेश्वर त्रिवेदी, प्रवीण पाटोद, उज्जैन का रंगों से भरा इतिहास, नर्मदा पुरम में स्वाधीनता संग्राम एवं रायसेन जिले में स्वाधीनता संग्राम का लोकार्पण हुआ।

हिमाचल की गद्दी संस्कृति को मिली वैश्विक पहचान

● चंबा की बेटी ने लंदन फैशन सम्मेलन में पेश किया शोध

भरमौर (एजेंसी)। लंदन में आयोजित प्रतिष्ठित हैलैंडर फैशन सम्मेलन 2024 में हिमाचल प्रदेश की गद्दी संस्कृति को विश्व स्तर पर पहचान मिली है। चंबा जिले में भरमौर के रजौर गांव की बेटी तनिशवी ठाकुर ने इस सम्मेलन में गद्दी दुल्हन की पारंपरिक पोशाक पर अपना रिसर्च पत्र प्रस्तुत किया। तनिशवी ने अपनी रिसर्च में गद्दी दुल्हन की पारंपरिक पोशाक का विकास वैश्वीकरण और सांस्कृतिक एकीकरण का प्रभाव विषय पर काम किया। विश्वभर से चुने गए शोधार्थियों में तनिशवी का चयन एक विशेष उपलब्धि है। तनिशवी प्रसिद्ध खिन्नू गीत के गायक और सेवानिवृत्त मुख्य अभियंता रुमेल सिंह की बेटी हैं। उन्होंने निफ्ट कांगड़ा से फैशन डिजाइनिंग में स्नातक किया है।

काशी,मथुरा आंदोलन में शामिल हो सकते हैं संघ कार्यकर्ता

● होसबोले ने दिया बड़ा बयान, अपने सदस्यों को दी हरी झंडी

नई दिल्ली (एजेंसी)। अयोध्या हमारी अब काशी मथुरा की बारी... अयोध्या-बाबरी मस्जिद विवाद को लेकर सुप्रीम कोर्ट का फैसला आया। फैसले के बाद मंदिर बनने का रास्ता साफ हो गया। इसके बाद काशी मथुरा की बारी... वाला नारा काफी जोरशोर से सुनने को मिल रहा था। श्रीकृष्ण जन्मभूमि के साथ काशी विश्वनाथ ज्ञानवापी विवाद को लेकर आंदोलन तेज हो गया। काशी मथुरा आंदोलन को लेकर संतों की लामबंदी भी लगातार होती रही है। अब इस आंदोलन को संघ की तरफ से परोक्ष समर्थन मिलता दिख रहा है। राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ की तरफ से काशी-मथुरा आंदोलन को लेकर अपना रुख साफ कर दिया गया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के महासचिव दत्तात्रेय होसबोले ने साफ कर दिया है कि अगर संगठन के सदस्य मथुरा में कृष्ण जन्मभूमि और काशी विश्वनाथ-ज्ञानवापी विवाद से संबंधित आंदोलन में भाग लेते हैं तो संगठन को कोई आपत्ति नहीं होगी। हालांकि, होसबाले ने सभी मस्जिदों को निशाना बनाकर बड़े पैमाने पर किए जाने वाले पुनर्ग्रहण प्रयासों के खिलाफ चेतावनी

दी। उन्होंने इस संबंध में सामाजिक कलह से बचने की आवश्यकता पर जोर दिया। मंदिर-मस्जिद विवाद के बीच संघ की तरफ से पहले भी कई बयान आते रहे हैं। ये बयान दर्शाते हैं कि संघ भले ही सीधे-सीधे विवाद से खुद को भले ही अलग रखता हो वैचारिक रूप से पूरा समर्थन देता है।

राजस्थान में गर्मी का सितम, 42 डिग्री पहुंचा पारा

● भीषण गर्मी से होगा बुरा हाल,लू को लेकर चेतावनी जारी

जयपुर (एजेंसी)। गर्मी ने पूरे देश में अपनी दस्तक दे दी है और अप्रैल की शुरुआत में ही पारा चढ़ने लगा है। मौसम विभाग के अनुसार, आने वाले दिनों में तापमान और बढ़ सकता है। उत्तर भारत में जहां तेज धूप और लू चलने की संभावना है, वहीं दक्षिणी और पूर्वी हिस्सों में हल्की बारिश की उम्मीद जताई जा रही है। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के कई इलाकों में तापमान तेजी से बढ़ रहा है। राजधानी दिल्ली में पारा 40 डिग्री के करीब पहुंच गया है, जबकि राजस्थान के कुछ इलाकों में यह 42 डिग्री तक दर्ज किया गया। मौसम विभाग ने अगले कुछ दिनों में लू चलने की चेतावनी जारी की है। दक्षिण भारत के तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश

के कुछ इलाकों में हल्की बारिश के आसार हैं। मौसम विशेषज्ञों के मुताबिक, बंगाल की खाड़ी में बने सिस्टम के चलते यहां बादल छाए रह सकते हैं और कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश हो सकती है। इससे तापमान में कुछ गिरावट आएगी और लोगों को गर्मी से थोड़ी राहत मिलेगी। बंगाल, ओडिशा, असम, मेघालय और अन्य पूर्वोत्तर राज्यों में बादल छाए रह सकते हैं और हल्की बारिश होने की संभावना है। मौसम विभाग के अनुसार, इन इलाकों में अगले दो-तीन दिनों तक बारिश जारी रह सकती है, जिससे तापमान में मामूली गिरावट आ सकती है। मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में भी गर्मी बढ़ने लगी है। भोपाल, इंदौर, रायपुर और ग्वालियर जैसे शहरों में तापमान 38-41 डिग्री सेल्सियस है।

एमएसएमई में निवेश और टर्न ओवर की सीमा ढाई गुना हुई

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की मंशा अनुरूप अब सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम इकाइयों का निवेश और टर्न ओवर (कारोबार) का दायरा बढ़ाकर ढाई गुना कर दिया गया है। राज्य शासन ने एक अप्रैल 2025 से नए नियम प्रभावी कर दिए हैं। एमएसएमई मंत्री श्री चैतन्य कुमार काश्यप ने कहा है कि इस नए बदलाव से मध्यप्रदेश में नवीन उद्योग धंधों का विकास होगा और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम की दक्षता में वृद्धि, तकनीकी उन्नयन और बेहतर वित्तीय पहुंच हो सकेगी।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग द्वारा जारी की गई अधिसूचना अनुसार 1 अप्रैल 2025 से सूक्ष्म उद्यम के निवेश की सीमा एक करोड़ से बढ़ा कर 2 करोड़ 50 लाख और कारोबार की सीमा बढ़ाकर 10 करोड़ रूपये की गई है। पूर्व में निवेश की सीमा एक करोड़ तथा टर्न ओवर (कारोबार) की सीमा 5 करोड़ रूपये थी। इसी तरह लघु उद्यम श्रेणी में निवेश की सीमा 10 करोड़ से बढ़ाकर 25 करोड़ और करोबार की सीमा को 50 करोड़ से बढ़ाकर 100 करोड़ कर दिया गया है। मध्यम उद्यमों में निवेश की सीमा अब 125 करोड़ होगी तथा टर्न ओवर 500 करोड़ का होगा। पहले यह सीमा निवेश के लिये 50 और कारोबार के लिये 250 करोड़ नियत थी। उल्लेखनीय है कि केन्द्र सरकार ने भी 21 मार्च 2025 को तत्संबंध में अधिसूचना जारी की है।

मंत्रालय में हुआ राष्ट्र-गीत एवं राष्ट्र-गान का सामूहिक गायन

भोपाल (नप्र)। अप्रैल माह के प्रथम शासकीय कार्य दिवस पर मंत्रालय स्थित सरदार वल्लभ भाई पटेल पार्क में राष्ट्र-गीत 'वंदे-मातरम' एवं राष्ट्र-गान 'जन-गण-मन' का सामूहिक गायन हुआ। इस अवसर पर पुलिस बैंड ने मधुर धुनें प्रस्तुत की। वंदेमातरम गायन में खेल एवं युवा कल्याण, सहकारिता, मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग, मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, अपर मुख्य सचिव श्री अशोक बर्णवाल, श्री संजय दुबे, सहित सतपुड़ा-विंध्याचल भवन के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे।

भोपाल में युवती ने सल्फास की गोलियां खाई

भोपाल (नप्र)। सूखी सेवनिया इलाके में रहने वाली युवती की सल्फास की गोलियां खाने से मौत हो गई। घटना सोमवार की है, इलाज के दौरान मंगलवार को उसकी जान चली गई। परिजनों ने पुलिस को बताया कि गलती से युवती ने गोलियां खाई थीं। वहीं पुलिस मामले की जांच कर रही है। पीएम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया है। सूखी सेवनिया पुलिस ने बताया कि 18 वर्षीय नेहा कुशवाहा बरखेड़ा अब्दुल्ला गांव में रहती थी। आठवीं कक्षा पास करने के बाद उसने पढ़ाई छोड़ दी थी। सोमवार को घर में गेहूं के बोरे आए थे। उसके पिता गेहूं में सल्फास की गोलियां रख रहे थे। इस दौरान नेहा भी इसी कमरे में थी। कुछ देर बाद ही पिता कमरे से बाहर चले गए।

पिता ने उल्टियां करता देख अस्पताल पहुंचाया था- जब पिता वापस आए नेहा लगातार उल्टियां कर रही थी। परिजन उसे तुंरत ही पटेल नगर इलाके के एक निजी अस्पताल में लेकर गए। यहां पर इलाज के दौरान सोमवार तड़के सुबह नेहा की मौत हो गई। अस्पताल से सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची तथा जांच शुरू की। पुलिस को मौके से सुसाइड नोट नहीं मिला। वह मोबाइल का इस्तेमाल भी नहीं करती थी। प्राथमिक तौर पर परिजनों ने बताया कि नेहा ने गलती से सल्फास की गोलियां खा ली हैं।

सामाजिक न्याय में अनुदान आवंटन प्रक्रिया को बनाया गया पूर्ण पारदर्शी

भोपाल(नप्र)। सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन कल्याण विभाग से संबंधी सभी शासकीय और मान्यता प्राप्त अशासकीय संस्थाएँ वित्तीय वर्ष 2025-26 के अनुदान प्रदान करने की प्रक्रिया को पूर्णतः पारदर्शी बनाया गया है। अब संस्थाएँ ऑनलाइन पोर्टल पर आवेदन कर सकेंगे।

प्रमुख सचिव सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन कल्याण श्रीमती सोनाली वायंगणकर ने कहा कि विभाग द्वारा शासकीय और अशासकीय मान्यता प्राप्त संस्थाओं, जिला दिव्यांगजन पुनर्वास केन्द्र को अनुदान के आवेदन की प्रक्रिया को ऑनलाइन कर दिया गया है। यह संस्थाएँ विभागीय पोर्टल पर अपनी संस्था की सम्पूर्ण जानकारी सहित मांग पत्र जिला कार्यालय को प्रेषित करेंगी। जिला कार्यालयों द्वारा स्वीकृति और अस्वीकृति पोर्टल पर दर्ज करनी होगी। जिला स्तर पर आवंटन की अनुपलब्धता की स्थिति में अनुशंसा सहित मांग पत्र संचालनालय को प्रेषित किया जाएगा। संस्थाओं को प्रति माह किए गये व्यय की जानकारी भी विभागीय पोर्टल पर दर्ज करानी होगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ओडिशा के स्थापना दिवस पर दी बधाई

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने ओडिशा राज्य के स्थापना दिवस के अवसर पर नागरिकों को शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 'एक्स' पर कहा कि मुख्यमंत्री श्री मोहन माझी के नेतृत्व में ओडिशा की पुण्यधरा पल्लवित एवं प्रगति के पथ पर अग्रसर है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने महाप्रभु श्री जगन्नाथ जी से देशवासियों के जीवन में सुख, समृद्धि और संपन्नता के लिए मंगलकामना की है।

मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में म.प्र.राज्य वेटलैंड प्राधिकरण की पांचवीं बैठक मंत्रालय में हुई

पर्यावरण संरक्षण का ध्यान रखकर ही करेंगे पर्यटन विकास : सीएम डॉ. यादव

● मंत्रालय में हुई वेटलैंड प्राधिकरण की बैठक ● 13 हजार से अधिक वेटलैंड्स का भौतिक सत्यापन हुआ पूरा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि पर्यटन विकास के प्रयासों में पर्यावरण का भी ध्यान रखा जाना आवश्यक है। प्रकृति और पर्यावरण को क्षति पहुंचाए बिना ही पर्यटन विकास के सभी प्रकल्प क्रियान्वित किए जाएंगे। इस संबंध में समुचित परीक्षण के बाद आवश्यक निर्णय लिए जाएं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में मध्यप्रदेश राज्य वेटलैंड प्राधिकरण की पांचवीं बैठक मंगलवार को मंत्रालय में संपन्न हुई। बैठक में वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री श्री दिलीप अहिरवार उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बैठक में प्रदेश में वेटलैण्ड्स के भौतिक सत्यापन और सीमांकन कार्य की जानकारी प्राप्त कर सभी कार्यों को पूर्ण करने के निर्देश दिए। बैठक में बताया गया कि इसरो-एसएसी-2021 (इसरो के अंतरिक्ष अनुप्रयोग केन्द्र) एटलस के अनुसार प्रदेश में भौतिक सत्यापन और सीमांकन का कार्य पर्यावरण विभाग के राज्य वेटलैण्ड प्राधिकरण द्वारा किया जा रहा है। यह वेटलैण्ड्स 2.25 हैक्टेयर क्षेत्रफल से अधिक के हैं। यह कार्य राजस्व विभाग और वन विभाग के सहयोग और संबंधित जिला प्रशासन के नेतृत्व में सम्पन्न करवाया जा रहा है। प्रदेश में 31 मार्च 2025 को समाप्त वित्त वर्ष में 13 हजार 454 वेटलैण्ड्स का जमीनी सत्यापन और 12 हजार 741 वेटलैण्ड्स के सीमांकन का कार्य पूरा हो चुका है। प्रदेश में कुछ ही वेटलैण्ड्स शेष हैं, जहां यह कार्य अभी चल रहा है। एक नया मोबाइल एप भी तैयार किया गया है। इस कार्य के लिए प्रदेश के 55 जिलों में लगभग 5 हजार कर्मचारियों को ऑनलाइन प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। मॉनीटरिंग के लिए डैशबोर्ड विकसित किया गया है।

मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने कहा कि पर्यावरण विभाग के स्तर पर वेटलैण्ड के भौतिक सत्यापन और सीमांकन कार्य की नियमित समीक्षा की जाए। बैठक में मुख्यमंत्री कार्यालय में अपर मुख्य सचिव डॉ. राजेश राजौरा अपर मुख्य सचिव, नगरीय विकास एवं आवास विभाग के श्री संजय कुमार शुक्ला, अपर मुख्य सचिव वन श्री अशोक वर्णवाल सहित वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

वन क्षेत्र भोजपुर से 2 टाइगर्स को रेस्क्यू कर सतपुड़ा टाइगर रिजर्व भेजा गया

ग्रामवासियों की माँग पर टाइगर्स को किया गया रेस्क्यू

भोपाल(नप्र)। मुख्य वन संरक्षक भोपाल वृत्त के मार्गदर्शन एवं वन मण्डल अधिकारी ओबेदुल्लागंज के नेतृत्व में परिक्षेत्र चिकलोद के स्टॉफ द्वारा सोमवार को ग्रामवासियों की माँग पर टाइगर्स को पकड़ने के लिये पिंजरे लगाये गये। वन विहार भोपाल एवं सतपुड़ा टाइगर रिजर्व की रेस्क्यू टीम, पशु चिकित्सकों एवं स्थानीय प्रशासन और पुलिस के सहयोग से दोनों टाइगर्स का

सफल रेस्क्यू किया गया। रेस्क्यू के उपरांत दोनों टाइगर्स का स्वास्थ्य परीक्षण कर सुरक्षित ढंग से सतपुड़ा टाइगर रिजर्व भेजा गया।

भोजपुर से लगे हुए वन क्षेत्र बीट भोजपुर में भोजपुर-ईमलिया मार्ग पर दो टाइगर्स का लगातार विचरण विगत एक माह से बना हुआ था। इन टाइगर्स द्वारा 5 मवेशियों का शिकार किया गया था। टाइगर के विचरण के कारण ग्रामीण असुरक्षित महसूस कर रहे थे। टाइगर्स का खेतों में विचरण होने से ग्रामीण फसलें नहीं काट पा रहे थे। खेतों एवं वन क्षेत्र के मध्य से जो रास्ता निकलता है, वह ग्रामीणों का मुख्य मार्ग है, जिससे ग्रामीणों का भोजपुर, मण्डीदीप और बंगरसिया आना-जाना लगा रहता है। कुछ ग्रामीण मण्डीदीप फैक्ट्रियों में नौकरी करने भी जाते हैं। वन विभाग से ग्रामवासी लगातार टाइगर्स के रेस्क्यू की माँग कर रहे थे। उन्होंने सीएम हेल्पलाइन पोर्टल पर भी टाइगर के मूवमेंट के संबंध में लिखा था। ग्रामीणों की माँग को दृष्टिगत रखते हुए वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने दोनों टाइगर्स को रेस्क्यू करने का निर्णय लिया।

एमपी में अगले 4 दिन ओले-बारिश

बड़वानी, खरगोन-खंडवा में आज ओले गिरेंगे

भोपाल (नप्र)। ओले-बारिश और आंधी का स्ट्रॉन्ग सिस्टम एक्टिव होने से मध्यप्रदेश में अगले 4 दिन मौसम बदला रहेगा। कहीं ओले गिरेंगे तो कहीं 40 से 50 किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से आंधी चलेगी। मंगलवार को बड़वानी, खरगोन और खंडवा में ओले गिर सकते हैं, जबकि सीहोर, रायसेन, सागर, नरसिंहपुर, नर्मदापुरम, सिवनी, बालाघाट, पांढुर्णा, बैतूल, हरदा और बुरहानपुर में तेज आंधी का अलर्ट है।

मौसम विभाग के अनुसार, बदले मौसम का असर पूरे प्रदेश में ही देखने को मिलेगा। जिससे दिन के तापमान में भी गिरावट होगी। यानी, अप्रैल के पहले सप्ताह में तेज गर्मी की बजाय बारिश, ओले का असर देखने को मिलेगा।भोपाल में सोमवार को बादल छाए रहे। इससे दिन के तापमान में गिरावट दर्ज की गई है।

इसलिए ऐसा मौसम- सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया, एक टर्फ दक्षिण छत्तीसगढ़ से विदर्भ होते हुए मध्य महाराष्ट्र तक गुजर रहा है। वहीं, यहां से साइक्लोनिक सर्कुलेशन भी गुजर रहा है। इस वजह से प्रदेश में मौसम बदलेगा। शुरुआत में दक्षिणी हिस्से में मौसम में बदलाव देखने को मिलेगा। फिर प्रदेश के ज्यादातर हिस्सों में बारिश, आंधी और गरज-चमक की स्थिति बनी रहेगी।

अवधपुरी में शराब दुकान का विरोध

24 घंटे का अखंड रामायण पाठ कर रहे रहवासी ; मालवीय नगर में लोगों को राहत मिलेगी

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में शराब दुकानों का विरोध हो रहा है। प्रतिबंधित इलाकों से शराब दुकानों को दूसरी जगह शिफ्ट किया जा रहा है। भोपाल में भी मंगलवार को विरोध हो रहा है। अवधपुरी में ऋषिपुरम तिराहे पर शराब दुकान खुलने के विरोध में रहवासी 24 घंटे का अखंड रामायण पाठ कर रहे हैं। वे कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह से भी मिलेंगे। इधर, मालवीय नगर में रहवासियों को राहत मिल सकती है।

प्रदर्शन कर रहे रमण तिवारी ने बताया, सोमवार की पूरी रात रामायण का अखंड पाठ चला। मंगलवार को भी 50 से अधिक लोग पाठ में शामिल हुए। ताकि, दुकान खोलने वालों को सद्बुद्धि मिले और वह दुकान को कहीं दूसरी जगह शिफ्ट कर लें। वहीं, कलेक्टर से भी मिलेंगे।

इसलिए कर रहे विरोध- रहवासियों का कहना है, जिस जगह दुकान खुल रही है, उससे 50 मीटर के दायरे में ही मंदिर, स्कूल, अस्पताल और बस स्टॉप

भी है। बावजूद यहां शराब दुकान खोली जा रही है। इसे लेकर वे प्रदर्शन कर रहे हैं। वे मंत्री कृष्णा गौर से भी मिलने पहुंचे थे।

अवधपुरी में शराब दुकान का विरोध, रहवासियों ने दी आंदोलन की चेतावनी- अवधपुरी की निवासी अनीता सिंह ने बताया कि प्रगति नगर में शराब की दुकान खोले जाने की योजना है, जिसका स्थानीय लोग विरोध कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जिस स्थान पर दुकान खोली जा रही है, वहां से महज दस कदम की दूरी पर स्कूल, बस स्टॉप, अस्पताल और मंदिर स्थित हैं। कॉलोनी के मुख्य गेट के सामने शराब दुकान खोलना पूरी तरह अनुचित है, और हम इसे किसी भी कीमत पर नहीं बनने देंगे।

रहवासियों ने इस मुद्दे पर कलेक्टर से मुलाकात कर अपनी आपत्ति दर्ज कराने का निर्णय लिया है। यदि इसके बावजूद कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई, तो हम सड़क पर उतरकर चक्का जाम करेंगे और विरोध प्रदर्शन जारी रहेगा।

मालवीय नगर में दूसरी जगह शिफ्ट होगी दुकान

वार्ड नंबर-34 स्थित मालवीय नगर में नई शराब दुकान खुल रही है। इसके पास ही विधायक रेस्ट हाउस, बिड़ला मंदिर भी है। वहीं, घना रहवासी इलाका भी है। इसके चलते लोग विरोध कर रहे हैं। दो दिन पहले कई महिलाएं सड़क पर उतर आई थी। काले झंडे लेकर उन्होंने दुकान के सामने प्रदर्शन भी किया था। वहीं, सोमवार को वे महापौर मालती राय से भी मिलने पहुंचीं और दुकान न खोले जाने की मांग की। बताया जाता है कि ये दुकान पुरानी जगह पर ही लगेगी। ऐसे में रहवासियों को राहत मिल सकती है।

बावड़ियाकलां में अस्पताल से सिर्फ 50 मीटर दूर खुल रही

बावड़ियाकलां चौक में शराब दुकान खोलने के विरोध में गुरुवार को ही लोग सड़क पर उतर आए थे। उनका कहना था कि जिस जगह दुकान खोली जा रही है, उससे सिर्फ 50 मीटर दूर ही अस्पताल और रहवासी इलाका है। वहीं, मंदिर होने से लोगों की धार्मिक भावनाएं आहत हो रही है।

पूर्व कॉन्स्टेबल सौरभ शर्मा को जमानत, लेकिन जेल में ही रहेगा

भोपाल (नप्र)। आरटीओ के पूर्व कॉन्स्टेबल सौरभ शर्मा को 62 दिन बाद विशेष न्यायाधीश आरपी मिश्रा की कोर्ट से लोकायुक्त केस में जमानत मिल गई है। 28 जनवरी को उसे गिरफ्तार किया गया था। उस पर आए से अधिक संपत्ति होने के आरोप हैं। लोकायुक्त ने 19 दिसंबर 2024 को उसके घर और जयपुरिया स्कूल की निर्माणाधीन बिल्डिंग में छापा मारा था। दोनों स्थानों से टीम को 50 लाख रुपए से अधिक के जेवरात, लाखों रुपए की नकदी और की 234 चांदी सिल्लियां मिली थी। ये सिल्लियां उसने अपने ऑफिस में बोरे और झोलों में बंद कर छिपा रखी थी। सौरभ शर्मा ने जयपुरिया स्कूल के ग्राउंड फ्लोर पर अपना ऑफिस बना रखा था। इसी ऑफिस में 500 से ज्यादा दस्तावेज मिले थे। ज्यादातर दस्तावेज प्रॉपर्टी संबंधी हैं। जिसमें एग्रीमेंट सहित बैंक पासबुक, चेक और वसीयत नामे मौजूद थे।

वकील ने की जमानत की पुष्टि

सौरभ के वकील राकेश पराशर ने बताया कि सौरभ को आय से अधिक संपत्ति मामले में लोकायुक्त कोर्ट से जमानत मिल गई है। मंगलवार की शाम को यह आदेश विशेष न्यायाधीश आरपी मिश्रा की कोर्ट ने यह आदेश जारी किए हैं। हालांकि सौरभ की फिलहाल रिहाई नहीं होगी। ईडी कोर्ट से जमानत मिलने के बाद ही उसकी रिहाई हो सकेगी।

ईओडब्ल्यू ने पूर्व आईएफएस ललित मोहन बेलवाल के खिलाफ केस दर्ज किया, इकबाल सिंह बैंस के है करीबी

भोपाल (नप्र)। आर्थिक अपराध अन्वेषण ब्यूरो (ईओडब्ल्यू) ने पूर्व आईएफएस अधिकारी ललित मोहन बेलवाल के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की। उन पर राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन में अवैधानिक नियुक्तियों और गबन का आरोप है। बेलवाल पूर्व मुख्य सचिव इकबाल सिंह बैंस के करीबी है।

राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन (एसजीआरबाय) में अवैध नियुक्तियों और वित्तीय गबन के आरोपों में पूर्व आईएफएस अधिकारी और तत्कालीन मुख्य (ईओडब्ल्यू) कार्यपालन अधिकारी ललित मोहन बेलवाल के खिलाफ आर्थिक अपराध शाखा में प्राथमिकी दर्ज की गई है। ईओडब्ल्यू की तरफ से बताया गया कि भोपाल निवासी राजेश कुमार मिश्रा और न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी सीजेएम भोपाल के निर्देश पर कार्रवाई की गई है। शिकायत कर्ता ने तत्कालीन अपर मुख्य कार्यपालन अधिकारी मध्य प्रदेश राज्य रोजगार गारंटी परिषद नेहा मारव्या की रिपोर्ट भी शिकायत के साथ प्रस्तुत की है। बता दें ललित मोहन बेलवाल पूर्व मुख्य सचिव इकबाल सिंह बैंस के करीबी है।

बेलवाल ने अपने पद का दुरूपयोग किया - नेहा मारव्या ने पंचायत एवं ग्रामीण विकास के प्रमुख सचिव को 8 जून 2022 को जांच प्रतिवेदन भेजा था। इस प्रतिवेदन में उन्होंने यह पाया था कि ललित मोहन बेलवाल ने प्रतिनियुक्ति के समय वर्ष 2015 से 2023 के बीच अपने पद का दुरूपयोग करते हुए राज्य परियोजना प्रबंधक के पदों पर सलाहकारों की अवैध नियुक्तियां की गई। बेलवाल ने विभाग के सचिव के निर्देशों को दर किनार करते हुए संबंध नस्तियों में छेड़छाड़ करते हुए तत्कालीन विभागीय मंत्री की आपत्तियों को भी नजरअंदाज करते हुए यह नियुक्तियां की। मारव्या की जांच रिपोर्ट के अनुसार नियुक्ति में जिस मानव संसाधन मार्गदर्शिका के नियमों के आधार पर स्वीकृत पदों के विरूद्ध बेलवाल ने नियुक्तियां की गई है, वह मानव संसाधन मार्गदर्शिका तब अस्तित्व में नहीं थी।

रिश्वत कांड में फरार प्रधान आरक्षक की जमानत मंजूर

आरोपियों को बचाने 25 लाख की डील करने के आरोप थे, हाईकोर्ट से मिली राहत

भोपाल (नप्र)। भोपाल में ऐशबाग थाने के जिस एएसआई को 5 लाख रुपए की रिश्वत लेते पकड़ा गया था, उसने साइबर ठगी के 3 आरोपियों को बचाने के लिए 25 लाख की मांग की थी। एएसआई पवन रघुवंशी का कहना था कि इसमें थाना प्रभारी जितेंद्र गढ़वाल, एएसआई मनोज सिंह, हेड कॉन्स्टेबल धर्मेंद्र सिंह समेत अन्य शामिल हैं। मंगलवार को केस के फरार आरोपी प्रधान आरक्षक धर्मेंद्र सिंह को भी हाईकोर्ट जबलपुर से जमानत मिल गई है। इससे पहले टीआई को भी हाईकोर्ट से ही जमानत मिली थी।

एएसआई पवन रघुवंशी के बयानों के आधार पर हुई थी कार्रवाई- रघुवंशी द्वारा पुलिस को दिए बयानों के मुताबिक, मामले में मुख्य आरोपी अफजल खान के साले मुईन खान, उसके भाई वसीम खान और अफजल की पत्नी जाहिदा को आरोपी न बनाने के लिए रिश्वत मांगी गई थी। टीआई जितेंद्र गढ़वाल के कहने पर पवन और साथी एएसआई मनोज सिंह, प्रधान आरक्षक धर्मेंद्र सिंह ने पूरी डील की थी।

जिसकी पहली किश्त के तौर पर 4.94 लाख रुपए पवन ने अपने घर पर फरार पार्षद अंशुल उर्फ मोना जैन से लिए थे। इस रकम को एसीपी सुरभी मीणा और उनकी टीम ने पवन के घर से जब्त किया था। पूरी कार्रवाई को पांच मार्च को अंजाम दिया गया था।

ठगी की रकम को साले के माध्यम से इन्वेस्ट करता था सरगना- ठगी के इस रैकेट से कमाए करोड़ों रुपए अफजल खान ने अपने साले मुईन के नाम से टीकमगढ़ में निवेश कर रखे हैं। इस काली कमाई से मुईन खान क्रशर प्लांट से लेकर कई कॉलोनियों का निर्माण कर चुका है। 4 साल पहले तक एक कुरियर कंपनी में काम करने वाला मुईन अब टीकमगढ़ के रसूखदार बिल्डरों में गिना जाता है।

युवा संसद में वक्ताओं के सिलेक्शन की पीएमओ में शिकायत

जिसे चुना वो 3 मिनट की स्पीच भी नहीं दे पाई, विभाग का तर्क- टोटल करने में चूक हुई

भोपाल (नप्र)। बीते 26 और 27 मार्च को भोपाल में विधानसभा के मानसरोवर सभागार में राज्य स्तरीय युवा संसद का आयोजन हुआ। इस युवा संसद में तीन छात्राओं को राष्ट्रीय स्तर के लिए चुना गया। ये तीनों छात्राएं अब संसद में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मिलेंगी और संसद के सेंट्रल हॉल में इन्हें भाषण देने का मौका मिलेगा। मप्र की राज्य स्तरीय युवा संसद से राष्ट्रीय स्तर के लिए तीसरे नंबर पर चुनी गई छात्रा राशि त्रिपाठी के चयन को लेकर प्रधानमंत्री कार्यालय के पीजी पोर्टल पर शिकायत की गई है। इसके साथ ही नेहरू युवा केन्द्र के राज्य निदेशक को भी शिकायत की गई है।

थर्ड रैंक पर चुनी गई छात्रा 3 मिनट की स्पीच पूरी नहीं कर पाई- हाईकोर्ट के वकील और आरटीआई एक्टिविस्ट भूपेन्द्र सिंह सिसोदिया ने केन्द्र सरकार के पीजी पोर्टल पर की गई शिकायत में लिखा- केन्द्रीय खेल एवं युवा कल्याण मंत्रालय और नेहरू युवा केन्द्र व राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा मप्र विधानसभा के

मानसरोवर सभागार में 26 और 27 मार्च को राज्य स्तरीय युवा संसद का आयोजन किया गया। जिसमें पूरे मप्र के 180 प्रतिभागी शामिल हुए थे। इनमें से 3 प्रतिभागियों को राष्ट्रीय स्तर के लिए चयनित किया गया। तीसरे नंबर पर जिस छात्रा का चयन हुआ वह अपना भाषण पूरा भी नहीं कर पाई। भाषण के अंत में वह रुक गई। निर्णायक मंडल ने दोषपूर्ण चयन किया है।

शिकायत में ये मुद्दे उठाए- जब सभी प्रतिभागियों द्वारा जो मूल्यांकन प्रपत्र जिसमे उन्हें अंक दिए गए हुए वो मूल्यांकन शीट भी अभी तक उपलब्ध नहीं करवाई गई। जिससे प्रतियोगिता की पारदर्शिता पता चले। जिस प्रतिभागी का राष्ट्रीय स्तर पर मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व करने के लिए तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। वो भाषण देते हुए मिनट 1.56 सेकंड पर अटक गई। आगे अपना भाषण पूरा ही नहीं कर पाई। फिर उसका तृतीय स्थान प्राप्त करना संदेह जनक है। यह सभी 180 प्रतिभागियों का कहना है।

राशि त्रिपाठी (तृतीय स्थान प्राप्त प्रतिभागी)के वक्तव्य की पहली लाइन से ही बाबा साहब का जिस तरह से अपमान किया। उन्होंने कहा क्योंकि, आज बाबासाहेब पूजनीय हैं उनके लिए इस तरह के शब्द इस्तेमाल करना बिना नाम लिए एजेंडा से प्रेरित है। युवा संसद की ज्यूरी में सीधी विधायक रीति पाठक, खातेगांव विधायक अशीष शर्मा शामिल थे।

अधिकारी का तर्क- टोटल में ज्यूरी से गलती हो गई थी

नेहरू युवा केन्द्र के राज्य निदेशक राकेश सिंह तोमर ने शिकायत को लेकर मीडिया से फोन पर कहा- निर्णायक मंडल से अंकों का टोटल करने में गलती हो गई थी। उसे बाद में सुधार लिया गया है। जिस छात्रा के सर्वाधिक अंक थे अब उसका नाम दर्ज किया गया है। पहले राशि त्रिपाठी का चयन हुआ था सुधार के बाद इंदौर की साक्षी यादव का नाम जोड़ा गया है। सतना की राशि त्रिपाठी का तीसरे नंबर पर चयन किया गया था। वो तीन मिनट का भाषण भी नहीं दे पाई थीं।

शिकायतकर्ता बोले- जिसका नाम बदलकर जोड़ा वो भी मेरिट लिस्ट में नहीं

सतना से राशि त्रिपाठी की जगह इंदौर की साक्षी यादव का नाम जोड़ने को लेकर भी शिकायतकर्ता ने आपत्ति जताई है। भूपेन्द्र सिंह सिसोदिया का कहना है कि साक्षी का नाम भी मेरिट लिस्ट में नहीं था। साक्षी को सांत्वना पुरुस्कार भी नहीं मिला था।

संपादकीय

मोदी की संघ यात्रा के मायने

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा इस पद पर कार्यरत होने के 11 साल बाद उनकी मातृ संस्था नागपुर स्थित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुख्यालय की यात्रा चर्चा का विषय बननी ही थी। इसके लोगों ने अलग-अलग अर्थ निकाले। जबकि संघ के अनुसार उनकी यह सामान्य यात्रा थी। दरअसल मोदी भले ही संघ की वैचारिक फैक्ट्री के एक योग्य उत्पाद हों, लेकिन बीते 11 साल में उन्होंने अपनी एक स्वतंत्र छवि बनाने में भी कामयाबी पाई है। समाज यह वो वर्ग है, जो मोदी में कट्टर हिंदूवादी के साथ-साथ साहसिक फैसले लेने वाला व्यक्तित्व भी बूझता है। इसमें कितनी सच्चाई है, इस पर बहस हो सकती है, लेकिन इसमें दो राय नहीं कि जितने मोदी के आलोचक हैं, उससे कई गुना ज्यादा उनके समर्थक और फालोअर है। एक दमदार पीएम होने की अपनी छवि मोदी ने खुद गढ़ी है और इसे निर्मित करने में संघ का भी बड़ा हाथ रहा है। लेकिन दो चुनाव जीतने के बाद शायद मोदी को लगने लगा था कि उनका व्यक्तित्व 'लार्जर देन लाइफ' बनता जा रहा है और वो अपने दम पर ही भाजपा को तीसरा लोकसभा चुनाव जिता सकते हैं। अब उन्हें अपनी मातृ संस्था आरएसएस की कोई जरूरत नहीं है। इस बात का अहसास 2024 के लोकसभा के पूर्व और दौरान हुआ, जब मोदी ने संसद में 'अबकी बार चार सौ पार' का अतिरंजित नारा दिया। यही नहीं चुनाव के दौरान भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी.नड्डा से यह भी कहलवाया गया कि भाजपा अब अपने दम पर चुनाव जीतने में सक्षम है। इस बड़बोलेपन का नतीजा यह हुआ कि पिछले लोस चुनाव में संघ ने हाथ खींच लिए और भाजपा घटकर 240 पर आ गई। जाहिर है कि संघ यह कभी नहीं चाहेगा कि उसकी ताकत और संकल्पशक्ति को कोई कम आंके, फिर चाहे वो देश का प्रधानमंत्री ही क्यों न हो। लोस चुनाव नतीजों के बाद भाजपा को फिर संघ की याद आई और राज्यों के विधानसभा चुनाव जीतने के लिए पुनः आरएसएस के सामने मदद के लिए झोली फैलाई। संघ ने बड़ा दिल दिखाते हुए मदद की और राज्यों भाजपा की जीत का सिलसिला फिर शुरू हो गया। इन परिस्थितियों में मोदी का संघ मुख्यालय जाना 'संघम् शरणम् गच्छामि' के रूप में देखा गया। मोदी ने भी संघ की खुलकर तारीफ की और कहा कि आरएसएस अमर संस्कृति का वट वृक्ष है। हम देव से देश, राम से राष्ट्र का मंत्र लेकर चल रहे हैं। बताया जाता है कि संघ प्रमुख के साथ मोदी की कुछ अहम मुद्दों पर चर्चा भी हुई, जिनमें भाजपा के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव भी शामिल है। सियासी हल्कों में इस बात को लेकर तूफान आ गया कि मोदी संघ की शरण में गए क्यों? एक दलील यह दी जा रही है कि चूंकि मोदी इसी साल 75 के होने जा रहे हैं, और खुद मोदी ने एक समय में इस आयु के इस आंकड़े को नेताओं की रिटायरमेंट एज माना था, अब वही फार्मूला उन पर भी लागू होगा या नहीं? यानी मोदी रिटायर होंगे या नहीं? होंगे तो उनका उत्तराधिकारी कौन होगा? शिवसेना (उद्धव) के संजय राउत ने तो कटाक्ष किया कि मोदी अपने रिटायरमेंट प्लान पर चर्चा करने के लिए नागपुर गए हैं। राउत ने यह सुर्री भी छोड़ी कि मोदी के उत्तराधिकारी महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस हो सकते हैं। उधर फडणवीस ने इस अफवाह का यह कहकर खंडन किया कि पिता (मोदी) के जिंदा रहते उसके उत्तराधिकारी के बारे में चर्चा नहीं की जाती। अगर मोदी रिटायर नहीं हो रहे हैं तो फिर वो संघ कार्यालय क्यों गए? इसका ठीक-ठीक खुलासा शायद न भी हो, लेकिन मोदी और संघ में दूरियां खत्म हुई यह जरूर मानना चाहिए।

जोखिम से परे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की संभावना

नजरिया

अमित बैजनाथ गर्ग

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में एक बार फिर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि एआई के क्षेत्र में देश तेजी से अपनी पहचान बना रहा है। एआई के क्षेत्र में युवा तेजी से आगे बढ़ रहे हैं और नई ऊंचाइयों को छू रहे हैं। उन्होंने पेरिस के दौरे का जिक्र करते हुए कहा कि मैं एआई के सम्मेलन में भाग लेने के लिए वहां गया था। इस दौरान दुनिया ने इस सेक्टर में भारत की प्रगति की जमकर सराहना की। असल में एआई को लेकर कहा जा रहा है कि इससे नौकरियां खत्म होंगी, लेकिन यह पूरा सच नहीं है। यह बात कुछ हद तक ठीक है कि इससे रोजगार जाएंगे, लेकिन कुछ क्षेत्रों में ही ऐसा होगा और वह भी काफी कम मात्रा में। इसके उलट एआई से कई सेक्टरों में नई नौकरियां भी पैदा होंगी। कई सेक्टरों में काम करने का तरीका बदलेगा, तो वहीं लोगों को तकनीक के मामले में अधिक दक्ष भी होना पड़ेगा।

एआई का अर्थ है मशीन या कंप्यूटर को इंटेलिजेंट (बुद्धिमान) बनाना। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का आरंभ 1950 के दशक में ही हो गया था, लेकिन इसकी महत्ता को 1970 के दशक में पहचान मिली। सबसे पहले जापान ने इस ओर पहल की और 1981 में फिफ्थ जेनरेशन नामक योजना की शुरुआत की थी। इसमें सुपर-कंप्यूटर के विकास के लिए दस वर्षीय कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की गई थी। इसके बाद अन्य देशों ने भी इस ओर ध्यान दिया। ब्रिटेन ने इसके लिए एल्वी नाम का एक प्रोजेक्ट बनाया। यूरोपीय संघ के देशों ने भी एस्प्रिट नाम से एक कार्यक्रम की शुरुआत की थी। इसके बाद 1983 में कुछ निजी संस्थाओं ने मिलकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर लागू होने वाली उन्नत तकनीकों का विकास करने के लिए एक संघ की स्थापना की। हाल ही में एक्सेंचर ने एआई रिसर्च रिपोर्ट में जी-20 के कुछ देशों के लिए एआई के आर्थिक प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए एक ढांचा प्रदान कर एआई के माध्यम से भारत की वार्षिक वृद्धि दर को 2035 तक 1.3 प्रतिशत अंक तक बढ़ने का अनुमान लगाया है।

हाल के दिनों में एआई का इस्तेमाल बढ़ा है। कहा जा रहा है कि भविष्य में इसके द्वारा उन सभी कार्यों को किया जा सकेगा, जो एक इंसान करता है। इसके जरिए कंप्यूटर सिस्टम या रोबोटिक सिस्टम तैयार किया जाता है, जिसे उन्हीं तर्कों के आधार पर चलाने का प्रयास किया जाता है, जिसके आधार पर मानव मस्तिष्क काम करता है। इस बात में कोई दोराय नहीं है कि एआई से हमारे रहने और कार्य करने के तरीकों में व्यापक बदलाव आएगा। रोबोटिक्स और वर्चुअल रियलिटी जैसी तकनीकों से उत्पादन और निर्माण के तरीकों में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलेंगे। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के एक अध्ययन में बताया गया है कि केवल अमेरिका में अगले दो दशकों में डेढ़ लाख रोजगार खत्म हो सकते हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस युक्त मशीनों के जितने फायदे हैं, उतने ही खतरे भी हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि सोचने-समझने वाले रोबोट अगर किसी कारण या परिस्थिति में मनुष्य को अपना दुश्मन मानने लगे, तो मानवता के लिए खतरा पैदा हो सकता है। सभी मशीनें और हथियार बगावत कर सकते हैं। ऐसी स्थिति की कल्पना हॉलीवुड की मशहूर फिल्म टर्मिनेटर में की गई है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में वैश्विक स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक वृद्धिशील मूल्य प्रदान करने की क्षमता है और इसमें प्रतिस्पर्धी लाभ हासिल होने की संभावना है। एआई का प्रयोग होने के बाद यह समझना बहुत आसान हो जाएगा कि किसी कार्य क्षेत्र में बुद्धिमान मशीनों का कुशलता से उपयोग किया जा सकता है। इससे सफलता हासिल करना भी आसान होता चला जाएगा। दरअसल आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक जटिल विषय है। अतः सबसे पहले इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही प्रभावों के संबंध में एक गंभीर अध्ययन करना होगा। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को लेकर सरकार को सतर्क रहना होगा। मशीनीकरण के माध्यम से आए परिवर्तनों से सर्वाधिक प्रभावित वे समूह होते हैं, जो अपनी कौशल क्षमता में निश्चित समय-सीमा के भीतर वांछनीय सुधार लाने में असमर्थ होते हैं। अतः सरकार को चाहिए कि ऐसे लोगों को पर्याप्त प्रशिक्षण देने के लिए समय के साथ-साथ संसाधन भी उपलब्ध कराए। तकनीकों के इस बदलते दौर में जरूरत इस बात की है कि विशेषज्ञ पूर्ण कार्यों के लिए लोगों को कौशल प्रशिक्षण दिया जाए और इसके लिए अवसंरचना का भी विकास किया जाए।

कुछ विषय विशेषज्ञों का कहना है कि एआई का उदय नई नौकरी की भूमिकाएं भी पैदा कर रहा है, जैसे कि स्वास्थ्य सेवा में स्वास्थ्य डाटा पेशेवर और कृषि में कृषि प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ। ये उभरती हुई भूमिकाएं दर्शाती हैं कि कैसे एआई क्षेत्रों को बदल रहा है और गैर-पारंपरिक क्षेत्रों में पेशेवरों के लिए अवसर पैदा कर रहा है। इसके अलावा एआई संचालित ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म छोटे व्यवसायों को वैश्विक बाजारों तक पहुंचाने और अपनी पहुंच का विस्तार करने में सक्षम बना रहे हैं। उनका मानना है कि प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए लीडर अपने कर्मचारियों को एआई तकनीकों में कुशल बनाने, कौशल अंतर को कम करने और अपने संगठनों को भविष्य की सफलता के लिए तैयार करने में निवेश कर रहे हैं। व्यवसायों को बदलने की एआई की क्षमता उन प्रयासों में स्पष्ट है, जो कंपनियां अपने संचालन में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करने के लिए कर रही हैं। निरंतर सीखने की संस्कृति को बढ़ावा देने से लेकर चुस्त टीमों को विकसित करने तक के लिए व्यवसाय एआई-संचालित कार्य के भविष्य की तैयारी कर रहे हैं।

जहां तक भारत की बात है, तो हाल ही में पेरिस में आयोजित एआई एक्शन समिट में प्रधानमंत्री मोदी के अभिभाषण के बाद लोक कल्याण और राष्ट्रीय विकास में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का उन्नयन करने में भारत की प्रगति ने पूरी दुनिया का ध्यान आकर्षित किया है। भारत नीतिपरक एआई प्रथाओं को बढ़ावा देने, आधारभूत मॉडल विकसित करने और डाटा एक्सेस में सुधार करने में महत्वपूर्ण प्रगति कर रहा है। एआई में इसके प्रयासों को प्रौद्योगिकी में वैश्विक सहयोग और सामाजिक चुनौतियों का समाधान करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है। भारत 10,372 करोड़ रुपए के बजट के साथ एआई मिशन के माध्यम से अपने एआई इको सिस्टम का विकास कर रहा है। इस मिशन के अंतर्गत एआई विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सात प्रमुख स्तंभों पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जिसमें ग्राफिक प्रोसेसिंग यूनिट्स तक पहुंच में सुधार, एआई-रेडी डाटा सेट विकसित करना और एआई एप्लिकेशन विकास का समर्थन करना शामिल है। भारत एआई मिशन के अंतर्गत डाटा लैब स्थापित कर कुशल कार्यबल का निर्माण करने पर भी ध्यान केंद्रित कर रहा है। इससे संबंधित नौकरियों की बढ़ती मांग को पूरा करने के उद्देश्य से युवाओं को डाटा वैज्ञानिक और इनोवेटर के रूप में प्रशिक्षित किया जा सकेगा।

वैश्विक जेनरेटिव एआई बाजार में आने वाले वर्षों में व्यापक वृद्धि का अनुमान है, जहां वर्ष 2021 से 2028 तक 45 प्रतिशत चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर दर्ज की जा सकती है। गिटहब की एक रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिका में अधिकांश डवलपर्स ने एआई कोडिंग टूल को अपना लिया है और उन्हें पेशेवर एवं व्यक्तिगत, दोनों रूपों में अपने कार्यों में एकीकृत किया है। अमेरिका में कार्यरत 92 प्रतिशत प्रोग्रामर्स अब अपनी कोडिंग क्षमताओं की पूरकता के लिए एआई का लाभ उठा रहे हैं। असल में देश में अब एक स्पष्ट परिभाषित राष्ट्रीय एआई रणनीति का विकास करना बहुत जरूरी है। इसमें सरकारी एजेंसियों, उद्योग प्रतिनिधियों, शोधकर्ताओं और नैतिकतावादियों सहित विभिन्न हितधारकों को एक साथ लाना शामिल है। इस रणनीति में एआई विकास, नैतिक दिशा-निर्देशों, नियामक ढांचे और उत्तरदायित्वपूर्ण तैनाती के लिए देश के लक्ष्य स्पष्ट किए जाने की दरकार है। इसे संभावित जोखिमों (जैसे पूर्वाग्रह एवं गोपनीयता संबंधी चिंताओं) और उन्हें संबोधित करने के तरीके पर भी विचार करना होगा। थिंक टैंक और अनुसंधान संस्थान नवाचार को बढ़ावा देने तथा एआई प्रतिभा का पोषण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। सरकार के साथ निजी क्षेत्रों को भी इस दिशा में ध्यान देने और सरकार के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की जरूरत है। जल्द कदम बढ़ाने से जल्द सफलता हासिल की जा सकेगी।

शहरी विकास के लिए एक चेतावनी है म्यांमार का भूकंप

पर्यावरण

प्रमोद भार्गव

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

म्यांमार में आए 7.7 तीव्रता के ताकतवर भूकंप ने 1700 से भी ज्यादा लोगों की जान ले ली और 2500 से भी ज्यादा लोग घायल हैं। भूकंप के प्रभाव में आकर जिस तरह से बहुमंजिला इमारतें ढहीं, सड़कें, पुल और बांध टूटे, बिजली और इंटरनेट सेवाएं ठप हो गईं, यह प्रकृति की एक ऐसी नजीर है, जो बढ़ते शहरीकरण के लिए चेतावनी है। थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक में आए कुछ पलों के झटकों ने ही दुनिया के इस सुंदर शहर को थर्रा दिया। इसी बीच अमेरिका की भूगर्भीय सर्वेक्षण एजेंसी ने आशंका जताई है कि मरने वालों की संख्या 10 हजार से भी अधिक पहुंच सकती है। इस भूकंप के झटके भारत के पूर्वोत्तर राज्यों और पश्चिम बंगाल में भी अनुभव किए गए। चीन, वियतनाम, ताइवान, लाओस और श्रीलंका में भी भूकंप की तरंगें अनुभव की गईं। याद रहे भारत के भुज में 24 साल पहले आया भूकंप भी 7.7 तीव्रता का था, जिसमें 20 हजार लोगों की मौतें हुई थीं और डेढ़ लाख लोग घायल हुए थे। तीन लाख से ज्यादा घरों को नुकसान हुआ था। म्यांमार का भूकंप काफी उथला था। इस भूकंप का केंद्र भूमि के 10 किमी नीचे था। भूकंप के केंद्र वाला म्यांमार का क्षेत्र संवेदनशील क्षेत्र के रूप में पूर्व से ही चिन्हित है। बावजूद यहां आवास और उद्योगों के लिए आलीशान अट्टालिकाएं खड़ी की जा रही हैं। भारतीय और यूरेशियन प्लेटों के टकराने का परिणाम इस भूकंप को माना जा रहा है।

दिल्ली राजधानी क्षेत्र में 17 फरवरी 2025 की सुबह 5.36 बजे रिक्टर स्केल पर चार तीव्रता वाले भूकंप के झटके और धमाकों जैसी अवाजें सुनी गईं थीं। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र के अनुसार भूकंप का केंद्र दिल्ली के धौलाकुआं के झील पार्क क्षेत्र में 5 किमी की गहराई में था। इस कारण इसकी तीव्रता भूगर्भ में ही कमजोर पड़ गई और सतह पर नहीं आने पाई। बिहार में भी भूकंप के झटके अनुभव किए गए। इसका केंद्र धरती की सतह से 10 किमी नीचे था। इसलिए असर केवल अनुभव हुआ। बावजूद भविष्य में भूकंप का यह संकेत दिल्ली के लिए विनाश की चेतावनी है। क्योंकि दिल्ली, हरिद्वार और महेंद्रगढ़ देहरादून के ऐसे पठारनुमा टीले पर बसा हुआ है, जहां से भूकंप की भ्रंश रेखा गुजरती है। अतएव यहां हमेशा भूकंप का खतरा बना रहता है।

यह संकट इसलिए भी है, क्योंकि यमुना नदी के मैदानी क्षेत्र में भूमि की परत नरम है। हालांकि इस भूकंप को विवर्तनिक परत (टेक्टोनिक्स प्लेट) में किसी बदलाव के कारण आना नहीं माना गया था। इसके आने का कारण स्थानीय भूगर्भीय विविधता को माना जा रहा है। याद रहे हिमालय के उत्तरी तलहटी में स्थित चीन के तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र शिगात्से के निकट तिंगरी काउंटी में 7 जनवरी 2025 को 7.1 तीव्रता का भूकंप आया था। इसमें 126 लोग मारे गए थे। पड़ोसी देश नेपाल और भारत में भी इसके झटके महसूस किए गए थे। भूकंप का केंद्र तिंगरी काउंटी में था, जो हिमालय की चोटी माउंट एवरेस्ट क्षेत्र का उत्तरी द्वार माना जाता है। अमेरिकी भूगर्भ सर्वेक्षण ने इस भूकंप की तीव्रता 7.1 आंकी थी। भूकंप से तिब्बत में किसी बांध या जालाशय को हानि नहीं पहुंची थी, गौरतलब है कि भूकंप ने भारतीय सीमा के निकट तिब्बत में ब्रह्मपुत्र नदी पर दुनिया का सबसे बड़ा बांध बनाने की योजना ने भारत और बांग्लादेश को चिंता में डाल दिया है। क्योंकि यह पूरा क्षेत्र भारत और यूरेशियन टेक्टोनिक प्लेटों में टकराव के कारण चीन के दक्षिण-पश्चिम हिस्से नेपाल और उत्तर-भारत में अकसर भूकंप आते रहते हैं।

भूकंप की चेतावनी संबंधी प्रणालियां अनेक देशों में संचालित हैं लेकिन वह भू-गर्भ में हो रही दानवी हलचलों की सटीक जानकारी समय पूर्व देने में लगभग असमर्थ हैं। क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं की जानकारी देने वाले अमेरिका, जापान, भारत, नेपाल, चीन और अन्य देशों में भूकंप आते ही रहते हैं। इसलिए यहां लाख टके का सवाल उठता है कि चांद और मंगल जैसे ग्रहों पर मानव बस्तियां बसाने का सपना और पाताल की गहराइयों को नाप लेने का दावा करने वाले वैज्ञानिक आखिर पृथ्वी के नीचे उत्पात मचा रही हलचलों की जानकारी प्राप्त करने में क्यों असफल हैं ? जबकि वैज्ञानिक इस दिशा में लंबे समय से कार्यरत हैं। अमेरिका एवं भारत समेत अनेक देश मौसम व भूगर्भीय हलचल की जानकारी देने वाले उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित कर चुके हैं।

दरअसल दुनिया के नामचीन विशेषज्ञों व पर्यावरणविदों की मानें तो सभी भूकंप प्राकृतिक नहीं होते, बल्कि उन्हें विकराल बनाने में मानवीय हस्तक्षेप शामिल है। इसीलिए इस भूकंप को स्थानीय भू-गर्भीय विविधता का कारण माना गया है। दरअसल प्राकृतिक संसाधनों के अकूत दोहन और फिर शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के लिए शैतानी निर्माण से छोटे स्तर के भूकंपों की पृष्ठभूमि तैयार हो रही है। भविष्य में इन्हीं भूकंपों की व्यापकता और विकरालता बढ़ जाती है। यही कारण है कि भूकंपों की आवृत्ति बढ़ रही है। पहले 13 सालों में एक बार भूकंप आने की आशंका बनी रहती थी, लेकिन अब यह घटकर 4 साल हो गई है। यही नहीं आए भूकंपों का वैज्ञानिक आकलन करने से यह भी पता चला है कि भूकंपीय विस्फोट में जो ऊर्जा निकलती है, उसकी मात्रा भी पहले की तुलना में ज्यादा शक्तिशाली हुई है। 25 अप्रैल 2015 को नेपाल में जो भूकंप आया था, उनसे 20 थर्मोन्यूक्लियर हाइड्रोजन बमों के बराबर ऊर्जा निकली थी। यहां हुआ प्रत्येक विस्फोट हिरोशिमा-नागासाकी में गिराए गए परमाणु बमों से भी कई गुना ज्यादा ताकतवर था। जापान और फिर क्वोटो में आए सिलसिलेवार भूकंपों से पता चला है कि धरती के गर्भ में अंगड़ाई ले रही भूकंपीय हलचलें महानगरीय आधुनिक विकास और आबादी के लिए अधिक खतरनाक साबित हो रही हैं। ये हलचलें भारत, पाकिस्तान, चीन और बांग्लादेश की धरती के नीचे भी अंगड़ाई ले रही हैं। इसलिए इन देशों के महानगर भूकंप के मुहाने पर खड़े हैं।

वैज्ञानिकों का मानना है कि रासायनिक क्रियाओं के कारण भी भूकंप आते हैं। भूकंपों की उत्पत्ति धरती की सतह से 30 से 100 किमी भीतर होती है। इससे यह वैज्ञानिक धारणा भी बदल रही है कि भूकंप की विनाशकारी तरंगें जमीन से कम से कम 30 किमी नीचे से चलती हैं। ये तरंगे जितनी कम गहराई से उठेंगी, उतनी तबाही भी ज्यादा होगी और भूकंप का प्रभाव भी कहीं अधिक बड़े क्षेत्र में दिखाई देगा। लगता है अब कम गहराई के भूकंपों का दौर चल पड़ा है। मैक्सिको में सितंबर 2017 में आया भूकंप धरती की सतह से महज 40 किमी नीचे से उठा था। इसलिए इसने भयंकर तबाही का तांडव रचा था। तिब्बत में आए भूकंप की गहराई तो मात्र 10 किमी आंकी गई है।

दरअसल सतह के नीचे धरती की परत ठंडी होने व कम दबाव के कारण कमजोर पड़ जाती है। ऐसी स्थिति में जब चट्टानें दरकती हैं तो भूकंप आता है। कुछ भूकंप धरती की सतह से 100 से 650 किमी के नीचे से भी आते हैं, लेकिन तीव्रता धरती की सतह पर आते-आते कम हो जाती है, इसलिए बड़े रूप में त्रासदी नहीं झेलनी पड़ती। दरअसल इतनी गहराई में धरती इतनी गर्म होती है कि एक तरह से वह द्रव रूप में बदल जाती है। इसलिए इसके झटकों का असर धरती पर कम ही दिखाई देता है। बावजूद इन भूकंपों से ऊर्जा बड़ी मात्रा में निकलती है। धरती की इतनी गहराई से प्रगट हुआ सबसे बड़ा भूकंप 1994 में बोलिविया में रिकॉर्ड किया गया है। पृथ्वी की सतह से 600 किमी भीतर दर्ज इस भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 8.3 मापी गई थी। इसीलिए यह मान्यता बनी है कि इतनी गहराई से चले भूकंप धरती पर तबाही मचाने में कामयाब नहीं हो सकते हैं, क्योंकि चट्टानें तरल द्रव्य के रूप में बदल जाती हैं।

प्राकृतिक आपदाएं अब व्यापक व विनाशकारी साबित हो रही हैं, क्योंकि धरती के बढ़ते तापमान के कारण वायुमंडल भी परिवर्तित हो रहा है। अमेरिका व ब्रिटेन समेत यूरोपीय देशों में दो शताब्दियों के भीतर बेतहाशा अमीरी बढ़ी है। औद्योगिकीकरण और शहरीकरण इसी अमीरी की उपज है। यह कथित विकासवादी अवधारणा कुछ और नहीं, प्राकृतिक संपदा का अंधाधुंध दोहन कर, पृथ्वी को खोखला करने के ऐसे उपाय हैं, जो ब्रह्मांड में फैले अवयवों में असंतुलन बढ़ा रहे हैं। इस विकास के लिए पानी, गैस, खनिज, इस्पात, ईंधन और लकड़ी जरूरी हैं। नतीजतन जो कॉर्बन गैसें बेहद न्यूनतम मात्रा में बनती थीं, वे अब अधिकतम मात्रा में बनने लगी हैं। न्यूनतम मात्रा में बनी गैसों का शोषण और समायोजन भी प्राकृतिक रूप से हो जाता था, किंतु अब वनों का विनाश कर दिए जाने के कारण ऐसा नहीं हो पा रहा है, जिसकी वजह से वायुमंडल में इकतरफा दबाव बढ़ रहा है। इस कारण धरती पर पड़ने वाली सूरज की गर्मी प्रत्यावर्तित होने की बजाय, धरती में ही समाने लगी है। गोया, धरती का तापमान बढ़ने लगा, जो जलवायु परिवर्तन का कारण तो बना ही, प्राकृतिक आपदाओं का कारण भी बन रहा है। ऐसे में सीमेंट, लोहा और कांक्रीट के भवन जब गिरते हैं, तो मानव त्रासदी ज्यादा होती है। जैसे कि हमें अमेरिका के लॉस एंजीलिस शहर में लगी आग में देखने में आ रहा है।

माधव नेत्रालय

डॉ. भूपेन्द्र कुमार

स्तंभ लेखक

स्वयंसेवक की भावांजलि

प्रधानमंत्री मोदी जी की यात्रा में बुनियादी ढांचे और स्वास्थ्य सेवा को मजबूत करने के उद्देश्य से महत्वपूर्ण परियोजनाओं का उद्घाटन शामिल था। उन्होंने माधव नेत्रालय प्रीमियम सेंटर के विस्तार की आधारशिला रखी, जो डॉ. गोलवलकर की स्मृति में 2014 में स्थापित एक सुपर-स्पेशियलिटी नेत्र देखभाल सुविधा है। यह पहल सहयोगी प्रयासों के माध्यम से स्वास्थ्य सेवा की पहुँच बढ़ाने पर सरकार के फोकस को रेखांकित करती है। इसके अलावा, मोदी ने सोलर डिफेंस एंड एयरोस्पेस लिमिटेड में 1,250 मीटर लंबी हवाई पट्टी का उद्घाटन किया, जिससे मानव रहित हवाई वाहनों (यूएवी) के परीक्षण और भारत की रक्षा क्षमताओं को आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी। नागपुर में प्रधानमंत्री के कार्यक्रम भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महात्मा गांधी जैसी हस्तियों द्वारा दिखाए गए परिवर्तनकारी नेतृत्व के लोकाचार को दर्शाते हैं। सामाजिक परिवर्तन के उत्प्रेरक के रूप में स्वैच्छिक कार्रवाई पर गांधी का जोर समकालीन पहलों में प्रतिध्वनित होता है जो सामाजिक और पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करना चाहते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार की 136वीं जयंती पर, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नागपुर के रेशिमबाग स्थित स्मृति मंदिर का दौरा किया, जो देश भर के स्वयंसेवकों के लिए अत्यंत पूजनीय स्थान है, तथा उन्होंने आरएसएस के संस्थापक डॉ. हेडगेवार और श्री एमएस गोलवलकर, जिन्हें प्यार से श्री01 गुरुजी के नाम से याद किया जाता है, को श्रद्धांजलि अर्पित की।

जो लोग संघ और उसके स्वयंसेवकों को नहीं जानते, उनके लिए यह एक राजनीतिक यात्रा हो सकती है, लेकिन जो लोग जानते हैं, उनके लिए यह महज एक प्रतीकात्मक संकेत नहीं था, यह साझा वैचारिक और भावनात्मक जड़ों की पुनः पुष्टि थी, जो प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण और नेतृत्व को आकार देती रही है।

रेशिमबाग स्थित आरएसएस परिसर, जिसमें स्मृति मंदिर है, जहां डॉ. हेडगेवार और दूसरे सरसंघचालक एमएस जिसमें गोलवलकर (जिन्हें लोकप्रिय रूप से श्री गुरुजी के नाम से जाना जाता है) का अंतिम संस्कार किया गया था, स्वयंसेवकों के लिए एक पवित्र स्थल है।

हर साल, आरएसएस के तृतीया वर्ष प्रशिक्षण शिविर के दौरान सैकड़ों स्वयंसेवक वहां आते हैं और लगभग एक महीने तक वहां रहते हैं ताकि देशभक्ति की अपनी भावना को मजबूत कर सकें और अपने भीतर मातृभूमि के लिए निस्वार्थ सेवा की भावना जागृत कर सकें।

एक स्वयंसेवक के लिए स्मृति मंदिर की यात्रा सिर्फ़ स्मरण का कार्य नहीं है, यह एक व्यक्तिगत यात्रा है, लगभग तीर्थयात्रा। यह एक ऐसा स्थान है जो गहन चिंतन को प्रेरित करता है, भावनाओं को जगाता है, और देशभक्ति और निस्वार्थ सेवा के मूल्यों को पुष्ट करता है।

इस भूमि को पवित्र माना जाता है, जहां अनगिनत समर्पित स्वयंसेवकों के पदचिह्न पड़े हैं, जिन्होंने एक मजबूत और एकजुट हिंदू समाज और एक आत्मनिर्भर राष्ट्र के विचार के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। प्रधानमंत्री की यह यात्रा ऐसे समय में हो रही है जब संघ 1925 में अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूरे कर रहा है।

श्री गुरुजी के शब्दों में, 'हमारा अंतिम लक्ष्य सत्ता नहीं, बल्कि एक मजबूत और सामंजस्यपूर्ण समाज है जहां प्रत्येक व्यक्ति सम्मान और राष्ट्र के प्रति समर्पण के साथ रहता है।' इस दृष्टिकोण ने संघ को राजनीतिक शक्ति या प्रभाव पर निर्भर हुए बिना, शिक्षा और ग्रामीण विकास से लेकर आपदा राहत और सामाजिक सद्भाव तक भारतीय जीवन के विविध पहलुओं को प्रभावित करने की अनुमति दी है। प्रधानमंत्री मोदी की स्मृति मंदिर यात्रा संघ के आधारभूत मूल्यों के साथ निरंतर संरेखण को दर्शाती है। एक साधारण स्वयंसेवक से लेकर देश के सर्वोच्च पद तक की उनकी राजनीतिक यात्रा, संघ के माध्यम से उनमें स्थापित अनुशासन, राष्ट्रवाद और लोकाचार से प्रेरित रही है।

जैसा कि भारत भविष्य की ओर देख रहा है, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शताब्दी न केवल चिंतन का क्षण है, बल्कि एक नई प्रतिबद्धता का भी क्षण है।

आने वाली सदी में भी संघ के एकता, सेवा और सांस्कृतिक जड़ता के मार्गदर्शक सिद्धांत हमेशा की तरह प्रासंगिक बने रहेंगे। हम पूरे विश्वास के साथ भारत को एक मजबूत, आत्मनिर्भर और सामंजस्यपूर्ण राष्ट्र के रूप में आगे बढ़ते हुए देखना चाहते हैं, जो संघ द्वारा सौ वर्षों से चलाए जा रहे स्थायी आदर्शों से प्रेरित है, और अपनी सभ्यतागत महानता और वैश्विक नेतृत्व के योग्य भविष्य को आकार दे रहा है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

डी ग्रेड कवि सम्मेलनों के सी ग्रेड कवि

व्यंग्य

डॉ.महेन्द्र अग्रवाल

लेखक व्यंग्यकार हैं।

सी ग्रेड फिल्मों की सी ग्रेड नायिका की तरह जिले के बेरोजगार कवि भरोसी लाल फालतू को जब पड़ोसी जिले से एक संभाग स्तरीय डी ग्रेड कवि सम्मेलन का न्यौता मिला तो वे बल्लियों उछलने लगे। मस्ती की मादकता में झूमने लगे।गर्व और अभिमान के मिले जुले आनंद की अधिकता में घूमने लगे। कारण कवि सम्मेलन के निमंत्रण पत्र और प्रचार बैनरों में उसे अखिल भारतीय कवि सम्मेलन दर्शाया जा रहा था। इसमें भाग लेने और कविता पढ़ने मात्र से वह अखिल भारतीय कवि होने वाले थे। इसलिए पत्र पुष्पम में यात्रा व्यय से भी कम का उल्लेख होने के बावजूद उन्होंने हामी भरने में देर न की।उनके लिए अ.भा. कवि सम्मेलन का फलैक्स बैनर लगे मंच से पढ़ना और उसकी वीडियो बनाकर फेस बुक व वाटसअप के समूहों में वीडियो क्लिप चिपकाना-चलाना ही सबसे बड़ा पारिश्रमिक था।फिर पर्सनली लिंक भेज भेजकर लाइक व कमेंटस का अनुदान मांगने पर जो प्रतिफल मिलता वो अतिरिक्त बोनस हो जाता है। इस महाअवसर को भुनाने के लिए उन्होंने अपने बुद्धिकौशल का शत प्रतिशत उपयोग करने का सोचा।तय किया कि दस मिनिट के काव्य पाठ को वह दो दो मिनिट के पांच टुकड़ों में बांटकर पहले पांच फिर उन्हें एक दूसरे से जोड़कर दस से अधिक वीडियो क्लिप बनायेंगे ताकि दर्शकों को विश्वास हो जाये कि वह बहुत सारे कवि सम्मेलन पढ़ आये हैं और निरंतर बाहर आते जाते रहते हैं।अपनी व्यापारिक बुद्धि के प्रदर्शन के लिए वह चलते काव्य पाठ में नीचे एक पट्टी भी चलवायेंगे जिसमें लिखा होगा -कार्यक्रमों के लिए सम्पर्क करें-संदेश के साथ उनका मोबाइल नंबर होगा जो बार बार दर्शकों की आंखों के आगे आता रहेगा। सबको लगेगा कि वह व्यावसायिक कवि हैं।बड़े कवि हैं। बाहर कार्यक्रमों में आते जाते रहते हैं।उन्हें प्रोग्राम और पैसे मिलते रहते हैं। इससे किसी को यह न लगेगा कि वह बाहर आने जाने में किराया वगैरह अपनी जेब से खर्च करते हैं।

पहले दारू के ठेके होते थे उसी तर्ज पर अब कवि सममेलनों के ठेके होते हैं। बीस हजार का ,चालीस हजार का पचास हजार का। माइक मंच तखत दरी चादर और श्रोताओं को छोड़कर डी ग्रेड का कवि सममेलन पच्चीस से पचास हजार के बीच हो जाता है। संयोजक ने इसका ठेका कितने के लिफाफे में लिया है और किस किस कवि को क्या भुगतान किया यह सरकारी कार्यक्रमों के बिल की तरह गोपनीय रहता है। इससे फालतू जी जैसे कवियों की पब्लिक इमेज मतलब इज्जत बनी रहती है। आप इसे गठबंधन धर्म की राजनीतिक मजबूरी कहें या साधना काल की साहित्यिक मजदूरी,ये आप पर निर्भर करता है।

वैसे हिन्दी में शुद्ध साहित्य की वाचिक परंपरा तो कभी की खत्म हो गई जो थोड़ी बहुत बची थी वह कथित हास्य कवियों ने लट्ठ मार मारकर अधमरी कर दी। अब तो उसे सड़क से उठाने या मरहम पटटी करने वाले भी नहीं बचे। सब प्रोफेसनल हैं ।इस हाथ ले उस हाथ दे। जिसे आप अपने यहां बुलाओगे वह आपको अपने यहां बुलायेगा। आपने उसे यदि तीन या चार हजार का लिफाफा दिया है तो वह भी आपको उतने का लिफाफा दे देगा भले ही उसने आयोजकों से आपके नाम का लिफाफा कितने का ही बनवाकर ले लिया हो।बड़े लाफ्टर तो कार्यक्रमों के लिए बहुत पैसे मांगते हैं ले देकर सी डी ग्रेड कवि सम्मेलन मुशायरों के कवि ही बचे हैं जो बहुत कम पैसों में जनता के बीच खड़े होकर ठी ठा करवा देते हैं।

धीरे-धीरे दो चार जगह आने-जाने व इसका भ्रम फैलाने, भांति-भांति के भले बुरे कवियों की संगत में आने-रहने से उन्हें फायदे की नई सुरंगों का ज्ञान हुआ।जैसे स्थानीय कवियों के लिफाफे तो लिए जाते हैं मगर दिये नहीं जाते। इन भुकक्ड़ों के लिए तो चाय नाश्ता ही बहुत होता है। पढ़वाने का अहसान अलग उधारी खाते में। चतुराई बरतो तो बाहर से आने वालों का दस बीस हजार का लिफाफा लो और तीन हजार टिका दो। यहां भी बुलाने पढ़वाने का अहसान अलग। फलस्वरूप वे भी संयोजक बनने को उतारू हो गये। अपने रिश्ते-नातेदारों मित्रों-परिचितों करीबी संस्था प्रमुखों से जहां मिलें कवि सम्मेलन कराने और उन्हें संयोजक बनाने की सलाह देने लगे। मतलब पीछे पड़ने लगे।

फिर साल दो साल में इतना नाम कमाया कि लोग उन्हें देखते ही भाग खड़े होने लगे। सामने से आते दिखें तो भुक्त भोगी राजमार्ग छोड़कर पगडंडियां तलाशें । सीढ़ियों पर नज़र आयें तो पलटकर लिफ्ट ढूंढें। क्या करें आखिर शिकार तो खुद अपनी मर्जी से शेर के जबड़ों में जाने से रहा।

जेनरेशन गैप के साथ कम्युनिकेशन गैप भी खत्म हो

पेरेंटिंग

अनुपमा अनुश्री

लेखक साहित्यकार हैं।

सामाजिक स्थिति सही चले तो किसी तरह का सवाल नहीं उठता । सवाल उठने लगते हैं जब स्थिति दिन - प्रतिदिन बिगड़ती नजर आए। बहुत तेजी से तकनीकी विकास हुआ है। आधुनिक दौर में तकनीकी विकास व कॉरपोरेट कल्चर छाया हुआ है लेकिन इसके कई सारे ड्रॉबेक्स है जो आज देखने को मिलते हैं और पेरेंटिंग डिफिकल्ट हुई है। बच्चों के साथ व्यवहार भी माँ-बाप का काफी हद तक बदल गया है और बच्चों का व्यवहार भी बदल गया है । बच्चे -बच्चे जैसे नहीं है ! माँ-बाप ,माँ-बाप जैसे नहीं रह पा रहे ! मर्यादा, अनुशासन ,आज्ञापालन, बड़प्पन, नैतिक मूल्य सब डाँवाडोल स्थिति में ! क्यों!

शुरुआत होती है छोटे बच्चे से जब बच्चा रोता है या माँ को काम करना है, व्यस्तता है तो मोबाइल पकड़ा दिया जाता है। उसका पूरा एंटरटेनमेंट अच्छा बुरा जैसा भी, उसकी मुट्ठी में मोबाइल के रूप में रहता है अब उसे बाहर से कहीं कुछ चाहिए नहीं! हम सभी अलग-अलग तानोंबानों से बने हुए हैं और सभी की चेतना का स्तर अलग-अलग है। कुछ सार्वभौमिक सत्य फिर भी हैं। जितना अधिक हम सरल,सहज और अपनी जमीन से जुड़े हुए रहते हैं ज्ञानवान, संस्कारवान,सुसंस्कृत रहते हैं, जीवन को सही दिशा मिलती है। विकास की ऊँची अट्टालिकाओं, कक्रीट के जंगल के साथ-साथ अपनी वास्तविक जमीन, संस्कृति,संस्कार, सभ्यता,धर्म परंपराओं, प्रकृति से गहराई से जुड़े रहना भी बहुत जरूरी है । यही हमारी गरिमा ,हमारी पहचान है। अगर हम भौतिकवाद को अपने सर पर बिठाकर रखेंगे,पश्चिम का अंधानुकरण करेंगे, बनावट, आडंबर, दिखावट,फैशन परेड, अनाप-शनाप भाषा, असभ्यता,भोंडा नाच, गैजेट्स में उलझे हुए स्क्रोलिंग में डूबे रहेंगें, हम ऐसे माँ-बाप बनेंगे तो हमारे बच्चों से हमें क्या ही उम्मीद करना चाहिए!! तकनीकी दक्षता अच्छी है लेकिन अच्छे गुण और सदाचरण में दक्षता उससे बेहतर।

एकांतवासी बनकर जो गैजेट्स के साथ रहने की आदत इस तरह विकसित हो चुकी होती है कि उन्हें रोकना और अन्य गतिविधियों, पढ़ाई, खेलकूद, सही खानपान, फिजिकल फिटनेस आदि पर ध्यान देने के लिए कहना एक बड़ी मुसीबत साबित होता है। फिर दुर्घटनाएँ होती हैं और कई तरह की शारीरिक-मानसिक विकृतियाँ आती हैं व अपराध होते हैं। माता-पिता को बच्चों की साइकोलॉजी समझते हुए स्वयं भी संतुलन का सिद्धांत अपनाना चाहिए तभी बच्चे उन्हें रोल मॉडल समझते हुए आगे बढ़ेंगे। बात तो यह भी है कि जिन्होंने गैजेट्स बनाए, उन्होंने अपने बच्चों को दूर ही रखा हुआ है या फिर एक निश्चित समय तय किया हुआ है गैजेट्स उपयोग का। संतुलन की थ्योरी हर जगह, प्रकृति हो चाहे व्यक्ति,में फिट होती है। संतुलन बिगड़ा और गड़बड़ हुई।

और पेरेंटिंग के लिए सबसे महत्वपूर्ण चीज होती है अपने बच्चों को समझना, मनोवैज्ञानिक रूप से, उनकी उम्र, उनकी इच्छाओं, अभिरुचियों को समझते हुए तालमेल बैठाना और स्नेह के साथ समस्याओं का समाधान करना। डाँट-डपट,मारपीट ,बहस, अनियंत्रित आवेग और अनर्थक बातचीत का कोई भी सही परिणाम नहीं निकलता।

हर दिन कुछ समय निश्चित करके एक नियम बनाना चाहिए उनके साथ बैठने का और संवाद कर मार्गदर्शित करने का ताकि वह आपके साथ बेझिझक मित्रवत व्यवहार करें व अपने दिन भर की गतिविधियाँ आदि पर बात कर सकें और आप जान सकें कि आपके बच्चे किस दिशा में, किस तरह बढ़ रहे हैं। उनकी संगत क्या है! उनकी सोच, उनका दृष्टिकोण क्या है! यह सब सार्थक संवाद के माध्यम से ही हो पाएगा यानी अपने बच्चों को 'क्वालिटी टाइम' देना बहुत जरूरी है।

सिर्फ पैसा, महंगे गैजेट्स और तोहफे देने से और रेस्टोरेंट में जाकर दावतें , पार्टी करने से कुछ नहीं होगा। धैर्य से शाँति के साथ विवेकपूर्ण निर्णय से ही समस्याओं का समाधान निकलता है।

बच्चे आज के जमाने के हैं । उनका ई क्यू /आई क्यू, एक्स्पोज़र बहुत अधिक है,तो माँ-बाप को इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए स्वयं का आचरण भी सुधारना चाहिए, तभी बच्चे सीखेंगे क्योंकि बोलने से नहीं बल्कि प्रत्यक्ष - परोक्ष सभी तरह से आचरण से ,कार्यों से बच्चा सीखता है । पहले हम अच्छे बने,तब हम दूसरों के ऊपर उँगली उठाएँ। हिटलर की भूमिका बच्चों की जिंदगी में न निभाएँ। माता-पिता का बच्चों के सामने अपना खराब व्यवहार दिखाना, लड़ना- झगड़ना बच्चों के लिए बहुत बड़ा ट्रॉमा उत्पन्न करना है। उन पर गलत मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालता है। बच्चों में अच्छी आदतें देखनी है तो खुद में भी भाषा - व्यवहार, आचरण की गरिमा व संतुलन, शिष्टता बेहद आवश्यक है।

पुस्तकों की महिमा से परिचित होना भी जरूरी है। जब हम खुद अच्छा साहित्य नहीं पढ़ते ! हमें कोई शास्त्रोक्त बातें नहीं आती, कोई नीति- नैतिक सिद्धांत नहीं पता,तो हम किसी को क्या शिक्षा दें सही जीवन जीने की! हम खुद चक्कर घिन्नी बने हुए हैं भौतिकता में,पैसा कमाने की होड़, दिखावे की होड़ में आपाद मस्तक डूबे हुए हैं। हम क्या ही किसी को सही दिशा देंगे! हमारे वांग्मय में बताया गया है किस तरह से अपने आप को सुसंस्कृत करना है और बिखराव, भटकाव,मानसिक अस्थिरता, उत्तेजना,हिंसक व्यवहार, उद्दंडता, अनुशासनहीनता को दूर करना है और अपने लक्ष्य पर फोकस करना है। पुस्तकें इतनी सद्भावनाएँ, सद्विचार, उत्तम आदर्श अपने अंदर समाहित करती हैं अगर उनका पठन-पाठन नियमित आदत बना दी जाए तो यह समस्या पेरेंट्स और बच्चों के मध्य उत्पन्न ही नहीं होगी।

कितनी पुस्तकें आजकल हम खरीद रहे हैं अपने बच्चों के लिए ! क्या हम पुस्तक जन्मदिन पर तोहफे में देते हैं! पुस्तकों से जुड़ना जीवन से जुड़ना ही है अगर हम अच्छी पुस्तक पढ़ते हैं तो वह जीवन सही दिशा में स्वत स्फूर्त और प्रवाहित होने लगता है यही कारण रहा है कि जितने महापुरुष हुए हैं, उन्होंने अच्छी पुस्तकों के पठन-पाठन पर बहुत जोर दिया है। सब के यहाँ लाइब्रेरी है, चाहे वह सुधा मूर्ति, जिनके यहाँ बरसों तक रेफ्रिजरेटर नहीं था लेकिन बड़ी लाइब्रेरी थी या बिल गेट्स की बात करें कि जब कहीं नीलामी हो रही है बड़े-बड़े मंहगे सामानों की,तो वे उस नीलामी से सिर्फ पुस्तकें खरीदते हैं। ऐसे तमाम प्रेरक उदाहरण है जहाँ महापुरुषों ने पुस्तकों से सच्चे मोती अपने जीवन में उतारे और अपने श्रेष्ठ व्यक्तित्व और कृतित्व से समाज को सार्थक संदेश दिया, प्रेरणा दी। स्वयं आगे बढ़े और समाज को भी सही दिशा में आगे बढ़ाने की पूरी कोशिश कीजिए। बच्चों के साथ कभी पोइट्री सेशन, स्टोरी टेलिंग, क्विज, गेम्स,गार्डनिंग, योग, हाइकिंग, और भी तमाम सारी क्रिएटिव गतिविधियाँ साथ में मिलकर कीजिए ,हार्मनी बढ़ाइए। उन्हें अपनी दमित इच्छाओं,हसरतों, अपेक्षाओं का शिकार मत बनाइए। जिन विषयों, कार्य क्षेत्र में उनकी रुचि नहीं, उनकी तरफ जबरदस्ती करके दबाव मत डालिए। जिस क्षेत्र में आगे बढ़ने की उनकी रुचि है, जिस कैरियर में उनका इंटरेस्ट है उसमें उनको मार्गदर्शन दीजिए, प्रोत्साहित कीजिए और सुविधा प्रदान कीजिए।

तकनीक का जमाना है। पेरेंट्स अपडेट रहें ताकि बच्चों की संगत पर भी नजर डाल सकें और उनके साथ किसी तरह के स्कैम, हरासमेंट, शोषण, एक्सप्लोइटेशन,ऑनलाइन फ्रॉड, डीप फेक वीडियो,एआई का गलत उपयोग,अनियंत्रित तकनीक के नुकसान से बचा जा सके।

माता-पिता अपने कार्यों, अफेयर्स में इतने न उलझे रहें कि बच्चों को सुने बिना, जाने-समझे बिना उनके लिए फैसले लेते जाएँ या फिर अपनी इच्छा,महत्वाकाँक्षाएँ उनकी क्षमता, योग्यता,अभिरुचि समझे बगैर उनपर थोप दी जाएँ! अगर वह अपनी अभिरुचि से कैरियर की तरफ बढ़ता है तो उसे भी संतुष्टि मिलेगी और आपको भी तनाव नहीं होगा।

कहते हैं 'बच्चा ही प्रथम गुरु है मानवता का' तो कभी कुछ उनसे भी सीख लीजिए। बच्चों और माँ-बाप के बीच में जेनरेशन गैप तो था ही अब कम्युनिकेशन गैप भी बढ़ रहा है । इसी कारण से दोनों एक दूसरे को अंडरस्टैंड नहीं कर पा रहे । निरंतर समाचार, पत्र पत्रिकाओं, चैनल्स में समाज की अफसोस जनक तस्वीरें सामने आ रही है कि किस तरह से माता-पिता बच्चों को नियंत्रित करने में या बच्चे माता-पिता की बात सुनने में अक्षम सिद्ध हो रहे हैं। बच्चों में क्रोध,उद्दंडता, हिंसा, मनमानी अवज्ञा के कारण घटनाएँ हो रही है। छात्र-छात्राओं ने रोक-टोक पर, मोबाइल न देने पर अपनी जान भी गँवा दी! यह फैटेंसी वर्ल्ड इतना अधिक हावी हो गया है कि जिंदगी जैसी कीमती चीज भी कुछ नजर आ रही!! स्पेस और स्वतंत्रता के नाम पर उद्दंडतापूर्ण व्यवहार करके माता-पिता की निरंतर अवज्ञा कर रहे हैं ! गलत संगत में पड़ रहे हैं! पार्टी ,फैशन, प्रतिद्वंदिता और नशे को आधुनिकता का पर्याय समझ लिया है और अपने जीवन से खेल रहे हैं। और इन सब गलत आदत और बातों से खुद को बड़ा 'कूल' समझ रहे हैं! इन सबको सही दृष्टिकोण से जीवन को समझना होगा। सफल व्यक्तित्व, चेंज मेकर्स, महापुरुषों को पढ़ना होगा। अपने शास्त्रों, अच्छी पुस्तकों को पढ़ना होगा तब जाकर जिंदगी में कुछ जीवन मूल्य शामिल होंगे और जीवन सँवरेगा -सुधरेगा। भविष्य की पीढ़ी सिर्फ भौतिक विकास नहीं बल्कि अपना आत्मिक विकास, आध्यात्मिक विकास भी करें क्योंकि अपनी जड़ों से कटकर, परकटे पंछी की तरह संस्कार विहीन और अनुशासन हीन, अनियंत्रित, सदाचरण विहीन व्यक्ति,मनुष्य नहीं,पशुवत है।

ईमानदारी,सच्चाई को धारण करके पूरे मनोयोग से जब काम किया जाए स्वयं पर, अपनी संस्कृति, धर्म, परंपरा की डगर पर चलकर, तभी स्थितियाँ होंगी माता-पिता और बच्चों के लिए बेहतर।

अब सवाल उठता है क्या पेरेंट्स ही पढ़ रहे हैं कुछ अच्छा साहित्य! हर भाषा अपनी संस्कृति के साथ जुड़ी होती है। भाषा के साथ उसकी संस्कृति भी आती है तो क्या हम अपनी हिंदी -संस्कृत भाषाओं से सीख वह ज्ञान दे पा रहे हैं जहाँ हमारे धर्म, संस्कृति, अध्यात्म के तत्व छुपे हुए हैं।

कौन है रोल मॉडल आज के बच्चों के! भारत की गौरव गाथा स्वर्णाभ आखरों से सुसंपन्न है जहाँ वीर महापुरुषों, ऋषि - मुनि, वैज्ञानिकों, सिद्ध -संतों के ज्ञान, त्याग, तपस्या, अध्यात्म, चिंतन, दर्शन, परंपराओं का इतिहास लिखा गया है, पर हमारे पास पढ़ने का अवकाश नहीं ,क्योंकि हम इतनी आपा-धापी,भागमभाग में है । सही चिंतन, निर्णय हेतु ठहराव और शाँत मन हमारे पास नहीं!

निराशा ,अवसाद ,कुंठा ,व्यर्थ भाग- दौड़ और उलझन में अधिक फँसने से बेहतर है संभल जाएँ। स्वयं को संभाले और अपनों को संभाले। सिर्फ कहने, सुनने, देखने,पढ़ने से नहीं होगा । सदुणों को जीवन में उतारना होगा,आत्मसात करना होगा। 'संतोषी सदा सुखी' सिद्धांत अपनाएँ। बेहतर परिवार,समाज ,देश के निर्माण में एक जिम्मेदार नागरिक बनकर अपना श्रेष्ठ योगदान दें। प्रेम, स्नेह ,अपनेपन से सींच कर नई पीढ़ी को संवेदनशील, स्नेहिल, परोपकारी, ईमानदार, संस्कारवान और विवेकवान बनाएँ।

'ऑटिज्म' रोग से बच्चे कैसे बचें?

विश्व ऑटिज्म दिवस विशेष

डॉ. रमेश ठाकुर

सदस्य, राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान

'ऑटिज्म बीमारी' को हल्के में लेने की भूल कतई न की जाए, ये नवजात बच्चों के संग जन्म से ही उत्पन्न होती है। ऑटिज्म से बचा कैसे जाए, जिसके संबंध में प्रत्येक वर्ष 2 अप्रैल को पूरे संसार में 'विश्व ऑटिज्म दिवस' जागरूकता के मकसद से मनाया जाता है। मौजूदा वक्त में इस बीमारी को लेकर चिंताएं इसलिए बढ़ी हुई हैं, क्योंकि सालाना करीब 10 हजार बच्चे सिर्फ भारत में जन्म के साथ ही लाईलाज 'ऑटिज्म' बीमारी लेकर पैदा हो रहे हैं। ये आंकड़ा विगत वर्षों में कुछ ज्यादा ही बढ़ा। दुख इस बात का है, बीमारी की न तो कोई अभी तक दवा है और न ही कोई प्रॉपर इलाज का इंतजाम? सिर्फ जागरूकता और बचाव ही ऑटिज्म का साधन-समाधान है।

बीमारी की गंभीरता को देखते हुए 'संयुक्त राष्ट्र' ने सर्वसम्मति से 2 अप्रैल को 'विश्व ऑटिज्म' मनाने का निर्णय लिया था। ताकि जनमानस इस खतरनाक बीमारी के प्रति जागरूक और सतर्क हो सकें। ये खास दिन ऑटिज्म पीड़ितों के जीवन में गुणवत्ता और सुधार करने में न सिर्फ मदद करता है,बल्कि बीमारी के कारणों की गंभीरता से पड़ताल कर उसपर प्रकाश भी डालता है। अप्रैल-1988 को राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने इस दिवस को मनाने की वकालत सबसे पहले की थी। डब्ल्यूएचओ की माने तो भारत में इस वक्त करीब 18 मिलियन बच्चे ऑटिज्म से पीड़ित हैं। 2-9 वर्ष की आयु के 1-1.5 प्रतिशत बच्चों में ऑटिज्म यानी एएसडी है। वर्तमान में अमेरिका कुछ ज्यादा ही पीड़ित है। सीडीसी रिपोर्ट बताती है कि अमेरिका में लगभग 36 में से एक बच्चा ऑटिज़्म से ग्रस्त है। संसार भर की बात करें, तो दुनिया की एक फीसदी आबादी इस वक्त ऑटिज्म से पीड़ित हो चुकी है।

सन-2022 में सीडीसी द्वारा किए गए शोध के मुताबिक, संसार में ऑटिज्म से पीड़ितों की संख्या 75,000,000 आंकी थी। आंकड़ों में 100 बच्चों में से 1 बच्चा ऑटिज्म से ग्रस्त हुआ है। ये वैश्विक आंकड़े निसंदेह रोंगटे खड़े करते हैं। तमाम देशों के वैज्ञानिक टीके और दवाई को लेकर रिसर्च करने में लगे हैं। पर, अफसोस अभी तक कोई सफल नतीजे तक नहीं पहुंच पाया। विश्व में ऑटिज़्म निदान की उच्चतम दर वाला देश कतर है और सबसे कम दर वाला फ्रांस है। रिपोर्ट ये भी बताती है कि लड़कियों की तुलना में लगभग 4 गुना अधिक लड़के

ऑटिज़्म से पीड़ित हैं। दुनिया भर में ऑटिज्म पीड़ितों की संख्या घटने के वजाए बढ़ ही रही है।

समझ, जानकारी और जागरूकता के अभाव के चलते स्थिति और भयाभय हो रही है। महिलाओं का गर्भ के दौरान संपूर्ण चिकित्सीय जांच न होना, भी एक मुख्य कारण है। ग्रामीण अंचलों में लोग गर्भवति महिलाओं की जाचं-पड़ताल न के बराबर करवाते हैं। इन्हीं कारणों को ध्यान में रखकर वैश्विक स्तर पर तमाम देशों के प्रतिनिधियों ने साल-2008 में 'कन्वेन्शन ऑन द राइट्स ऑफ पर्सनस विद डिसएबिलिटीज' लागू कर अक्षम लोगों को मानव अधिकारों की रक्षा और प्रोत्साहन सुनिश्चित करने का संकल्प लिया ताकि ऑटिज्म से पीड़ित सभी वयस्क और बच्चों की सही देखरेख सुनिश्चित करने पर जोर दिया जा सके। पीड़ित अपना पूरा जीवन उद्देश्यपूर्ण तरीके से जिए इसकी पैरवी अपने स्तर पर यूनीसेफ और डब्ल्यूएचओ करते आए हैं। ये दिवस ऑटिज्म पीड़ितों की मदद और जीवन की गुणवत्ता को बेहतर कराने की ओर सभी का ध्यानकर्षण करवाता है।

गौरतलब है ऑटिज्म सामान्य रोग नहीं हैं,बल्कि कई बार तो लगता है कि ये रोग नहीं बल्कि ताउम्र रहने वाला विकार है। जीवन भर चलने वाली इस न्यूरोलॉजिकल स्थिति लोगों में यह बचपन में ही आती है जिसका लिंग, नस्ल और सामाजिक आर्थिक दर्जे से कोई लेना-देना नहीं होता। इससे ग्रस्त बच्चों की समाज में स्वीकार्यता मुश्किल से मिलती है और अगर समाज में इस रोग के प्रति जागरूकता ना हो पीड़ितों के प्रति रवैया और भी खराब हो। कई देशों में तो ऑटिज्म रोगियों को पागलखाने में भर्ती करवा देते हैं। जबकि, ऐसा कदापि नहीं करना चाहिए, क्योंकि वो पागल नहीं होते? ग्रस्तों हमारी बहुत जरूरत होती है। उन्हें बेसहारा बिल्कुन न छोड़े।

ऑटिज्म रोगियों की अलग सामाजिक अंत क्रिया होती हैं, उनके सीखने के तौर-तरीके सामान्य लोगों से अलहदा होते हैं। उनके समक्ष विचार संप्रेषण की प्रस्तुतियों की चुनौतियां भी अलग होती हैं जिसका वह न चाहते हुए भी सामना करते हैं। समय की मांग यही है कि ऑटिज्म के लिए उचित दवाइयों और उपचार पर खोज हो, ताकि हजारों-लाखों बच्चों का जीवन जन्म से बेकार होने से बच सके। गर्भवति महिलाओं को गर्भधारण के पहले सप्ताह से लेकर डिलीवरी के दिनों तक चिकित्सीय परामर्शानुसार जांच-पड़ताल करवाना चाहिए। क्योंकि ऐसे बच्चों को जन्म देने की इजाजत चिकित्सक भी नहीं देते।

हिंदी को विश्व स्तर पर ले जाने के पक्षधर डॉ. गोयनका

स्मृति शेष

संदीप सृजन

मुंशी प्रेमचंद पर गहरे शोध अध्ययन के लिए विश्व भर में पहचाना जाने वाले डॉ. कमल किशोर गोयनका का देहावसान हो गया है। वे हिंदी साहित्य के एक ऐसे सशक्त हस्ताक्षर थे, जिन्होंने अपनी विद्वता, शोध, और लेखन से हिंदी साहित्य को न केवल समृद्ध किया, बल्कि इसे वैश्विक मंच पर एक नई पहचान भी दिलाई। उनका नाम विशेष रूप से मुंशी प्रेमचंद के साहित्य के अध्ययन और विश्लेषण के साथ जुड़ा हुआ है, लेकिन उनके योगदान का दायरा इससे कहीं व्यापक था। प्रेमचंद पर उनके गहन शोध के साथ-साथ प्रवासी हिंदी साहित्य के संकलन और प्रचार में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

11 अक्टूबर, 1938 को उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले में एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्में श्री गोयनका का परिवार साहित्य और शिक्षा के प्रति विशेष रुझान रखता था, जो उनके व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक सिद्ध हुआ। उनके पिता एक शिक्षक थे, जिन्होंने कमल किशोर में पढ़ाई और ज्ञान के प्रति प्रेम पैदा किया। बचपन से ही वे किताबों के प्रति आकर्षित थे और स्थानीय स्तर पर उपलब्ध साहित्य को पढ़ने में घंटों बिताते थे। उनकी माँ एक गृहिणी थीं, लेकिन उनकी कहानियों और लोककथाओं ने गोयनका के मन में साहित्य के बीज बोए।

बुलंदशहर में उनकी प्रारंभिक शिक्षा हुई, जहाँ उन्होंने हिंदी, संस्कृत, और अंग्रेजी भाषाओं में प्रारंभिक ज्ञान प्राप्त किया। स्कूल के दिनों में ही उनकी रुचि साहित्य की ओर बढ़ने लगी थी, और वे कविताएँ और छोटी-छोटी कहानियाँ लिखने लगे थे। हालांकि, उनकी प्रतिभा को असली दिशा तब मिली जब वे उच्च शिक्षा के लिए दिल्ली आए। दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने के बाद उनकी साहित्यिक यात्रा ने एक नया मोड़ लिया। यहाँ उन्होंने हिंदी साहित्य में स्नातक, परास्नातक, एम.फिल., पीएच.डी., और अंततः डी.लिट् की उपाधियाँ प्राप्त कीं। उनकी शैक्षिक उपलब्धियाँ उनके कठिन परिश्रम और लगन का परिणाम थीं।

दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ाई के दौरान कमल किशोर गोयनका का परिचय मुंशी प्रेमचंद के साहित्य से हुआ। प्रेमचंद की रचनाएँ जैसे गोदान, गबन , कफ़न और ईदगाह पढ़कर वे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने प्रेमचंद के साहित्य को अपने शोध का विषय बनाने का निर्णय लिया। प्रेमचंद की कहानियों में सामाजिक यथार्थ, गरीबी, शोषण, और मानवीय संवेदनाओं का जो चित्रण था, वह गोयनका के मन को गहरे तक छू गया। उनकी पीएच.डी. का शोध प्रेमचंद की कहानियों के कालक्रम और शिल्प पर केंद्रित था, जो बाद में उनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक का आधार बना।

दिल्ली विश्वविद्यालय में उनके गुरुओं ने उनकी प्रतिभा को पहचाना और उन्हें शोध के लिए प्रोत्साहित किया। प्रोफेसर नामवर सिंह और अन्य विद्वानों के मार्गदर्शन में गोयनका ने साहित्यिक विश्लेषण की बारीकियाँ सीखीं। उनकी डी.लिट् की थीसिस प्रेमचंद के उपन्यासों के सामाजिक संदर्भों पर आधारित थी, जिसमें उन्होंने यह दर्शाया कि प्रेमचंद की रचनाएँ केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज के दर्पण के रूप में कार्य करती हैं।

डॉ गोयनका ने अपने शैक्षिक जीवन का अधिकांश समय दिल्ली विश्वविद्यालय के जाकिर हुसैन कॉलेज में प्रोफेसर के रूप में बिताया। लगभग 40 वर्षों तक उन्होंने छात्रों को हिंदी साहित्य पढ़ाया और शोध के लिए प्रेरित किया। उनके अध्यापन का तरीका अनूठा था। वे केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं रहते थे, बल्कि साहित्य को जीवन से जोड़कर समझाते थे। उनके छात्र आज भी उनकी कक्षाओं को याद करते हैं, जहाँ वे प्रेमचंद की कहानियों के पात्रों को जीवंत कर देते थे।

उन्होंने केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल और केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में उपाध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया। इन

संस्थानों के माध्यम से उन्होंने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और शिक्षण में योगदान दिया। वे हिंदी को वैश्विक स्तर पर ले जाने के पक्षधर थे और इसके लिए कई सेमिनारों और कार्यशालाओं का आयोजन किया। उनके प्रयासों से हिंदी साहित्य को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पहचान मिली।

डॉ. गोयनका का सबसे बड़ा योगदान प्रेमचंद के साहित्य पर उनका शोध कार्य है। उन्होंने प्रेमचंद की रचनाओं का कालक्रमानुसार अध्ययन किया और इसे व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया। उनकी पुस्तक 'प्रेमचंद की कहानियों का कालक्रमानुसार अध्ययन' इस क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कृति मानी जाती है। इस पुस्तक में उन्होंने प्रेमचंद की 300 से अधिक कहानियों को उनके रचनाकाल के आधार पर वर्गीकृत किया और प्रत्येक कहानी के सामाजिक संदर्भ को विश्लेषित किया। इस कार्य के लिए उन्हें 2014 में व्यास सम्मान से सम्मानित किया गया। उनकी अन्य शोध कृतियों में 'प्रेमचंद के उपन्यासों का शिल्प विधान' (1974) इस पुस्तक में गोयनका ने प्रेमचंद के उपन्यासों की संरचना और शैली का विश्लेषण किया। 'प्रेमचंद विश्वकोश? (1981, दो खंड) यह प्रेमचंद के जीवन और साहित्य पर एक व्यापक संदर्भ ग्रंथ है। 'प्रेमचंदः चित्रात्मक जीवनी' (1986) इसमें प्रेमचंद के जीवन को चित्रों और दस्तावेज़ों के साथ प्रस्तुत किया गया। 'प्रेमचंद की हिंदी-उर्दू कहानियाँ' (1990) इस संकलन में प्रेमचंद की द्विभाषी रचनाओं को एकत्र किया गया। डॉ गोयनका ने प्रेमचंद पर 22 से अधिक पुस्तकें लिखीं और संपादित कीं। उनके शोध ने प्रेमचंद के साहित्य को नए दृष्टिकोण से देखने की प्रेरणा दी। उन्होंने प्रेमचंद के मूल दस्तावेज़, पत्र, डायरी, और पांडुलिपियों का संग्रह किया, जो लगभग 3000 वस्तुओं का एक दुर्लभ संग्रह है। इस संग्रह के आधार पर उन्होंने प्रेमचंद की जीवनी को कालक्रमानुसार प्रस्तुत किया, जो हिंदी साहित्य में पहली बार हुआ।

प्रेमचंद के अलावा, डॉ गोयनका ने प्रवासी हिंदी साहित्य पर भी महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने प्रवासी लेखकों की रचनाओं को एकत्र किया, उनका अध्ययन किया, और उन्हें प्रकाशित किया। उनकी छह पुस्तकें और तीन प्रतिनिधि संकलन इस क्षेत्र में उनके योगदान को दर्शाते हैं। प्रवासी साहित्य को मुख्यधारा में लाने और उसे हिंदी साहित्य का अभिन्न अंग बनाने में उनकी भूमिका सराहनीय रही। उन्होंने मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, और अन्य देशों में बसे हिंदी लेखकों के कार्यों को प्रोत्साहित किया।

डॉ.गोयनका की लेखनी केवल प्रेमचंद और प्रवासी साहित्य तक सीमित नहीं थी। उन्होंने अन्य लेखकों पर 20 पुस्तकें और 350 से अधिक शोध-पत्र और लेख लिखे। उनकी रचनाओं में विविधता थी–वे कविता, कहानी, उपन्यास, और समीक्षा सभी पर लिखते थे। साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित 'प्रेमचंद ग्रंथावली' के संपादन में भी उनका योगदान रहा। उनके लेख और शोध-पत्र हिंदी साहित्य की विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए, जो आज भी शोधकर्ताओं के लिए संदर्भ सामग्री के रूप में उपयोगी हैं।

कमल किशोर गोयनका को उनके साहित्यिक योगदान के लिए कई प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाज़ा गया। इनमें व्यास सम्मान,हिंदी अकादमी (दिल्ली) सम्मान, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान सम्मान, मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी सम्मान, केंद्रीय हिंदी संस्थान (आगरा) सम्मान प्रमुख है। प्रेमचंद शताब्दी वर्ष 1980 से लेकर अपने जीवन के अंत तक, वे देश-विदेश के 70 से अधिक नगरों, विश्वविद्यालयों, और साहित्यिक संस्थानों में सम्मानित हुए। ये सम्मान उनके अथक परिश्रम और साहित्य के प्रति समर्पण का प्रमाण हैं।

कमल किशोर गोयनका का व्यक्तित्व सादगी, विद्वता, और मानवता का संगम था। वे एक समर्पित शिक्षक, शोधकर्ता, और लेखक होने के साथ-साथ अपने परिवार और समाज के प्रति भी संवेदनशील थे। उनका विवाह एक शिक्षित और सहृदयी महिला से हुआ, जो उनके साहित्यिक कार्यों में उनकी सहयोगी रही। उनके बच्चे भी शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सक्रिय हैं, जो उनके प्रभाव को दर्शाता है।

31 मार्च, 2025 को जैसे ही उनके निधन की खबर सामने आई, सम्पूर्ण हिंदी साहित्य जगत को गहरा आघात पहुँचाया। उनका निधन हिंदी साहित्य के लिए एक अपूरणीय क्षति है। डॉ कमल किशोर गोयनका हिंदी साहित्य के एक ऐसे नक्षत्र थे, जिन्होंने अपने ज्ञान, शोध, और लेखन से इस क्षेत्र को प्रकाशित किया। प्रेमचंद के साहित्य को समझने और उसे नई पीढ़ी तक पहुँचाने में उनकी भूमिका अभूतपूर्व रही। प्रवासी हिंदी साहित्य को मुख्यधारा में लाने और हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में उनका योगदान भी अविस्मरणीय है। उनकी पुस्तकें, शोध-पत्र, और संग्रह आज भी हिंदी साहित्य के अध्ययन के लिए एक अमूल्य निधि हैं। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि सच्चा साहित्यकार वही है, जो अपनी लेखनी से समाज को दिशा दे और उसे समृद्ध करे। गोयनका का नाम हिंदी साहित्य के इतिहास में हमेशा अमर रहेगा।

अम्बेडकर जयंती वृहद रुप से मनाने को लेकर गांव-गांव बैठक

सुबह सवेरे सोहागपुर। डॉ भीमराव अंबेडकर जन्मोत्सव समिति सोहागपुर के तत्वाधान में 14 अप्रैल 2025 को अंबेडकर जयंती मनाने के संबंध में बैठक का आयोजन किया गया। पिछले साल की तुलना में इस साल विशाल कार्यक्रम को लेकर गांव गांव डॉ. आंबेडकर जन्मोत्सव समिति बैठक करके कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए प्रयास कर रही है। इसी क्रम में समीपवर्ती ग्राम

किशनपुर में अगली बैठक रखी जाएगी। जिसमें समाज के सभी वरिष्ठ पदाधिकारी से मार्गदर्शन लिया जाएगा। बैठक का संचालन सुमित्रा देवी ने किया गया। भीमराव अंबेडकर जन्मोत्सव समिति अध्यक्ष गणेश अहिरवार ने आयोजन की रूपरेखा रखकर विस्तृत वर्णन किया। बैठक में हरीप्रसाद धौलपुरिया, रामदास ईश्वरपुर ,राजकुमार अहिरवार,भाईजी अहिरवार, मदन बामने, चंदन सिंह परमार राहुल अहिरवार पंकज परमार गोविंद परमार बालकिशन अहिरवार सोनू अहिरवार गोविंद अहिरवार आकाश अहिरवार बंदीछोड़ गेंदालाल लखनलाल अहिरवार गोपाल अहिरवार चीचली शाहिद खान आदि उपस्थित थे।

मित्र कन्या शाला के साथ 11 देशों की वर्चुअल बैठक

सुबह सवेरे सोहागपुर। मित्र कन्या शाला की 150 वीं वर्षगांठ नवम्बर में मनाई जाएगी। बालिकाओं की निशुल्क शिक्षा का पर्याय , सहयोग संस्कार एवं समन्वय सहित समग्र विकास की त्रिवेणी, क्षेत्र की प्राचीन शिक्षण संस्था मित्र कन्या शाला सोहागपुर के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में सतत गतिविधि आधारित भव्य समारोह

आगामी जुलाई से दिसंबर के मध्य में संपन्न होगा । इस संबंध में प्राचार्य डॉ संजीव शुक्ला ने बताया कि विगत दिवस फ्रेंड्स की सबसे बड़ी संस्था एफ डब्ल्यू सी सी के एशिया वेस्ट पैसिफिक सेक्शन की वार्षिक वर्चुअल महासभा में ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, भारत , जापान , सिंगापुर, दक्षिण कोरिया, हांगकांग आदि 11 सदस्य देशों के प्रतिनिधियों के मध्य शाला प्राचार्य संजीव शुक्ला ने प्रतिवेदन माध्यम से 150 वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम की रूपरेखा एवं आमंत्रण प्रस्ताव रखा गया जिसे सर्वसम्मति स्वीकार किया गया।

उल्लेखनीय है कि पूर्व में डॉ शुक्ला फ्रेंड्स की विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मीटिंग में भाग लेने एवं शिक्षा व्यवस्था की जानकारी लेने हेतु इंग्लैंड, आयरलैंड, वेल्स, ऑस्ट्रेलिया, तस्मानिया, एवं सिंगापुर आदि देशों का प्रवास कर चुके हैं।

कौशल विकास योजनांतर्गत प्रशिक्षण आयोजित

बैतूल। मप खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड जिला पंचायत बैतूल के तत्वाधान में कौशल विकास योजना अंतर्गत ट्रेड इलेक्ट्रीशियन का प्रशिक्षण आठनेर में आयोजित किया गया। जिसमें 25 प्रशिक्षणार्थियों को 600 घंटे (75 दिवसीय) प्रशिक्षण दिया गया। यह प्रशिक्षण प्रशांति एजुकेशन सेंटर आठनेर में आयोजित किया गया था। इस अवसर पर मुख्य अतिथि नगर परिषद अध्यक्ष मनोज जगताप, जनपद पंचायत आठनेर के मुख्य कार्यपालन अधिकारी जितेन्द्र सिंह ठाकुर, नगर परिषद आठनेर के सभापति अजय पोटफोडे, प्रभारी प्रबंधक सतीश कुमार सक्सेना मप्र खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड जिला पंचायत बैतूल उपस्थित रहे।

कलेक्टर व जिला पंचायत सीईओ ने ओलम्पियाड विद्यार्थियों को किया सम्मानित

बैतूल। राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल के निर्देशानुसार जिला शिक्षा केन्द्र बैतूल द्वारा जिला पंचायत के सभा कक्ष में मंगलवार को जिला स्तरीय ओलम्पियाड सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी तथा विशिष्ट अतिथि मुख्य कार्यपालन अधिकारी अक्षत जैन उपस्थित थे। सर्वप्रथम अतिथियों द्वारा मां सरस्वती के छायाचित्र पर पुष्प अर्पित कर दीप प्रज्वलित कर समारोह की शुरुआत की गई। इस दौरान कलेक्टर एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी द्वारा कक्षा 2 से 8वीं तक के विषयवार उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले एवं जिले में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले 32 छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। उनके मार्गदर्शी शिक्षकों को भी विशेष रूप से सम्मानित किया गया। सम्मान के रूप में विद्यार्थियों को ट्रैकसूट, कैप, स्कूल बैग, वॉटर बॉटल, टिफिन बॉक्स, कंपास बॉक्स, प्रमाण पत्र एवं शील्ड प्रदान किए गए। इस दौरान शिक्षकों को प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट किए गए। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि उनकी मेहनत और लगन ही उनकी सफलता की कुंजी है। उन्होंने बच्चों से आग्रह किया कि वे अपने दोस्तों को भी इस प्रकार की प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करें। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री जैन ने कहा कि सच्ची लगन और एकाग्रता से किसी भी लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

2745 आवासों में से 2665 पूर्ण, पीएम आवास 2.0 में आये 500 से अधिक आवेदन

पक्का मकान बनाने का सपना दे रहे हितग्राहियों को करना होगा पीएम आवास के लिए ऑनलाइन आवेदन

संजय द्विवेदी, बैतूल। पक्का मकान बनाने की सपना देख रहे लोग अब पीएम आवास योजना 2.0 के तहत आवेदन कर सकते है। इस बार आवेदन की प्रक्रिया ऑनलाइन अपनाई गई है। जिसके बाद आवेदन की फाइल भी नगर पालिका में जमा हो रही है। दरअसल वर्ष 2022 के बाद यह योजना बंद हो गई थी, उस समय जो योजना में आवास मंजूर हुए थे उसी पर अब तक काम चल रहा है। अब फिर से योजना मंजूर हुई है। पहले पीएम आवास में हितग्राही नगरपालिका में जाकर ऑफलाइन आवेदन करते थे। सभी दस्तावेज जमा किये जाते थे, लेकिन अब हितग्राहियों को ऑनलाइन आवेदन करना होगा। नगरपालिका के एई एवं पीएम आवास प्रभारी नीरज धुर्वे ने बताया कि जिन लोगों ने पहले ऑफलाइन आवेदन किये थे, उन्हें भी नये नियमों के तहत आवेदन ऑनलाइन करना होगा। नियमानुसार दस्तावेज जमा करने के बाद प्रक्रिया अनुसार पीएम आवास की स्वीकृति मिलेगी और आवास बनाने के लिए राशि प्राप्त होगी। वैसे जो लोग दस्तावेज लेकर नगरपालिका पहुंच रहे है, नपा द्वारा उनके ऑनलाइन आवेदन भरने में मदद की जा रही है। हालांकि नई योजना को लेकर आगे के आदेश का नगरपालिका को इंतजार है।

अब जाति प्रमाण पत्र, पार्षद की सील और रजिस्ट्री लगेगी- बार प्रधानमंत्री आवास योजना 2.0 में आवेदन करते समय वार्ड पार्षद की सील और हस्ताक्षर भी कराने होंगे। जिससे यह प्रमाणित हो सके कि आवेदन करने वाला व्यक्ति उसी वार्ड में कच्चे मकान में रहता है या उसके प्लॉट की रजिस्ट्री उसी स्थान की है। अब रजिस्ट्री, पट्टा आवेदक के नाम का ही होना चाहिए। पहले सहमति पत्र लगाकर भी स्वीकृति मिल जाती थी। लेकिन शासन ने नियमों में बदलाव करते हुए अब ऑनलाइन प्रक्रिया में आवेदक के नाम पर ही दस्तावेज होना जरूरी होगा। इस बार आवेदन के साथ आय प्रमाण-पत्र लगाना होगा, जिससे व्यक्ति की आय की जानकारी मिलेगी। जाति प्रमाण-पत्र और निवास प्रमाण-पत्र भी अनिवार्य किए हैं। निवास प्रमाण-पत्र से पता लगेगा कि व्यक्ति नगरपालिका क्षेत्र के ही वार्ड का निवासी है।

पात्रता संबंधी टीम करेगी जांच- पीएम आवास 2.0 के नियम में वैसे ज्यादा बदलाव नहीं हुए हैं। बताया जा रहा है कि बस अब ऑनलाइन प्रक्रिया आवेदक को करना है। तीन दस्तावेज अतिरिक्त मांगे गए हैं। पात्रता संबंधी जांच टीम द्वारा की जाएगी। जियो टैग कर फोटो खींचा जाएगा, उसके बाद स्वीकृति प्राप्त होगी। फाइल स्वीकृति उच्चाधिकारियों के पास पहले की तरह ही जाएगी। अभी प्रक्रिया प्रारंभिक चरण में है, आगामी दिशा निर्देशों के अनुसार बढ़ेगी। कुछ लोगों का आरोप है कि नगरपालिका क्षेत्र में ऐसे सैकड़ों हितग्राही है, जो पीएम आवास स्वीकृति का इंतजार कर रहे है, लेकिन उन्हें अभी पीएम आवास योजना शुरू होने की जानकारी नहीं है। जिससे हितग्राही आवेदन नहीं कर पा रहे है।

नगर पालिका नियमों का करेगी सख्ती से पालन

पूर्व में पीएम आवास में काफी गड़बड़ी की शिकायतें सामने आई थी। ऐसे में इस बार पीएम आवास के नियमों का सख्ती से पालन किया जायेगा। एक ही मकान में दूसरी मंजिल बनाने वालों, एक ही परिवार के कई सदस्यों, आवेदक के निवासी न होने की स्थिति में एवं अन्य नियम विरूद्ध स्थिति में आवेदक की जांच की जाएगी और अपात्र भी घोषित किया जाएगा। पट्टों की भी जांच होगी, जिस स्थान का पट्टा है, वहीं मकान बनाना होगा। नपा एई एवं पीएम आवास प्रभारी नीरज धुर्वे ने बताया कि अभी हितग्राही ऑनलाइन आवेदन कर रहे है। जिन्हें सूचीबद्ध किया जायेगा। पात्रता की जांच की जाएगी। उसके बाद स्वीकृति मिलने पर योजना का लाभ मिलेगा।

2665 आवास पूरे, 500 से अधिक आये आवेदन

प्रधानमंत्री आवास योजना अंतर्गत शहर में कुल 2745 आवासों को मंजूरी मिली थी, जिसमें से 2665 आवास पूरे हुए है। जबकि 80 आवासों का निर्माण प्रगतिरत होना बताया जाता है। वहीं पीएम आवास के द्वितीय चरण में 500 से अधिक आवेदन किये जा चुके है, जिसमें पुराने आवेदन भी शामिल है। इन आवेदनों को नगरपालिका द्वारा ऑनलाइन कराने के लिए हितग्राहियों को कहा जा रहा है। आवेदन करने के बाद हितग्राही आवास स्वीकृति को लेकर नगरपालिका पहुंच रहे है, लेकिन अभी शासन से आगामी निर्देश नहीं आने से नपा अधिकारी भी हितग्राहियों को आवास स्वीकृति के संबंध में ज्यादा जानकारी नहीं दे पा रहे है।

इनका कहना है -

हितग्राहियों को पीएम आवास के लिए ऑनलाइन आवेदन करने होगे। पीएम आवास 2.0 में कुछ नियम नियम बदले है। अब जाति प्रमाण पत्र भी लग रहा है। अभी तक नये-पुराने मिलाकर करीब 500 आवेदन आ चुके है।

- नीरज धुर्वे, एई, नगरपालिका बैतूल

पवित्र नगरी मुलताई की तीन शराब दुकानें हमेशा के लिए बंद

आबकारी अमले ने पहुंचकर कार्यवाही को दिया अंजाम, अवैध कारोबार पर रहेगी कड़ी नजर

बैतूल/मुलताई। वित्तीय वर्ष 2025-26 की शुरुआत होते ही शासन के निर्देश अनुसार आबकारी विभाग द्वारा पवित्र नगरी मुलताई में संचालित तीन शराब दुकाने हमेशा हमेशा के लिए बन्द किये जाने की कार्यवाही कर दी गई है। जिला आबकारी अधिकारी अंशुमान सिंह चढार ने बताया कि अधीनस्थ अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए गए हैं कि किसी भी स्थिति में पवित्र नगरी में शराब की अवैध खरीदी बिक्री न हो इसका विशेष ध्यान रखा जाए। यदि कोई अवांछित व्यक्ति अवैध शराब की खरीद फरोख्त करते पाया

जाता है तो उसके खिलाफ नियमानुसार सख्त कार्यवाही की जाए। जिला आबकारी अधिकारी अंशुमान सिंह चढार ने बताया कि शासन स्तर पर पवित्र नगरी मुलताई में तीन शराब दुकानों के संचालन बंद करने के निर्णय पूर्व में लिया गया था। मध्यप्रदेश राजपत्र क्रमांक 47 दिनांक 14 फरवरी 2025 के परिपालन में मुलताई नगर पालिका परिषद अंतर्गत संचालित कम्पोजिट शराब दुकान क्रमांक 1,2 एवं नागपुर नाका स्थित शराब दुकान क्रमांक 3 बंद करवा दी गई हैं। अब पवित्र नगरी में शराब बिक्री पूर्णत- प्रतिबंधित कर दी गई है। आबकारी निरीक्षक सुरेंद्र देवांगन को लिखित निर्देश जारी किए गए हैं कि पवित्र नगरीय क्षेत्र नगर पालिका मुलताई में अवैध मदिरा संग्रहण, धारण, विक्रय पर प्रभावी रूप से नियंत्रण रखे जाए। पवित्र नगरी में अधीनस्थ स्टाफ के साथ सतत गश्त एवं भ्रमण किया जाए। साथ ही अवैध सूचना या शिकायत प्राप्त होने पर त्वरित कार्यवाही किया जाना सुनिश्चित किया जाए। आवश्यक होने पर अधिकारियों को पुलिस विभाग का भी सहयोग लिए जाने के लिए निर्देशित किया गया है।

इनका कहना-

मध्य प्रदेश राजपत्र के परिपालन के अनुसार पवित्र नगरी मुलताई में संचालित सभी तीन दुकानें बन्द कराये जाने की कार्यवाही कर दी गई है। अधीनस्थ अधिकारियों को निर्देशित किया है कि अवैध शराब बिक्री के मामलों में तत्काल प्रभावी कार्यवाही की जाकर मुख्यालय को सूचित किया जाए।

-अंशुमान सिंह चढार,
जिला आबकारी अधिकारी बैतूल

30 मार्च से 30 जून तक चलेगा जल गंगा संवर्धन महाअभियान

वार्डवासियों ने ली तालाब को साफ रखने की जिम्मेदारी

बैतूल। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद बैतूल की नवांकुर संस्थाओं द्वारा चलाए जा रहे जल गंगा संवर्धन महाअभियान के तहत अभियान की शुरुआत काशी तालाब की सफाई से हुई। इसमें प्रथम दिवस नपाध्यक्ष श्रीमती पार्वतीबाई बारस्कर, मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के प्रदेश उपाध्यक्ष मोहन नगर, 75 कदम संस्था से हेमंत बबलू दुबे, नागरिक बैंक अध्यक्ष अतीत पवार एवं परिषद की जिला समन्वय प्रिया चौधरी, वरिष्ठ पत्रकार घनश्याम राठौर, संजय पप्पी शुक्ला, शैलेंद्र बिहरिया एवं प्रत्याशा संस्था की तुलिका पचौरी की उपस्थिति में परिषद की नवांकुर संस्थाओं प्रत्याशा, प्रदीपन, ग्रीन टाइगर्स, गुरुकृपा, भूपेंद्र महिला एवं ग्राम उत्थान एवं बैतूल को पॉलिथीन मुक्त बनाने का अभियान चलाने वाली संस्था 75 कदम के सदस्य उपस्थित थे। प्रथम दिवस तालाब के आसपास का कचरा हटाकर पानी के अंदर किनारे पर बह रही पॉलिथीन एवं निर्मालय सामग्री को हटाकर घाट की सफाई की गई। तीसरे दिन नपाध्यक्ष बैतूल पार्वतीबाई बारस्कर की उपस्थिति में जन अभियान परिषद बैतूल की टीम एवं नगर पालिका कर्मचारियों ने साथ मिलकर दूसरी तरफ के घाट की सफाई की एवं तालाब के किनारे रह रहे लोगों के साथ एक विचार संगोष्ठी का आयोजन किया, जिसमें तालाब को साफ रखना, अपने वार्ड को साफ रखना, तालाब के किनारे पर सफाई के निर्देश का बोर्ड एवं गंदगी करने वालों पर फाइन संबंधी विषय पर वार्डवासियों से चर्चा की गई। नगर पालिका अध्यक्ष ने वार्ड की समस्याओं बिजली, नाली, पानी की समस्याओं को दूर करने के लिए संबंधित नगर पालिका कर्मचारी एवं अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इस अवसर पर विभिन्न सामाजिक संस्थाएं 75 कदम 99 दिन, मां शारदा समिति, देवी अहिल्याबाई होलकर समिति, प्रत्याशा संस्था, प्रदीपन, ग्रीन टाइगर, गुरुकृपा, भूपेंद्र ग्राम उत्थान समिति के समाजसेवियों में हिमांशु सोनी, राजू गावंडे, इंदी सरदार, निमिश मालवीय, नीतू, सुशीला बोडखे, जयश्री देशमुख आदि उपस्थित थे।

सी.एम. राइज विद्यालय में विद्यार्थियों पर पुष्पवर्षा कर मनाया प्रवेश उत्सव, पाठ्य पुस्तकों का किया वितरण

बैतूल। लोक शिक्षण संचालनालय मध्यप्रदेश भोपाल के निर्देशानुसार 1 अप्रैल 2025 को सी.एम. राइज शासकीय कृषि उ.मा.वि. विद्यालय बैतूल-बाजार में विद्यार्थियों पर पुष्प की वर्षा कर एवं उन्हें तिलक लगाकर प्रवेश उत्सव मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ उपस्थित अतिथिगण, प्राचार्य एवं समस्त शिक्षकों के द्वारा सर्वप्रथम मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन कर किया गया। तत्पश्चात सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों का विद्यालय प्रवेश द्वार पर पुष्प वर्षा कर एवं तिलक लगाकर उनका स्वागत किया गया। विद्यालय के ऑडिटोरियम में आयोजित प्रवेश उत्सव कार्यक्रम में उपस्थित सभी गणमान्य नागरिक, पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष नरेंद्र शुक्ला, पीटीएम सदस्य श्रीमती अंजुम शाह, श्रीमती लतिका, पालक सुरेंद्र राठौर, श्री साकरे, श्री धोटे का पुष्प गुच्छ देकर एवं तिलक लगाकर स्वागत किया गया। इसके बाद विद्यार्थियों द्वारा भाषण गीत, गीत, कहानी आदि की प्रस्तुतियां दी गई। कार्यक्रम को उपस्थित अतिथिगणों द्वारा संबोधित कर विद्यार्थियों को उनके सुनहरे भविष्य निर्माण हेतु सुझाव दिए। कार्यक्रम को प्राचार्य द्वारा विद्यार्थियों को कहानी के माध्यम से कड़ी मेहनत कर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में उपस्थिति

अतिथिगण, पालकों द्वारा विद्यार्थियों को पाठ्य पुस्तकों का वितरण भी किया गया। विद्यालय में आयोजित विभिन्न गतिविधियों को शिक्षक पुरुषोत्तम देशमुख द्वारा प्रतिवेदन के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। विद्यालय की पूर्व छात्रा तृप्ती मालवीय द्वारा भी विद्यालय में किए गए कार्यों को लेकर अपने विचार प्रस्तुत किए। विद्यालय में प्रवेश उत्सव के दौरान विद्यार्थियों, अतिथियों आदि ने सेल्फी पाइंट पर सेल्फी भी ली। यह सेल्फी पाइंट आकर्षण का केंद्र रहा। कार्यक्रम में स्व. बी.एस. पाटिल की स्मृति में उनकी पत्नी गोदावरी पाटिल, पुत्र डॉ. विजय पाटिल, धर्मपत्नि श्रीमती मनीषा पाटिल द्वारा विद्यालय में अध्ययनरत निर्धन विद्यार्थियों को शिक्षा के प्रति जागरूक करने हेतु स्टेशनरी एवं स्कूल बैग प्रदान किया गया। मंच संचालन रमेश कुमार पिंजारे द्वारा किया गया एवं आभार श्रीमती सुधा कौशिक द्वारा व्यक्त किया गया। शाला परिवार ने समस्त विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना की है।

संविदा स्वास्थ्य कर्मचारी संघ ने चरणबद्ध आंदोलन का किया शंखनाद

7 अप्रैल से कर्मचारी कार्यालय में काली पट्टी बांधकर विरोध स्वरूप करेंगे कार्य

बैतूल। लंबित मांगों को पूर्ण नहीं किए जाने के विरोध में संविदा स्वास्थ्य कर्मचारी संघ एक बार पुन- आंदोलन की राह पर है। इसी के तहत मंगलवार को संविदा स्वास्थ्य कर्मचारी संघ ने प्रेस वार्ता आयोजित कर अपने चरणबद्ध आंदोलन का शंखनाद किए जाने की जानकारी दी। प्रेसवार्ता के माध्यम से संविदा स्वास्थ्य कर्मचारी संघ के जिला अध्यक्ष डॉ.गोविंद साहू ने बताया कि अपने चरणबद्ध आंदोलन के तहत आगामी 7 अप्रैल से 16 अप्रैल तक कार्यालय में समस्त स्वास्थ्य कर्मचारियों द्वारा विरोध स्वरूप काली पट्टी बांधकर कार्य करेंगे। इसके बाद 16 अप्रैल को रैली निकालकर जिला स्तर पर मुख्यमंत्री के नाम कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा जाएगा। इसके बाद भी यदि मांगों को पूर्ण नहीं किया गया तो 22 अप्रैल से प्रदेश के समस्त 32 हजार संविदा स्वास्थ्य कर्मचारी अनिश्चितकालीन हड़ताल पर चले जाएंगे। इसकी संपूर्ण जवाबदारी शासन की रहेगी। संविदा स्वास्थ्य कर्मचारी संघ के एकनाथ ठाकुर ने बताया कि चरणबद्ध आंदोलन के लिए एक बार पुन- सभी कर्मचारी मजबूर है। इस अवसर पर संघ के कोषाध्यक्ष दीपक झारिया, दसन पंद्राम, योगेंद्र दवंडे, अजय नागले, कल्पेश साहू, मनीष सुजाने, तापी चढ़ोकार, बल्लु सोनी शाहिद अन्य संविदा स्वास्थ्य कर्मचारी उपस्थित रहे।

संघ की यह है प्रमुख मांगे - विभाग में रिक्त पदों पर संविलियन किया जाकर नियमित किया जाए, पूर्व से दी जा रही सुविधाओं में ईएल एवं मेडिकल को पृथक कर दिया है, अनुबंध प्रथा को पूरी तरह से समाप्त नहीं किया गया है। अप्रैल जैसी कुरीति को यथावत रखा गया है। सेवानिवृत्ति की आयु में 65 वर्ष से घटाकर 62 वर्ष किया गया है। एनपीएस, ग्रेच्युटी, स्वास्थ्य बीमा एवं डीए की सुविधा से वंचित रखा गया है। शासन द्वारा समकक्षता (वेतन विसंगति) का निर्धारण गलत तरीके से किया गया है, जिसमें पुन- विचार कर संशोधन किया जाए। निष्कासित सपोर्ट स्टाफ एवं मलेरिया एमपीडब्ल्यू की एनएचएम में वापसी की जाए।

भारतीय मजदूर संघ ने आंदोलन का किया समर्थन

संविदा स्वास्थ्य कर्मचारी संघ की मांगों को जायज बताते हुए भारतीय मजदूर संघ के विभाग प्रमुख विनय डोंगरे, जिलामंत्री पंजाब गायकवाड एवं संविदा महा संघ के महामंत्री ऋषभ जैन, अध्यक्ष डैनी ने आंदोलन को नैतिक समर्थन दिया है। संविदा स्वास्थ्य कर्मचारी संघ के कोषाध्यक्ष दीपक झारिया, दसन पंद्राम ने बताया कि राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अन्तर्गत 20 वर्षों से अधिक समय से कार्यरत लगभग 32 हजार कर्मचारी प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाएं सुचारू रूप से देते आ रहे हैं। कोरोनाकाल जैसे गंभीर महामारी में भी अपने परिवार एवं जीवन की परवाह किए बगैर सेवाएं दी हैं। इन्हीं सेवा-भाव को दृष्टिगत रखते हुए तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा 4 जुलाई 2023 को भोपाल में महापंचायत बुलाकर संविदा कर्मचारियों के लिए अनेक घोषणाएं की थी। जिसके परिपालन में सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा 23 जुलाई 2023 को संविदा कर्मचारियों के लिए एक नीति की सौगात दी गई, परन्तु राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन भोपाल के द्वारा संविदा कर्मचारियों को दी गई सुविधाओं में कटौती की गई है।

समस्त विभाग नवीन वित्तीय लक्ष्यों को शत-प्रतिशत हासिल करें: कलेक्टर

समयावधि के प्रकरणों के निराकरण में कोताही न बरतें

बैतूल। सभी विभागीय अधिकारी अपने विभाग अंतर्गत निर्धारित नवीन वित्तीय लक्ष्यों को शत प्रतिशत हासिल करें। हर महीने निर्धारित वार्षिक लक्ष्य का 15 प्रतिशत पूर्ति की जाए। यह निर्देश कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने सोमवार को कलेक्ट्रेट में आयोजित समय सीमा की बैठक में दिए। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने राजस्व विभाग की समीक्षा कर आधार लिंकिंग, नक्शा तरमीम, स्वामित्व, फार्मर रजिस्ट्री, अभिलेख दुरुस्ती इत्यादि राजस्व प्रकरणों का भी 100 फीसदी निराकरण कराएं। उन्होंने अधीनस्थ कार्यालयों के निरीक्षण का रोस्टर जारी करने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने सभी विभागों को निर्देश दिये कि कोई भी विभाग अब पूर्व की तरह हार्ड कॉपी में फाइल का संचालन नहीं करेगा। सभी विभाग ई ऑफिस व्यवस्था के तहत फाइल्स का संचालन करें। सभी अपने कार्यालय में ई ऑफिस प्रणाली को गति प्रदान करें। उन्होंने कहा कि जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत जल स्त्रोतों के संरक्षण और संवर्धन अभियान की गतिविधियां सतत जारी रहे। अभियान के कामों की विस्तृत जानकारी निर्धारित पोर्टल पर भी अपलोड करें। उन्होंने निर्देशित किया कि सभी एसडीएम और तहसीलदार अपने क्षेत्र में राजस्व वसूली अभियान निरंतर जारी रखें। कॉलोनाइजर, मैरिज लॉन, वेयरहाउस, विभाग और उपक्रमों से राशि वसूली की जाएं।

उन्होंने कहा कि सभी एसडीएम अपने क्षेत्र में सभी विभागीय योजनाओं के क्रियान्वयन में लीडरशिप की भूमिका निभाए। अपने क्षेत्र में आयुष्मान कार्ड बनाने की कार्य की सतत मॉनिटरिंग करें। कलेक्टर ने बैठक में खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग के स्टॉक सत्यापन सहित अन्य योजनाओं की भी विस्तार से समीक्षा की। उन्होंने संतोषजनक प्रगति नहीं होने पर अभी फूड इंस्पेक्टर के वेतन आहरण पर रोक लगाने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने बैठक में समयावधि के प्रकरणों की भी विभागवार समीक्षा की। उन्होंने तहसीलदार मुलताई के टीएल प्रकरणों का समय पर निराकरण नहीं करने पर वेतन आहरण पर रोक लगाने के निर्देश दिए। बैठक में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री अक्षत जैन, अपर कलेक्टर राजीव नंदन श्रीवास्तव सहित सभी विभागों के जिला अधिकारी उपस्थित रहें।

भाजपा की आगामी कार्ययोजना को लेकर जिला बैठक आज

धार। भारतीय जनता पार्टी जिला संगठन की आगामी कार्य योजना को लेकर जिला कामकाजी बैठक बुधवार 2 अप्रैल को आयोजित की गई है जिसमें भाजपा जिला संगठन प्रभारी श्याम बंसल भाजपा जिला अध्यक्ष निलेश भारती बैठक को संबोधित करेंगे।

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि धार जिला संगठन की बैठक में धार विधानसभा, बदनावर और सरदारपुर विधानसभा क्षेत्र के अपेक्षित भाजपा नेता कार्यकर्ता शामिल होंगे अपेक्षित श्रेणी इस प्रकार हैं भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य वर्तमान और पूर्व विधायक भाजपा पूर्व जिला अध्यक्ष मोर्चा प्रदेश पदाधिकारी पूर्व निगम मंडल अध्यक्ष जिला पदाधिकारी, मोर्चा जिला अध्यक्ष / महामंत्री मंडल अध्यक्ष / मंडल प्रभारी आजीवन सहयोग निधि जिला प्रभारी, सह प्रभारी जिला पंचायत अध्यक्ष /उपाध्यक्ष जनपद अध्यक्ष /उपाध्यक्ष नगर पालिका /नगर परिषद अध्यक्ष प्रकोष्ठ जिला संयोजक सहित विशेष रूप से आमंत्रित भाजपा नेता मौजूद रहेंगे।

इंदौर में पत्रकारिता का तीन दिवसीय महाउत्सव 12 से 14 अप्रैल तक जाल सभागृह में होगा

देवास-इंदौर। स्टेट प्रेस क्लब, म.प्र.आगामी 12, 13 एवं 14 अप्रैल 2025 को इंदौर में पत्रकारिता का तीन दिवसीय महा उत्सव आयोजित करने जा रहा है । बीते दिनों इस सत्रहवें भारतीय पत्रकारिता महोत्सव का निमंत्रण मुख्यमंत्री मोहन यादव जी को स्टेट प्रेस क्लब, म.प्र. के अध्यक्ष प्रवीण खारीवाल एवं टीम द्वारा भेंट किया गया। इस महा उत्सव में देश भर के विद्वान वक्ता महत्वपूर्ण विषयों पर अपनी बात रखेंगे।

स्टेट प्रेस क्लब, म.प्र. के अध्यक्ष प्रवीण खारीवाल- एवं महोत्सव के संयोजक सुदेश तिवारी ने बताया कि मूर्धन्य संपादकों की स्मृति में आयोजित महोत्सव इस मर्तबा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर केंद्रित है। महोत्सव में कुल नौ सत्रों में विभिन्न सम-सामयिक मुद्दों पर देश के जाने-माने पत्रकार अपने विचार रखेंगे। महोत्सव के दौरान देश-प्रदेश एवं स्थानीय मीडियाकर्मियों का सम्मान किया जायेगा एवं देश भर के प्रमुख प्रेस क्लबों की साझा बैठक भी होगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पत्रकारिता महोत्सव की सफलता के लिए शुभकामनाएं प्रेषित की। पत्रकारिता से संबद्ध और पत्रकारिता में रुचि रखने वालों को इस गरिमापूर्ण आयोजन का लाभ लेना चाहिये ।

जिला पंचायत सीईओ ने जनसुनवाई में सुनीं नागरिकों की समस्याएं

बैतूल। जिला पंचायत सीईओ अक्षत जैन ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित जनसुनवाई के दौरान नागरिकों की समस्याएं सुनीं। इस दौरान उन्होंने अनेक समस्याओं का निराकरण मौके पर ही किया। जनसुनवाई में कुल 62 आवेदन प्राप्त हुए। जिला पंचायत सीईओ श्री जैन ने प्राप्त आवेदनों का गंभीरता पूर्वक निराकरण किए जाने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। जनसुनवाई में आमला तहसील के ग्राम ससुन्द्रा निवासी बेबी सुरजेकर ने आर्थिक सहायता दिलाए जाने के लिए आवेदन दिया। आवेदिका ने बताया कि 18 अगस्त 2024 को उनके पति की बीमारी से मृत्यु हो गई थी। इसके बाद उन्होंने आर्थिक सहायता के लिए आवेदन किया था, लेकिन उन्हें अब तक कोई आर्थिक सहायता नहीं मिली है। प्राप्त आवेदन पर जिला पंचायत सीईओ श्री जैन ने संबंधित अधिकारी को प्रकरण के निराकरण के निर्देश दिए। बैतूल तहसील के ग्राम बाजपुर निवासी प्रमीला ने भूमि पर जबरन अवैध कब्जा किए जाने की शिकायत की। जिस पर जिला पंचायत सीईओ श्री जैन ने बैतूल तहसीलदार को प्रकरण के निराकरण के निर्देश दिए। भैंसदेही तहसील के ग्राम धामन गांव निवासी नारायण अमरघड़े ने लोन चुकाने के बाद भी भूमि को बंधक से नहीं हटाए जाने की शिकायत की। जिला पंचायत सीईओ श्री जैन ने एलडीएम को नियम अनुसार कार्रवाई के जाने के निर्देश दिए।

हॉकी प्रशिक्षण खिलाड़ियों से मिले एसडीएम

नरसिंहपुर । हॉकी स्टेडियम में चल रहे ग्रीष्मकालीन हॉकी प्रशिक्षण शिविर में एसडी एम मणिन्द्र कुमार सिंह का आगमन हुआ ।उन्होंने हॉकी प्रशिक्षण शिविर में भाग ले रहे कोच व खिलाड़ी बच्चों से मुलाकात की । श्री सिंह का स्वयं हॉकी खेल से बड़ा लगाव रहा हैं,आपने आज की नई हॉकी स्टिक के संबंध में जानकारी, हॉकी के नये नियम की जानकारी, हॉकी स्टेडियम का एतिहास , हॉकी अकादमी के खिलाडियों की उपलब्धियों के बारे मैं जानकारी ली एवं हॉकी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे सभी नवोदित बच्चों से परिचय प्राप्त कर प्रसन्ता जाहिर की,अकादमी के कोच प्रवीण सिंघई व शिवाम प्रधान ने मैदान पर आने बाली समस्या से अवगत कराया एवं बताया कि वर्तमान में चावरा विद्यापीठ, नरसिंह पब्लिक व अन्य स्कूलो के बच्चे निःशुल्क प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है सभी नवोदित खिलाड़ियों को हॉकी स्टिक, बॉल उपलब्ध करायी जा रही है मुख्य रूप से व्यक्तित्व विकास पर भी ध्यान दिया जा रहा है। एसडी एमश्री सिंह ने बच्चों को बताया कड़ी मेहनत से ही सफलता प्राप्त होती हैं।

परिवार नियोजन क्षतिपूर्ति योजना की बैठक 2 अप्रैल को

नरसिंहपुर। परिवार नियोजन क्षतिपूर्ति योजना के स्थाई साधन महिला एवं पुरूष नसबंदी अपनाने के उपरांत हुई प्रतिकूल घटनायें जैसे मृत्यु, रोग/ अक्षमता अथवा शल्योत्तर जटिलता संबंधी प्रकरणों के निराकरण के लिए जिला परिवार नियोजन क्षतिपूर्ति योजना की बैठक कलेक्टर की अध्यक्षता में आयोजित की जायेगी। यह बैठक दो अप्रैल को सायं 4 बजे कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित की जायेगी।

जैन धर्म के उपदेशों को जन-जन तक पहुंचा रहे आचार्य विशुद्ध सागर जी मसा

धार। दिगंबर जैन समाज धार में इस सदी के सबसे बड़े संत आचार्य विशुद्ध सागर जी का 18 आचार्य पद दिवस ग्रहण समारोहपूर्वक संत भवन में मनाया। इस गरिमा मय समारोह को पांच मुनिश्री एवं माता जी ने अपना सानिध्य प्रदान किया। सभी संतगणों ने एक स्वर में कहा कि आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज सदियों के सबसे बड़े संत हैं। वे जैन धर्म के सिद्धांतों, मोक्ष कल्याणक का मार्ग बताते है, उसके उपदेशों को जन-जन तक पहुंचा रहे है। कार्यक्रम में जो संतगण शामिल हुए उनमें प्रशम सागर जी मसा, साध्य सागर जी मसा, अर्घ्यसागर जी मसा, जयेंद्र सागर जी मसा, विश्वामित्र सागर जी मसा, चंद्रमती

माताजी शामिल थे। समारोह में समाजजनों के अतिरिक्त दूर-दूराज स्थानों से भी बड़ी संख्या में भक्तगण शामिल हुए। मीडिया प्रभारी सुभाष जैन ने बताया कि समारोह का प्रारंभ दीप प्रज्जवलन से हुआ। मंगलाचरण व भजन आदि भी हुए। समाज के अध्यक्ष श्रेणिक गंगवाल एवं अन्य पदाधिकारी, दिगंबर जैन महिला मंडल के पदाधिकारी ने स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन सचिव संजय छाबड़ा ने किया। यह प्रथम अवसर था जब इतने संतों के सानिध्य में पद दिवस समारोह हुआ। समारोह में महिलाओं के विभिन्न ग्रुप बनाकर नृत्य गान के साथ गुरु पूजन भी किया।

दादाओं की पुलिस ने निकाली हेकड़ी

इलाके से निकलने वालों से कर रहे थे रूपयों की वसूली, भेजा जेल

देवास पुलिस कप्तान पुनीत गेहलोद द्वारा अपराधियों पर अंकुश लगाने के अभियान में छोटी बड़ी घटनाओं की जानकारी मिलते ही अब पुलिस सक्रिय होकर अपराधियों की तुरंत हेकड़ी निकाल रही है ।

इसी कड़ी में दिनांक 30.03.2025 को फरियादी जितेन्द्र सोलंकी निवासी बद्रीधाम नगर देवास ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि दिनांक 30.03.25 को जब वह कैलादेवी चौराहा से अपने घर आ रहा था तभी हरिनारायण,अंकुर और हिमांशु रास्ते मे मिले और उन्होने अपनी मोटरसाईकल को मेरी मोटरसाईकल के सामने अड़ा दी और बोला कि आज रविवार है हम इधर के दादा है अगर इस रास्ते से निकलना है तो हमे हफ्ता देना पड़ेगा ।

फरियादी ने हफ्ता देने से मना किया तो तीनों नें गाली गलोज कर फरियादी के साथ मारपीट की एवं जान से मारने की धमकी दी । रिपोर्ट पर से थाना औद्योगिक क्षेत्र पर अपराध क्रं 331/2025 धारा 119(1),296,115(2)(3),126(2),3(5) बीएनएस का पंजीबद्ध कर विवेचना मे लिया गया । आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी हेतु पुलिस अधीक्षक देवास श्री पुनीत गेहलोद के द्वारा निर्देशित किया गया था ।

जिस पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (शहर) श्री जयवीर सिंह भदौरिया के मार्गदर्शन में नगर पुलिस अधीक्षक देवास श्री दीशेष अग्रवाल के निर्देशन में थाना प्रभारी औद्योगिक क्षेत्र श्री शशिकांत चौरसिया के नेतृत्व में पुलिस टीम ने हफ्ता वसूली करने वाले आरोपी 01.हरिनारायण पिता कृष्णकांत यादव निवासी गंगा नगर देवास 02.अंकुर पिता दिनेश प्रजापत उम्र 21 साल निवासी विक्रम मार्ग नयापुरा देवास 03.हिमांशु पिता राजेश नागोर उम्र 20 साल निवासी गंगा नगर देवास को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय के समक्ष पेश कर आरोपियों को जेल भेजा गया ।

सराहनीय कार्य - उक्त सराहनीय कार्य में थाना प्रभारी औद्योगिक क्षेत्र श्री शशिकांत चौरसिया,प्रआर विनोद,आर नरेन्द्र की सराहनीय भूमिका रही ।

भारतीय गौवंशीय गायों एवं उन्नत नस्ल की गाय के लिए पुरस्कार योजना के लिए पंजीयन

पशुपालक 4 अप्रैल तक करा सकते हैं पंजीयन

नरसिंहपुर। भारतीय गौवंशीय गायों के संरक्षण और प्रोत्साहन के लिए विशेष पुरस्कार योजना की घोषणा की गई है। इस योजना के तहत जिले के पशुपालक 2 अप्रैल से 4 अप्रैल 2025 तक पंजीयन करा सकते हैं। उच्च उत्पादकता वाली गायों को विशेष पुरस्कार दिया जायेगा। जिला स्तर पर प्रथम पुरस्कार 51 हजार, द्वितीय पुरस्कार 21 हजार एवं तृतीय पुरस्कार 11 हजार रुपये और राज्य स्तर पर प्रथम पुरस्कार दो लाख रुपये, द्वितीय पुरस्कार एक लाख रुपये एवं तृतीय पुरस्कार 50 हजार रुपये दिया जायेगा। अधिक जानकारी के लिए पशु पालन विभाग नरसिंहपुर, विभागीय वेबसाइट पर जाकर और नजदीकी पशु चिकित्सा केन्द्र से सम्पर्क किया जा सकता है। उप संचालक पशु पालन एवं डेयरी विभाग नरसिंहपुर ने बताया कि इस योजना के तहत दूध उत्पादन मूल्यांकन का कार्य 5 एवं 6 अप्रैल को किया जायेगा, जिसके आधार पर योग्य गायों को पुरस्कृत किया जायेगा। तीन समय के दूध उत्पादन पर उच्च उत्पादकता वाली गायों को विशेष पुरस्कार दिया जायेगा। उन्होंने बताया कि इस योजना का मुख्य उद्देश्य देशी नस्लों को बढ़ावा देना और उच्च दूध उत्पादकता को प्रोत्साहित करना है।

काइनएंथ्रोपोमेट्री पर आईएसएके लेवल 1 कोर्स और कार्यशाला का आयोजन

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में एनाटॉमी विभाग ने काइनएंथ्रोपोमेट्री पर तीन दिवसीय आईएसएके (इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर द एडवांसमेंट ऑफ काइनएंथ्रोपोमेट्री) लेवल 1 कोर्स और कार्यशाला शुरू की है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य काइनएंथ्रोपोमेट्री अनुसंधान को बढ़ावा देना और चिकित्सा एवं स्वास्थ्य के विभिन्न क्षेत्रों में इसके महत्व को रेखांकित करना है। काइनएंथ्रोपोमेट्री एक तरीका है, जिसमें हम इंसान के शरीर के आकार और संरचना का माप लेते हैं। इसमें शरीर के हिस्सों जैसे ऊंचाई, वजन, मांसपेशियों की मात्रा, हड्डियों का आकार, और शरीर में वसा की स्थिति का माप किया जाता है। यह खासतौर पर खेल, स्वास्थ्य और फिटनेस में काम आता है, ताकि हम यह जान सकें कि किसी व्यक्ति का शरीर कैसे काम कर रहा है और उसे कैसे और बेहतर बनाया जा सकता है। प्रो. सिंह ने काइनएंथ्रोपोमेट्री के महत्व को बताते हुए कहा, काइनएंथ्रोपोमेट्री शरीर की संरचना को समझने में मदद करता है, जिससे डॉक्टरों को बेहतर निदान, इलाज और रोकथाम की योजनाएं बनाने में मदद मिलती है। इस कोर्स और इसके ज्ञान को बढ़ावा देना जरूरी है, ताकि हम अपने रोगियों के लिए अधिक व्यक्तिगत और प्रभावी स्वास्थ्य देखभाल दे सकें। कार्यक्रम में कोर्स की आयोजन अध्यक्ष और एनाटॉमी विभाग की प्रमुख, प्रो. (डॉ.) बर्था एडी रथिनम उपस्थित थी। आईएसएके लेवल 1 कोर्स मानव शारीरिक संरचना के विभिन्न पहलुओं का वैज्ञानिक अध्ययन करता है, जो चिकित्सा, खेल चिकित्सा, शारीरिक फिटनेस, फिजियोथेरेपी और शरीर रचना विज्ञान जैसे क्षेत्रों में बहुत महत्वपूर्ण है। इस कार्यक्रम में एम्स बिलासपुर, एम्स कल्याणी, जीएमसी भोपाल, जीआरएमसी ग्वालियर, सफदरजंग अस्पताल दिल्ली, कोलकाता और अमरावती (महाराष्ट्र) से संकाय सदस्य और रेजिडेंट डॉक्टर शामिल हो रहे हैं। ये सदस्य सैद्धांतिक और व्यावहारिक सत्रों में भाग ले रहे हैं।

डॉ. त्रिलोकि प्रसाद, सहायक प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आरआईई भोपाल) और आईएसएके लेवल 3 प्रमाणित एंथ्रोपोमेट्रिस्ट प्रशिक्षक, और डॉ. कुसुम गांधी, एनाटॉमी विभाग की अतिरिक्त प्रोफेसर और आईएसएके लेवल 2 एंथ्रोपोमेट्रिस्ट, इस कोर्स के प्रमुख संसाधन व्यक्ति हैं। इस कोर्स में प्रतिभागी शरीर संरचना मापने के कौशल प्राप्त करेंगे और काइनएंथ्रोपोमेट्री और शरीर संरचना के सिद्धांतों को समझेंगे। यह कोर्स 3 अप्रैल 2025 को समाप्त होगा, और जो प्रतिभागी आईएसएके लेवल 1 कोर्स को सफलतापूर्वक पूरा करेंगे, उन्हें प्रमाणपत्र प्रदान किए जाएंगे।

कैलादेवी मंदिर में आज से बृजरत्ना वंदनाश्री द्वारा दृष्यमय भागवत कथा

देवास। चैत्र नवरात्रि के पर्व पर कैलादेवी मंदिर उत्सव समिति द्वारा धार्मिक अनुष्ठानों के साथ आज 2 अप्रैल से 8 अप्रैल तक अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भागवताचार्य बृज रत्ना वंदना श्री द्वारा दोपहर 3 बजे से श्रीमद भागवत कथा प्रारंभ होगी। कथा में वृंदावन के 40 कलाकारों द्वारा कथा प्रसंग की प्रस्तुति दी जाएगी। यह जानकारी कैलादेवी मंदिर में आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान पत्रकारों से चर्चा करते हुए वंदनाश्री ने दी। आपने आध्यात्मिक कथा के महत्व को प्रकट किया। पत्रकारों का अभिवादन स्वागत समिति अध्यक्ष दुर्गेश अग्रवाल ने किया। समिति संयोजक रायसिंह सेंधव ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए बताया कि 2 अप्रेल से 8 अप्रेल तक वंदनाश्री द्वारा होने वाली कथा में वृंदावन की अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त 40 कलाकारों द्वारा अनूठी प्रस्तुति दी जाएगी। 7 अप्रेल को रात्रि 8 बजे अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन होगा साथ ही इस दौरान भव्य भजन संध्या का भी आयोजन रखा गया है। इस वर्ष भागवत कथा मंदिर परिसर में होने जा रही है। प्रेस क्लब अध्यक्ष ललित शर्मा एवं आयोजक मन्नुलाल गर्ग ने समिति एवं प्रेस परिवार की ओर से वंदना श्री को चुनरी ओढ़ाकर स्वागत किया। प्रेस वार्ता में दीपक गर्ग, हितेश गर्ग, मोहन श्रीवास्तव, रमण शर्मा सहित समिति के पदाधिकारी उपस्थित थे। प्रेस वार्ता का संचालन चेतन उपाध्याय ने किया तथा आभार जयेश गर्ग ने माना।

भगवा ध्वज का अपमान हिंदू समाज बर्दाश्त नहीं करेगा

अंबेडकर चौक पर भगवा ध्वज को तोड़कर फेंका हिंदू सेना ने दर्ज कराई एफआईआर

बैतूल। बैतूल में रामनवमी की तैयारियों के बीच एक बड़ी घटना सामने आई है, जिसने हिंदू समाज की भावनाओं को आहत कर दिया है। शहर में बीते एक सप्ताह से राष्ट्रीय हिंदू सेना के कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों द्वारा प्रमुख मार्गों को भगवा ध्वज, बैनर और तोरण से सजाया जा रहा था। हर साल की तरह इस बार भी हिंदू सेना द्वारा रामनवमी पर भव्य शोभायात्रा निकाली जानी है, जिसके चलते पूरे शहर को भगवामय बनाया जा रहा था। इसी क्रम में बैतूल नगर के अंबेडकर चौक पर भी भगवा ध्वज लगाए गए थे, लेकिन बीती रात अज्ञात असामाजिक तत्वों ने इन झंडों को तोडक़र फेंक दिया। जैसे ही यह खबर फैली, हिंदू समाज में आक्रोश फैल गया। मौके पर राष्ट्रीय हिंदू सेना के प्रदेश अध्यक्ष दीपक मालवीय समेत संगठन के कई प्रमुख पदाधिकारी पहुंचे। पुलिस भी तुरंत मौके पर पहुंची और मामले की जांच शुरू कर दी। इस घटना के बाद हिंदू सेना के कार्यकर्ता और पदाधिकारी

आक्रोशित हो गए। प्रदेश अध्यक्ष दीपक मालवीय ने इसे हिंदू समाज की धार्मिक भावनाओं पर हमला बताया। उन्होंने कहा कि अज्ञात असामाजिक तत्वों द्वारा यह कृत्य हिंदू विरोधी मानसिकता को दर्शाता है। उन्होंने पुलिस से मांग की कि आरोपी को जल्द से जल्द गिरफ्तार कर कड़ी कार्रवाई की जाए।

अज्ञात के खिलाफ एफआईआर दर्ज- इस मामले में कोतवाली थाने में अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली गई है। पुलिस सीसीटीवी कैमरों की मदद से आरोपी की तलाश कर रही है। हिंदू सेना ने साफ कर दिया है कि हिंदू समाज अपने धर्म और आस्था का अपमान सहन नहीं करेगा और जल्द से जल्द दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग करेगा। घटना के विरोध में राष्ट्रीय हिंदू सेना के प्रदेश अध्यक्ष दीपक मालवीय, प्रदेश संयोजक पवन मालवीय, प्रांत सह संगठन मंत्री शुभम इगले, तहसील युवा उपाध्यक्ष जयत सचिन विश्वकर्मा, प्रखंड मंत्री अरविंद मासोदकर सहित कई पदाधिकारी मौजूद रहे।

एसोसिएशन ऑफ कोलन एंड रेक्टल सर्जन्स ऑफ इंडिया का 28वां इंस्ट्रक्शनल कोर्स और एफएसीआरएसआई परीक्षा

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में जनरल सर्जरी विभाग द्वारा एसोसिएशन ऑफ कोलन एंड रेक्टल सर्जन्स ऑफ इंडिया का 28वां इंस्ट्रक्शनल कोर्स और फेलोशिप ऑफ द एसोसिएशन ऑफ कोलोन एंड रेक्टल सर्जन्स ऑफ इंडिया परीक्षा 2 अप्रैल से 6 अप्रैल 2025 तक आयोजित की जाएगी। तीन दिवसीय इस इंस्ट्रक्शनल कोर्स में कोलोरेक्टल सर्जरी के क्षेत्र में नवीनतम तकनीकों पर आधारित वर्कशॉप आयोजित की जाएगी। पहले दिन सर्जिकल स्टेपलर्स पर, दूसरे दिन स्टोमा एप्लायंसेज पर, और तीसरे दिन प्रोक्टोलॉजी में लेजर के उपयोग पर कार्यशालाएं आयोजित की जाएंगी। इन सत्रों में विशेषज्ञ डॉक्टरों द्वारा प्रतिभागियों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान किया जाएगा। देश और विदेश के जाने-माने कोलोरेक्टल सर्जन्स और विशेषज्ञ इस कार्यक्रम में अपने अनुभव साझा करेंगे। कोलोरेक्टल सर्जन्स वे विशेषज्ञ डॉक्टर होते हैं जो बड़ी आंत (कोलन), मलाशय (रेक्टम) और गुदा (एनस) से जुड़ी बीमारियों का निदान और इलाज करते हैं। इंस्ट्रक्शनल कोर्स के बाद, एसीआरएसआई फैलोशिप प्राप्त करने के इच्छुक उम्मीदवारों को कड़ी परीक्षा प्रक्रिया से गुजरना होगा। पहले दिन, उम्मीदवारों का मूल्यांकन बहुविकल्पीय प्रश्न लघु और विस्तृत उत्तर वाले प्रश्नों के साथ-साथ टेबल वाइवा के माध्यम से किया जाएगा। दूसरे दिन, उनका मूल्यांकन दो लघु केस स्टडी और एक विस्तृत केस स्टडी के माध्यम से किया जाएगा। एम्स भोपाल चिकित्सा शिक्षा को बढ़ावा देने और बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के लिए प्रतिबद्ध है। यह कार्यक्रम कोलोरेक्टल सर्जरी के क्षेत्र में ज्ञान और कौशल के आदान-प्रदान के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करेगा। प्रो. सिंह ने इस कार्यक्रम के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा, इस प्रतिष्ठित कोर्स और परीक्षा की मेजबानी करना चिकित्सा शिक्षा और सर्जिकल विशेषज्ञता को आगे बढ़ाने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इस तरह के कार्यक्रम न केवल डॉक्टरों को नवीनतम तकनीकों की जानकारी देते हैं, बल्कि समाज के व्यापक हित में बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में भी सहायक होते हैं।

जननी सुरक्षा योजना तथा मुख्यमंत्री श्रमिक सेवा प्रसूति सहायता योजना के लिए हितग्राही करें समग्र आईडी को अपडेट

बैतूल। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.रविकांत उइके ने बताया कि गर्भवती महिलाओं तथा शिशुओं के नामवार पंजीकरण, बेहतर मॉनिटरिंग के लिए जननी सुरक्षा योजना तथा मुख्यमंत्री श्रमिक सेवा प्रसूति सहायता योजना के इंटीग्रेटेड पोर्टल के द्वारा आधार बेस्ड भुगतान प्रणाली के माध्यम से अब नवीन अनमोल एप्लीकेशन तथा आरसीएच पोर्टल का निर्माण किया गया है, जिसका जिले में विभागीय प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

सीएमएचओ डॉ.उइके ने जननी सुरक्षा योजना तथा मुख्यमंत्री श्रमिक सेवा प्रसूति सहायता योजना का भविष्य में लाभ प्राप्त करने वाले हितग्राहियों से आग्रह किया है कि हितग्राही महिला अपनी समग्र आईडी को पति के साथ जोडे, ई-केवाईसी को अपडेट करें एवं समग्र को ई-केवाईसी से जोड़े। डीबीटी बैंक के साथ लिंक करें, ताकि प्रोत्साहन राशि हितग्राही के खाते में भेजे जाने में किसी प्रकार की कोई समस्या न आए। जिला कार्यक्रम प्रबंधक डॉ विनोद शाक्य एवं जिला मूल्यांकन एवं अनुश्रवण अधिकारी मनोज चढोकार ने बताया कि नए अनमोल पोर्टल संस्करण 2.0 की विशेषता है कि समग्र आधारित पंजीयन के लिये महिला तथा उसके पति दोनों की समग्र आईडी अनिवार्य है। केवल महिला के समग्र आईडी दर्ज करने पर समग्र पोर्टल द्वारा पति का विवरण स्वतः प्राप्त किया जाएगा। यदि महिला द्वारा वैवाहिक स्थिति समग्र पोर्टल पर अपडेट नहीं की गई है, तो पति की समग्र आईडी प्राप्त नहीं होगी और ऐसी स्थिति में महिला का पंजीयन नहीं हो सकेगा। महिला को पहले समग्र पोर्टल पर अपनी समग्र आईडी को पति की परिवार आईडी में सम्मिलित कराना होगा। वैवाहिक स्थिति को समग्र पोर्टल पर अपडेट करने की जिम्मेदारी महिला की होगी।

जिला पंचायत अध्यक्ष व कलेक्टर प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में हुई शामिल

घंटा बजाकर किया शाला का शुभारंभ, जिले में आयोजित हुआ प्रवेशोत्सव कार्यक्रम

नरसिंहपुर। जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती ज्योति काकोड़िया व कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले पीएम श्री शासकीय उच्चतर कन्या महारानी लक्ष्मी बाई नरसिंहपुर में आयोजित प्रशोत्सव कार्यक्रम में शामिल हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ मॉ सरस्वती के पूजन से किया गया। अतिथियों ने यहां घंटा बजाकर शाला का औपचारिक रूप से शुभारंभ किया। जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती काकोड़िया ने छात्राओं से खूब मन लगाकर पढ़ाई करने के लिए कहा। छात्राओं को प्रोत्साहित करते हुए कलेक्टर श्रीमती पटले ने कहा कि आपको अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करना होगा और उसे पाने के लिए अनुशासन के साथ कड़ी मेहनत करनी होगी। आपकी इस मंज़िल तक पहुंचने में कई रुकावटें आएंगी, लेकिन आप यह समझे की सफलता कभी थाली में परोसी हुई नहीं मिलती है। इस परिप्रेक्ष्य में उन्होंने महाभारत के कर्ण के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि कर्ण सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बनना चाहते थे। उस समय यह युद्धकला और धनुर्विद्या सीखने में उन्हें काफ़ी कठिनाई हुई। इसके बावजूद उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में सीखा और कर्ण महाभारत के सर्वश्रेष्ठ धनुर्धारियों में से एक बनें। यह उनकी लगन और परिश्रम को बताता है। आपको भी उनसे यह सीख लेनी चाहिए। आप की सफलता के लिए माता- पिता और गुरुजनों का सानिध्य बहुत महत्वपूर्ण होता है।कलेक्टर श्रीमती पटले ने कहा कि ज़िले का परीक्षा परिणाम बेहतर रहा है। शिक्षकों ने बहुत ही मेहनत और लगन से अपना कार्य किया है। कार्यक्रम में मौजूद छात्राओं के माता- पिता से कलेक्टर श्रीमती पटले ने कहा कि बच्चों पर पढ़ाई को लेकर अनावश्यक बोझ नहीं डालें। घर में भी पढ़ाई का सकारात्मक माहौल बने, यह ज़िम्मेदारी माता- पिता की है। माता- पिता यह पूछे कि बच्चे ने स्कूल में क्या पढ़ा? गृहकार्य पूर्ण किया है- अथवा नहीं। कलेक्टर श्रीमती पटले ने छात्राओं से कहा कि वे बोलने की आदत डालें। इस बात से बिलकुल नहीं झिझकें कि आप ग़लत जवाब देंगे। आपके एक बार गलती करने से यह गलती आपको हमेशा याद रहेगी। इसलिए हमेशा प्रश्न पूछने की आदत डालें। इस अवसर पर छात्राओं को निःशुल्क पाठ्य पुस्तकों का वितरण भी किया। स्कूल गेम फेडरेशन ऑफ इंडिया में भागीदारी करने पर कक्षा 8 वीं की छात्रा वैशाली सेन को प्रमाण पत्र प्रदान किया। छात्राओं द्वारा बनाये गये विभिन्न मॉडलों का भी अवलोकन किया। कक्षा 12 वीं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली छात्राओं को प्रमाण पत्र वितरित किये। साथ ही छात्राओं के साथ शामिल होकर मध्यान्ह भोजन किया। इस अवसर पर डीपीसी श्री आरपी चतुर्वेदी, विकासखंड शिक्षा अधिकारी प्रासी अग्रवाल, अन्य अधिकारी- कर्मचारी अभिभावक और छात्रायें मौजूद थी।

॥ मंदिरम् ॥

72

श्री राधा मदन मोहन मंदिर, वृन्दावन

श्री राधा मदन मोहन मंदिर उत्तर प्रदेश के वृन्दावन में स्थित एक हिंदू मंदिर है। यह वृन्दावन के सबसे पुराने और सबसे प्रतिष्ठित मंदिरों में से एक है। मंदिर के प्रमुख देवता मदन मोहन हैं, जो भगवान कृष्ण का एक रूप हैं, जिन्हें केंद्रीय वेदी पर उनकी पत्नी देवी राधा और ललिता गोपी के साथ चित्रित किया गया है। मंदिर का निर्माण वास्तुकला की नागर शैली में किया गया था। राधा मदन मोहन मंदिर, यमुना नदी पर कालिया घाट के पास स्थित है, जो 50 फीट ऊंचा है। यह उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक देखे जाने वाले गोस्वामी तीर्थस्थलों में से एक है। मुगल आक्रमणकारी औरंगजेब के शासनकाल के दौरान, भगवान मदन गोपाल की मूल छवि को सुरक्षित रखने के लिए मंदिर से जयपुर ले जाया गया था। कहा जाता है कि मदन मोहन का मूल देवता कमर से नीचे बिल्कुल कृष्ण जैसा दिखता है। 1748 ई. में यहां मदन मोहन की प्रतिकृति का निर्माण कराया गया। श्री नंदलाल वासु ने 1819 ई. में पहाड़ी के आधार पर वर्तमान मंदिर का निर्माण कराया।

अपात्र नर्सिंग स्टूडेंट्स नहीं दे पाएंगे परीक्षा

एमपी हाईकोर्ट ने कहा-अपात्र कॉलेजों के छात्रों को 30 दिन में दूसरे कॉलेज में ट्रांसफर करें

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर हाईकोर्ट ने राज्य सरकार को अपात्र नर्सिंग कॉलेजों के करीब 10 हजार स्टूडेंट्स को 30 दिन के भीतर पात्र कॉलेजों में ट्रांसफर करने का आदेश दिया है। नर्सिंग कॉलेज मान्यता फर्जीवाड़ा मामले की सीबीआई जांच में जिन कॉलेजों में छात्र नहीं मिले हैं, वो छात्र अपात्र होंगे और उन्हें परीक्षा में नहीं बैठाया जाएगा।

हाईकोर्ट ने नर्सिंग कॉलेजों की मान्यता संबंधी ओरिजिनल फाइलों को याचिकाकर्ता द्वारा अवलोकन के बाद रिपोर्ट पेश करने के निर्देश भी दिए हैं। इसमें तुलनात्मक रूप से

यह बताना होगा कि जो 300 कॉलेज सीबीआई जांच में अपात्र पाए गए उन्हें आखिर किन हालात और किन-किन कमियों के होते हुए भी निरीक्षणकर्ता अधिकारियों द्वारा अनुमति दी गई।

बता दें कि नर्सिंग फर्जीवाड़ा केस में लॉ स्टूडेंट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष विशाल बघेल ने जनहित याचिका दायर की थी। 28 मार्च को मामले की सुनवाई हाईकोर्ट की स्पेशल बेंच के जस्टिस संजय द्विवेदी और जस्टिस अचल कुमार पालीवाल ने की थी।

सीएम की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद में महत्वपूर्ण निर्णय

'मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा' प्रारम्भ करने की स्वीकृति

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंगलवार को मंत्रि-परिषद की बैठक मंत्रालय में सम्पन्न हुई। मंत्रि-परिषद द्वारा मध्यप्रदेश में नगरों एवं ग्रामीण क्षेत्रों के साधारण और ग्रामीण मार्गों में संगठित, सुविधाजनक एवं सुरक्षित यात्री परिवहन बस सेवायें उपलब्ध कराने के लिए 'मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा' प्रारम्भ करने की स्वीकृति दी गई। प्रदेश में ग्रामीण एवं साधारण मार्गों का ट्रैफिक एवं मार्ग सर्व तथा बसों की फ्रीक्वेन्सी निर्धारित करते हुये एक व्यवस्थित प्लानिंग अनुसार यात्री बसों को चलाया जायेगा। मंत्रि-परिषद द्वारा मध्यप्रदेश राज्य में सुगम सुरक्षित एवं विनियमित यात्री परिवहन सुविधा, निजी क्षेत्र के माध्यम से उपलब्ध कराये जाने का निर्णय लिया गया है।

- **शासकीय सेवकों को देय विभिन्न भत्तों के पुनरीक्षण का निर्णय**
- **छतरपुर में माता बम्बरबैनी प्राचीन मंदिर स्थल पवित्र क्षेत्र घोषित**

यात्री परिवहन सेवा की प्रारम्भ करने के लिए 101 करोड 20 लाख रुपये की अशंपूजी के रूप में स्वीकृति प्रदान की गई। इसके लिए राज्य स्तरीय होल्डिंग कंपनी के गठन की स्वीकृति भी दी गई है। वर्तमान में मध्यप्रदेश के 20 शहरों में सार्वजनिक परिवहन हेतु कंपनी एक्ट के तहत एसपीवीएस गठित हैं, जिसमें से 16 कार्यरत हैं। उक्त समस्त कंपनियों को 7 संभागीय कंपनियों के रूप में मर्ज किया जावेगा। उक्त सात कंपनियों के एकीकृत नियंत्रण के लिए राज्य स्तर पर कंपनीज एक्ट 2013 के तहत एक होल्डिंग कंपनी का गठन जायेगा। साथ ही त्रि-स्तरीय संरचना के तहत दायित्व निर्वहन और सात क्षेत्रीय सहायक कंपनियों में राज्य स्तरीय होल्डिंग कंपनी के 51 प्रतिशत शेयर बहुसंख्यक आधार पर निवेश करने एवं सात सहायक कंपनियों के बोर्ड और उसके आर्टीकल ऑफ एसोसिएशन में आवश्यक संशोधन की स्वीकृति, रीवा एवं ग्वालियर के लिए वर्तमान प्रचलित कंपनी को बंद करते हुए नवीन क्षेत्रीय कंपनी गठित करने की स्वीकृति प्रदान की गई। इन क्षेत्रीय सहायक कंपनियों का गठन, संबंधित संभागीय मुख्यालयों में स्थित सिटी बस ट्रांसपोर्ट की वर्तमान कंपनी में संशोधन कर, निर्मित करने की स्वीकृति दी गई। जिला स्तरीय यात्री परिवहन समिति के गठन की स्वीकृति भी प्रदान की गई।

म.प्र. मोटरयान नियम 1994 के नियमों में आवश्यक संशोधन एवं वांछित प्रावधान करने की सैद्धांतिक स्वीकृति दी गई। इसके लिए प्रशासकीय विभाग द्वारा पृथक से विधि अनुसार कार्यवाही की जायेगी। सात सहायक कंपनियों की सुसंगत पूर्ववर्ती सिटी ट्रान्सपोर्ट कंपनियों द्वारा परिवहन संबंधी दायित्व के निर्वहन के लिए, जो चल-अचल संपति उपयोग में आ रही है, वे यथावत इन कर्पनियों के आधिपत्य में रहेंगी। इसी प्रकार नगर-निगम, प्राधिकरण आदि द्वारा स्वयं की निधि से तैयार किये गये बस टर्मिनल, बस स्टैण्ड, बस स्टॉप आदि, होल्डिंग कंपनी के सामंजस्य से उत्कृष्ट गुणवत्ता एवं यात्री सुविधा के लिए विकसित किए जाऐंगे।

वर्तमान सिटी बस कंपनियों के कार्यालय भवन का उपयोग नवीन सहायक कंपनियां यथावत करती रहेंगी। कार्यालय की ऐसी अचल सर्पतियां, जो नगरीय निकाय निधि से अर्जित या निर्मित हैं,

एमपी के 7.5 लाख कर्मचारियों के भत्ते बढ़े

मध्य प्रदेश के साढ़े सात लाख कर्मचारियों का परिवहन और गृह भाड़ा भत्ता (हाउस रेंट अलाउंस) 15 साल बाद बढ़ाया गया है। अब कर्मचारियों को 200 रुपए की जगह 384 रुपए परिवहन भत्ता (ट्रांसपोर्ट अलाउंस) दिया जाएगा। मंगलवार को मोहन कैबिनेट ने इसे मंजूरी दे दी है। इसके साथ ही दिव्यांग कर्मचारियों का भत्ता भी 350 रुपए से बढ़ाकर 675 रुपए कर दिया है। इससे सरकार पर 1500 करोड़ रुपए का अतिरिक्त भार आएगा। वहीं, सरकार ने मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा को भी मंजूरी दे दी है। अब एक से दूसरे शहर और दूसरे राज्य तक सरकारी बसें चलाई जाएंगी।

छतरपुर में माता बम्बरबैनी प्राचीन मंदिर स्थल पवित्र क्षेत्र घोषित

मंत्रि-परिषद द्वारा छतरपुर जिले के ग्राम लवकुशनगर में माता बम्बरबैनी प्राचीन स्थल मंदिर खसरा नं. 2157 रकवा 0.012 हेक्टेयर एवं खसरा नं 2158 रकवा 30.375 हेक्टेयर पहाड़ क्षेत्र को पवित्र क्षेत्र घोषित करने का निर्णय लिया गया।

उनका मूल्यांकन पृथक से किया जाकर, राशि की प्रतिपूर्ति परिवहन विभाग द्वारा की जायेगी। नवीन गठित होने वाली राज्य स्तरीय कंपनी को नगरीय विकास एवं आवास विभाग द्वारा पुर्नघनत्वीकरण नीति 2022 के तहत पर्यवेक्षण एजेंसी के रूप में शामिल किया जायेगा।

'मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा' संचालन के लिए बस परिवहन अधोसंरचना के तहत पब्लिक प्रायवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) प्रक्रिया से उत्कृष्ट गुणवत्ता एवं मापदण्डों का यात्री एवं बस ऑपरेटर के लिए सुविधाओं का निर्माण किया जायेगा। बस संचालन एवं संधारण के लिए पीपीपी मोड़ प्रक्रिया से, निजी बस ऑपरेटर्स को, संगठित रूप से एक पारदर्शी प्रक्रिया के तहत, दक्ष आई.टी. प्लेटफार्म के माध्यम से विनियमित किया जायेगा। आई.टी. टेक्नालॉजी साल्यूशन की स्थापना करते हुए समस्त बस ऑपरेशन्स पर प्रभावी निगरानी रखी जायेगी। इसके तहत सेवा स्तर समझौता (सर्विस लेवल अग्रीमेंट) और प्रमुख प्रदर्शन संकेतक (की परफॉर्मेंस इंडिकेटर) पर प्रभावी नियंत्रण रखा जायेगा, जिससे बस ऑपरेशन यात्रियों के लिए सुविधाजनक एवं सुरक्षित हो सके।

होल्डिंग कंपनी के दायित्व निम्नानुसार रहेंगे

(1) संभागवार सम्पूर्ण प्रदेश में साधारण मार्ग एवं ग्रामीण मार्ग में ओरिजिन एंड डेस्टिनेशन (ओ-डी) सर्वे एवं बस मार्ग का चिन्हांकन, ताकि अधिक से अधिक मार्ग ऑपरेटर्स के लिए वित्तीय रूप से साध्य हो सकें। साथ ही ऐसे मार्ग का चिन्हांकन जो वित्तीय रुप से ऑपरेटर के लिए साध्य न हों।

(2) मार्ग सर्वे के बाद बसों की फिक्रिंसी का निर्धारण करते हुये मोटरयान अधिनियम के प्रावधानों के तहत यात्री परिवहन सेवा के लिए संभागवार स्कीम तैयार करने के लिए शासन को आवश्यक सहयोग करना।

(3) शासन द्वारा मार्गों पर निविदा प्रक्रिया से चयनित अनुबंधित ऑपरेटर्स को परमिट उपलब्ध करवाना।

(4) एक कुशल आई.टी. प्लेटफार्म, राज्य स्तरीय उपक्रम के कार्यालय एवं क्षेत्रीय कंपनी के कार्यालयों में, कंट्रोल एवं कमांड सेंटर की स्थापना करते हुये एक कुशल आई. टी. प्लेटफार्म को संचालित करना।

(5) आई.टी. टेक्नोलॉजी सॉल्युशन के माध्यम से यात्रियों के लिए ई-टिकिट, मोबाईल एप जिससे बसों की ट्रेकिंग, आक्युपेंसी तथा यात्रा प्लानिंग हो सकेगी। साथ ही यात्रियों के लिए कैशलेस, टेपऑन-टेपऑफ सुविधा, एप के माध्यम से पैसेंजर इंन्फोर्मेशन सिस्टम आदि उपलब्ध कराया जायेगा।

(6) क्षेत्रीय सहायक कंपनी के लिए विभिन्न गतिविधियों के लिए स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर एवं पॉलिसी तैयार करना तथा दिन-प्रतिदिन के आपरेशन में आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करना आदि।

(7) अनुबंधित बस ऑपरेटर्स को आवश्यक अधोसंरचना जैसे डिपो, बस स्टैण्ड, बस स्टॉप, बुकिंग सेंटर्स आदि की सुविधा मुहैया करायी जायेगी। नगरीय क्षेत्रों में बस डिपो, बस स्टैण्ड, बस स्टाप का विकास/निर्माण कार्य नगरीय विकास एवं आवास विभाग द्वारा कराया जाकर संधारण एवं संचालन के लिए होल्डिंग कंपनी को अंतरित किया जायेगा।

(8) आपरेटर्स को, बसों का सुचारु संचालन के लिए आवश्यक सहयोग एवं सुरक्षा मुहैया करायी जायेगी।

(9) क्षेत्रीय स्तर पर कैपिसिटी बिल्डिंग एवं ट्रेनिंग सेंटर्स का गठन किया जायेगा। जिसमें निजी, शासकीय, अर्ध शासकीय स्टाफ की ट्रेनिंग शामिल होगी।

लखनऊ आर्थोपेडिक सोसाइटी की चौथी वार्षिक संगोष्ठी

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने लखनऊ आर्थोपेडिक सोसाइटी की चौथी वार्षिक संगोष्ठी में भाग लिया। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान (एसजीपीजीआईएमएस), लखनऊ में आयोजित लखनऊ आर्थोपेडिक सोसाइटी (एलओएस) की चौथी वार्षिक संगोष्ठी में भाग लिया। उत्तर प्रदेश आर्थोपेडिक एसोसिएशन के तत्वावधान में आयोजित इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम में आर्थोपेडिक्स क्षेत्र के प्रमुख विशेषज्ञों ने ट्रॉमा में वर्तमान अवधारणाएँ: एक केस-आधारित चर्चा विषय पर विचार-विमर्श किया। इस संगोष्ठी का उद्देश्य परंपरा और प्रौद्योगिकी के समावेश से मरीजों की देखभाल को सुदृढ़ करना था। चर्चा के दौरान 'ओल्ड इस गोल्ड, वृद्धजनों के लिए 360ए देखभाल अनुसंधान नवाचार रोकथाम उपचार जैसे विषयों पर जोर दिया गया, जिसमें विशेष रूप से हिप ट्रॉमा प्रबंधन पर केंद्रित वार्ताएं की गईं। इस संगोष्ठी में आर्थोपेडिक क्षेत्र के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों ने अपने अनुभव साझा किए और केस-आधारित चर्चाओं के माध्यम से हिप ट्रॉमा देखभाल में नवीनतम प्रगति पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। इस फॉर्मेट ने जटिल मामलों की गहन समीक्षा और सहभागियों के बीच सहयोगी समस्या-समाधान को बढ़ावा दिया। इस अवसर पर प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने आर्थोपेडिक देखभाल के बदलते परिदृश्य पर अपने विचार व्यक्त किए। नवाचार और साक्ष्य-आधारित चिकित्सा पद्धतियों के महत्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा, यह संगोष्ठी चिकित्सा विशेषज्ञों के लिए ज्ञान-विनिमय का एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करती है, जिससे मरीजों की देखभाल को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। विशेष रूप से वृद्धजनों में हिप ट्रॉमा एक चुनौतीपूर्ण चिकित्सा क्षेत्र है, जिसके लिए पारंपरिक तरीकों और आधुनिक नवाचारों का समन्वय आवश्यक है।

दूर कर दी हैं, हमने सारी बाधाएं आप उद्योग लगाएं, सरकार करेगी मदद: मुख्यमंत्री

सीएम डॉ. यादव ने प्रदेश की 2500 छोटी-बड़ी औद्योगिक इकाइयों को अंतरित की 1778 करोड़ रुपए की उद्योग प्रोत्साहन राशि

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि आज मध्यप्रदेश एक नई उड़ान पर है। सरकार की रीति-नीति से निवेशकों में विश्वास का माहौल बना है। प्रदेश में उद्यमी, उद्योगपति, व्यापारी, व्यवसायी सब उत्साहित हैं। हम उद्यमशीलता को बढ़ाने के लिए एक नई धारा, एक नई ऊर्जा और प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ रहे हैं। प्रदेश में बिजनेस को सहज बनाने के लिए हमने सारी बाधाएं, सारी रूकावटें दूर कर दी हैं। आप बस उद्योग लगाएं, हमारी सरकार उद्योग लगाने से लेकर इसे संचालित करने तक आपकी हर जरूरी मदद करेगी, प्रोत्साहन इन्सेटिव देगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मंगलवार को औद्योगिक नीति एवं निवेश प्रोत्साहन और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग की ओर से एक निजी होटल में आयोजित उद्योग निवेश सब्सिडी के वितरण समारोह को संबोधित कर रहे थे।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश में स्थापित करीब 2500 सूक्ष्म, लघु और मध्यम श्रेणी की औद्योगिक इकाइयों को 1075 करोड़ और छोटे-बड़े (वृहद श्रेणी के) उद्योगों को करीब 703 करोड़ रूपए, इस प्रकार कुल 1778 करोड़ रुपए की उद्योग निवेश सब्सिडी हस्तांतरित की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रिमोट

दबाकर सिंगल क्लिक से डायरेक्ट बेनेफिट ट्रांसफर (डीबीटी) के जरिए सब्सिड़ी राशि उद्यमियों (निवेशकों) के बैंक खाते में ट्रांसफर की। उन्होंने कहा कि प्रदेश में उद्यमियों का बढ़ता हौसला ही हमारी पूंजी है। जीआईएस से हमें बहुत अच्छा प्रतिसाद मिला है। मध्यप्रदेश में हर निवेशक का स्वागत है, सम्मान है। हमने छोटे-बड़े सभी उद्योगों को प्रोत्साहन दिया है, नए वित्त वर्ष के सालाना राज्य बजट में भी हमने सबका ध्यान रखा है। उन्होंने कहा कि बीते साल हमने 5 हजार 260 करोड़ की उद्योग निवेश सब्सिडी राशि पूरी पारदर्शिता के साथ डीबीटी के जरिए ही निवेशकों के खातों में हस्तांतरित की। यह सिलसिला आगे भी जारी रहेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश में औद्योगिक विकास को नई ऊंचाई प्रदान करने के लिए राज्य सरकार ने नवीन औद्योगिक नीति बनाई है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में भोपाल में ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2025 का सफल आयोजन हुआ, जिसमें 30 लाख 77 हजार करोड़ से अधिक के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। सरकार ने संभागीय स्तर पर औद्योगिक इकाइयों का भूमि-पूजन और लोकार्पण प्रारंभ कर दिया है। राज्य सरकार द्वारा औद्योगिक इकाइयों का भूमि-पूजन और उन्हें प्रोत्साहन राशि ट्रांसफर करना, जीआईएस के बाद निवेशकों को प्रोत्साहित करने की अगली कड़ी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सरकार ने प्रदेश में पहली बार निवेश की संभावनाओं को तलाशा और संभागीय स्तर पर आयोजित की गई 7 रीजनल इन्वेस्टर्स समिट ने नई ऊंचाइयां प्राप्त कीं। प्रदेश में निवेश एवं उद्योगों के विकास में देश-दुनिया के उद्योगपतियों ने उत्साह दिखाया। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने जीआईएस के उद्घाटन-सत्र में उद्योगपतियों और व्यापारियों को निवेश के मंत्र दिए। उन्होंने कहा था कि अपार संभावनाओं वाले मध्यप्रदेश में निवेश का यही समय सही है। जीआईएस के सफल आयोजन पर उद्योग विभाग और निवेशकों का अभिनंदन करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जीआईएस में प्राप्त निवेश का आंकड़ा देखा जाए तो राज्य सरकार और निवेशक दोनों ही प्रधानमंत्री श्री मोदी के विश्वास पर खरे उतरे हैं। उद्योगों को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए डीबीटी से राशि भेजी जा रही है।

हर्षोल्लास से मनाएं पार्टी का स्थापना दिवस

अंबेडकर जयंती की तैयारियों में जुट जाएं कार्यकर्ता : हितानंद जी

भोपाल। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद ने मंगलवार को प्रदेश कार्यालय में भोपाल जिले की बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि बूथ के व्हाट्सअप और लाभार्थी प्रमुख 'मन की बात' कार्यक्रम में लोगों को जोड़ें। कार्यकर्ता 6 अप्रैल को पार्टी का स्थापना दिवस और 14 अप्रैल को भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती की तैयारियों में जुट जाएं। मंडल समितयों में महिलाओं की अधिकाधिक भागीदारी सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि 6 अप्रैल को पार्टी का स्थापना दिवस मनाने के लिए विशेष तैयारियां करें और अपने निवास और पार्टी कार्यालय पर पार्टी का ध्वज लगाकर पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाएं। कार्यालय की सजावट कर रंगोली सजाएं तथा मिठाई बांटें। सेल्फी लेकर उसे सोशल मीडिया पर ''हैशटैग बीजेपी फॉर विकसित भारत'' के साथ पोस्ट करें। बैठक को प्रदेश उपाध्यक्ष श्री कांतदेव सिंह, प्रदेश महामंत्री व विधायक श्री भगवानदास सबनानी एवं जिला अध्यक्ष श्री रविन्द्र यति ने भी संबोधित किया।

बस्तियों में स्वच्छता व सेवा कार्यों में जुटें पदाधिकारी- भाजपा प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने कहा कि 6 एवं 7 अप्रैल को बूथ स्तर पर और 8-9 अप्रैल को मंडल व विधानसभा स्तर पर भाजपा की चुनावी सफलता, संगठनात्मक विस्तार, भारतीय राजनीति में भाजपा द्वारा लाया गया परिवर्तन एवं प्रधानमंत्री के रूप में श्री नरेंद्र मोदी जी के साथ विकसित भारत की ओर यात्रा जैसे विषयों पर नए प्राथमिक सदस्यों का सम्मेलन आयोजित करना सुनिश्चित करें। 7 से 12 अप्रैल के बीच जिला पदाधिकारी, जन प्रतिनिधि व मंडल अध्यक्ष दिन में 8 घंटे 'बस्ती चलो अभियान' के तहत सेवा बस्ती का दौरा कर मंदिर, अस्पताल, स्कूल व गलियों में स्वच्छता अभियान में भाग लें। इस दौरान विभिन्न योजनाओं के 10 लाभार्थियों से मिलकर उनसे बातचीत करें, आंगनवाड़ी केंद्र, स्कूल, पशु चिकित्सालय, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र व पंचायत कार्यालय का दौरा कर जल संरचनाओं की सफाई में सहभागिता करें। स्थानीय निवासियों की चौपाल का आयोजन तथा अलग-अलग समुदाय के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के घर पहुंचना है। वरिष्ठ पार्टी कार्यकर्ता, मीसा बंदी तथा कारसेवकों का सम्मान करने के साथ बूथ समितियों की बैठक आयोजित करना है।

बाबा साहब की प्रतिमाओं को सफाई कर मनाएं दीपोत्सव - भाजपा प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने कहा कि भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती के पूर्व 13 अप्रैल को उनकी प्रतिमाओं की सफाई करना तथा संध्या के समय दीपोत्सव मनाना है। 14 अप्रैल को बाबा साहब की प्रतिमाओं पर पुष्पांजलि अर्पित कर संविधान की प्रस्तावना का सामूहिक पाठ करना है। आंगनबाड़ी केंद्रों और अनुसूचित जाति बस्तियों के स्कूल परिसरों की सफाई एवं सामुदायिक सुविधाओं का रखरखाव किया जाए। 15 से 25 अप्रैल के बीच समाज के विभिन्न वर्गों के वरिष्ठों के साथ कम से कम 2 सत्रों की जिला स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन कर कांग्रेस द्वारा किए गए बाबा साहब के अपमान और भाजपा द्वारा दिए जा रहे सम्मान और जिस तरह से कांग्रेस ने संविधान से खिलवाड़ किया तथा भाजपा ने संविधान के प्रति जो सम्मान प्रदर्शित किया है, उस पर विस्तार से चर्चा की जाए। उन्होंने कहा कि पार्टी पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी का शताब्दी वर्ष समारोह मना रही है, इसके लिए पार्टी कार्यकर्ता श्रद्धेय अटल जी के पत्र, फोटो, वीडियो आदि के माध्यम से नए कार्यकर्ताओं को अवगत कराएं।

बैठक में पार्टी की प्रदेश उपाध्यक्ष श्रीमती सीमा सिंह जादौन, जिला प्रभारी श्री महेन्द्र सिंह यादव, महापौर श्रीमती मालती राय, वरिष्ठ नेता श्री प्रदीप त्रिपाठी, नगर निगम अध्यक्ष श्री किशन सूर्यवंशी मंचासीन रहे।

धीरेंद्र शास्त्री बोले- हिंदू राष्ट्र से पहले कट्टर हिंदू बनाएंगे

देश के हर गांव में बनेगा सुंदरकांड मंडल ; जात-पात और छुआछूत नहीं चलेगी

खजुराहो (नप्र)। छतरपुर स्थित बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर धीरेंद्र शास्त्री अब देशभर में हिंदू क्रांति अभियान चलाएंगे। मंगलवार को एक वीडियो में उन्होंने कहा- हिंदू राष्ट्र बनाने से पहले हर घर और गांव-गांव में कट्टर हिंदू बनाने का काम शुरू होगा। अभियान इसी महीने से शुरू होगा। इस काम के लिए बागेश्वर धाम से टीमें रवाना हो गई हैं।

सोशल मीडिया पर जारी इस वीडियो में शास्त्री ने कहा, जहां बरसात नहीं होती है, वहां की फसलें खराब हो जाती हैं। जहां सनातन के संस्कार नहीं होते हैं, वो नस्लें खराब हो जाती हैं। इस वीडियो के माध्यम से देश में नई क्रांति खड़ी होने वाली है। हम उसकी घोषणा सार्वजनिक रूप से कर रहे हैं। उन्होंने कहा-अब तक भारत में सनातनियों के बीच एक श्लोक बहुत पढ़ा जाता है- ऊँ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः, पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। लेकिन अब हम चाहते हैं ऊँ द्यौः क्रांतिरन्तरिक्षं क्रांति, पृथ्वी शान्तिरापः क्रांतिरोषधयः क्रांति। इसी क्रांतिमय संदेश के साथ हम अपनी बात रखना चाह रहे हैं।पं. धीरेंद्र शास्त्री ने कहा कि हिंदू राष्ट्र के सपने के लिए घर-घर से कट्टर हिंदुओं को बाहर लाना है।

बागेश्वर धाम आकर करनी होगी बात

धीरेंद्र शास्त्री ने कहा- हम कट्टर हिंदू बनाने का काम करेंगे। सभी ग्राम पंचायतों में एक-एक प्रभारी होगा, जो एक मंडल प्रभारी से जुड़ा होगा। 10 गांवों का एक मंडल बनाया जाएगा, यह जिला अध्यक्ष से जुड़ा होगा। सभी प्रभारियों को तीन-चार महीने में बागेश्वर धाम आकर बात करनी होगी। मंडल जहां काम कर रहे हैं, वहां कथाएं भी होंगी।

21 साल के हुए तो इंग्लैंड से भारत आए

ओरछा में अपने बर्थडे पर विदेशी लड़के ने कराई सत्यनारायण की कथा, कहा- मन्नत पूरी हो गई

निवाड़ी (नप्र)। अपना 21वां जन्मदिन सनातन परंपरा से मनाने इग्लैंड के ओरटेम अपने परिवार सहित ओरछा आए। उन्होंने यहां मंदिर प्रांगण में हनुमान प्रतिमा के सामने सत्यनारायण की कथा कराई। कथा के बाद हवन किया और स्वस्तिवाचन के साथ पंडितजी से तिलक कराया।

दरअसल, 2 अप्रैल को ओरटेम का जन्मदिन है। वे चाहते थे कि उनका जन्मदिन ओरछा के रामराजा सरकार के मंदिर में मनाया जाए। इसके लिए वे करीब हफ्तेभर पहले दिल्ली आ गए थे। जन्मदिन मनाने परिवार सहित आज सुबह मंदिर पहुंचे और परिवार सहित वैदिक रीति से अपना जन्मदिन मनाया।

कथा और हवन के बाद उन्होंने मंदिर प्रांगण में करीब 100 लोगों को भोजन वितरित किया। इस खास मौके पर ओरटेम के साथ उनकी बहन जूलिया, भाई मार्टिन और मां स्युतलाना भी मौजूद थीं। गाइड हेमंत गोस्वामी ने बताया कि ओरटेम का परिवार भारतीय संस्कृति और अध्यात्म से गहरा जुड़ाव रखता है।

ओरटेम ने कहा कि रामराजा मंदिर में प्रवेश करते ही उन्हें दैवीय शक्ति का अनुभव हुआ। वे अपना 21वां जन्मदिन राजाराम की नगरी ओरछा में मनाना चाहते थे। एक तरह से उनकी मन्नत पूरी हो गई।

स्थानीय लोगों ने भी ओरटेम के इस अनूठे कदम की सराहना की। एक विदेशी युवक द्वारा भारतीय संस्कृति को इतना सम्मान दिए जाने से सभी प्रभावित हुए। यह घटना भारतीय सनातन धर्म की वैश्विक स्वीकार्यता का एक और प्रमाण बन गई है।